

NOT FOR SALE

महालक्ष्मी काष्ठना विशेषज्ञांक

अक्टूबर 2005

मूल्य : 18/-

संक्ष-तंत्रम्-संख्या

विज्ञान

लक्ष्मी सिद्ध शब्दों 105 प्रयोग

क्या कुबेर धनाशीष है? — शनि-मंगल यह लोप कैसे मिलें?

कीजिए विधिवत् लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी क्या है? जानिये

A Monthly Journal



50300



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

जीवन की बीमारियों, बाधाओं, अड़चनों



कठिनाइयों को हलाके और जीवन की पूर्ण सुरक्षा के लिये

ज्योतिर्चक्र

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ गुरुदेव द्वारा इस दीपावली पर्व पर साधकों के कल्याण हेतु ज्योतिर्चक्र का निर्माण करवाया जा रहा है।

'ज्योतिर्चक्र' को उच्च कोटि के व्यक्ति अपनी सुरक्षा तथा अपने पूरे परिवार की सुरक्षा के लिए धारण करते हैं, जिससे कि किसी प्रकार की धीमाटी, पटेशानी, टाज्य घांडा, या कठिनाई न आये, किसी प्रकार की अकाल मृत्यु या धीमाटी व्याप्त न हो।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि ज्योतिर्चक्र धारण करे, स्वयं तो धारण करें ही, परिवार के अन्य सदस्यों को भी यह 'ज्योतिर्चक्र' पहिना दें, जिससे कि जीवन की पूर्ण सुरक्षा हो सके, आकर्षित धीमाटी, कष्ट या पीड़ा न आये, और समस्त प्रकार की विपत्तियों से ज्योतिर्चक्र बचाता रहे।

ज्योतिर्चक्र

यह तीन धारुओं से निर्मित अपने आप में दुर्लभ, महत्वपूर्ण और अद्वितीय कड़े के रूप में है जिसे आशानी से अपनी कलाई में पहिना जा सकता है। जब इसका स्पर्श शरीर से होता है तो पूरा शरीर एक विशेष सुरक्षा से उपस्थित हो जाता है और किसी प्रकार की घांडा या अड़चन धीमाटी या तकलीफ यथासम्भव पटेशान नहीं करती।

यह ज्योतिर्चक्र विशेष मंत्र सिद्ध वैतन्य और प्राण प्रतिष्ठा युक्त है। शुक्राचार्य प्रणीत प्राण संजीवनी किया इस पर ही हुई है, और उस विधि को इस पर पूर्णता के साथ सम्पन्न किया गया है। जिससे पहिनने वाले व्यक्ति की अभी दृष्टियों से पूर्ण सुरक्षा हो सके।

ज्योतिर्चक्र का उपयोग सिद्ध वैतन्य और प्राण प्रतिष्ठा युक्त है। शुक्राचार्य प्रणीत प्राण संजीवनी किया इस पर ही हुई है, और उस विधि को इस पर पूर्णता के साथ सम्पन्न किया गया है। जिससे पहिनने वाले व्यक्ति की अभी दृष्टियों से पूर्ण सुरक्षा हो सके।

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

शिद्धाश्रम प्रकाश

॥ॐ परम तत्त्वाय नानायणाय गुरुकृष्णो नमः॥



सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन	5
----------------	---

स्तरभ

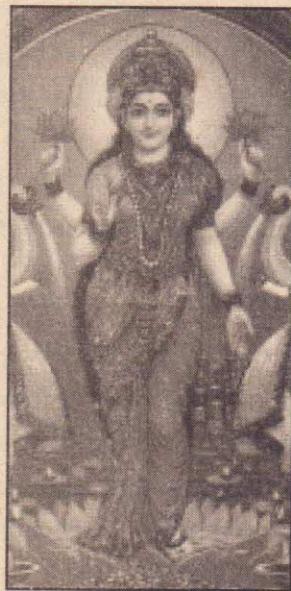
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
मैं समय हूँ	62
वाराहमिहिर	63
जीवन सरिता	64
नक्षत्रों की वाणी	66
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	86

वर्ष 25 अंक 10
अक्टूबर 2005 पृष्ठ 88



साधना

कुबेर यंत्र साधना	39
दीपावली-महालक्ष्मी	
महाकल्प के	
108 विशिष्ट प्रयोग	46
विशिष्ट साधना	
उपकरण-यंत्र	68



स्तोत्र

शनि-मंगल स्तोत्र	75
------------------	----

दीक्षा

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा	33
गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमिदः	
पूर्णमिदं दीक्षा	82



पूजन

शास्त्रोक्त गुरु प्रदत्त	
दीपावली पूजन	29

विवेचन

जयतु-जयतु महालक्ष्मी	23
----------------------	----

मुहूर्त

दीपावली मुहूर्त	28
-----------------	----



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमांहंस श्वामी गिरिधरेश्वरानन्द जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली
कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली



प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-८८
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 18/-
वार्षिक: 195/-

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धुमकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

★ प्रार्थना ★

श्री ब्रीजस्त्र प्रमपरां जगदैक हेतु,
ऐश्वर्यभावभरितं निखिलं नमामि।
गं गणपतिं परिमन् सुमुखैकदन्तं;
लाभं शुभं ननु करते च दीपमाला॥

'श्री' बीज जिनका मूल स्वरूप है, संसार की एक मात्र जननी, भगवती लक्ष्मी को एवं मंगलमूर्ति एकदन्त 'गं' बीज युक्त गणपति को तथा समस्त ऐश्वर्य से पूर्ण भगवान निखिल को भावपूर्ण नमन करता हूं।

ये तीनों महाशक्ति इस दीप माला को शुभ तथा लाभ से अविघ्न करें।

★ परमारथ ही कीजै ★

कड़ाके की धूप! उस वर्ष गर्मी कुछ अधिक ही पड़ी थी। बाहर से आया एक यात्री गांव से गुजर रहा था। प्यास से वह व्याकुल था, लेकिन गांव भर में उसे पानी पीने के लिए एक भी कुआ या तालाब नजर नहीं आया। आगे जाने पर यात्री ने दखा, कि एक पेड़ की नीचे प्याऊ थी। निकट जाने पर यात्री ने देखा, कि एक व्यक्ति वहाँ बैठा था, शरीर पर वस्त्र के नाम पर एक धोती भर ही थी। उसने यात्री को जल पिलाया और पेड़ के छाया में दो पल सुस्ता कर तब आगे जाने के लिए कहा।

यात्री ने पूछा - "तुम क्या काम करते हो?"

उसने उत्तर दिया - "हे श्रेष्ठ! मैं तो अनपढ़ घासी हूं, सुबह-शाम घास काटता हूं और से बेचकर जो पैसा मिल जाता है, उसी से गुजर-बसर करता हूं। उसी कमाई में थोड़ी बहुत बचत करके जो जमा पूँजी इकड़ा की थी, उससे यह प्याऊ बनाई है।" वह कहता जा रहा था - "मुझे यह देखकर बहुत तकलीफ होती थी, कि गर्मी में लोग प्यास से बेहाल हो पानी ढूँढते थे और पानी पीने के लिए कोई साधन नहीं था। अतः मैंने और मेरे परिवार ने एक समय भोजन कर कुछ धन एकत्र किया और यह प्याऊ बनाई, अब मुझे बहुत शांति महसूस होती है।"

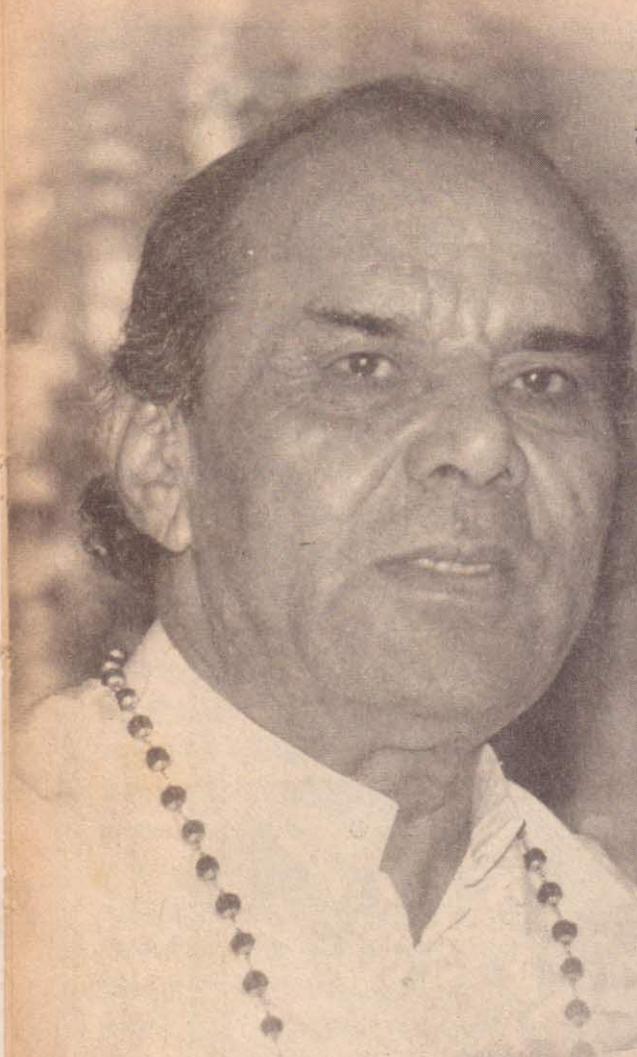
घासी की भोली और निःस्वार्थ बातें सुनकर यात्री द्रवित हो गया। उसने सोचा, कि जब यह निर्धन घासी जिसके पास सम्पत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं है, वह एक समय भूखे रहकर भी आने-जाने वालों की सुविधा के लिए सोचता है, तो लोक कल्याण के लिए सोचता है, फिर उसकी अपेक्षा मेरे पास तो काफी सम्पत्ति है, धन है; फिर मैं क्यों नहीं घासी जैसा सोचता हूं।

यात्री ने एक ठोस निर्णय लिया, कि अब मैं अपना जीवन, धन सम्पत्ति परमारथ में लगाऊंगा।

यही यात्री आगे चलकर 'भानुभक्त' के नाम से नेपाल देश में बहुत प्रसिद्ध विद्वान हुआ। ज्ञान चेतना जाग्रत होने के लिए एक क्षणांश ही पर्यास है, जहां बात सीधे हृदय में बैठ गई, वही जीवन परिवर्तन हो जाता है।



ଜୟତ୍ରା ଜୟତ୍ରା ଜୟତ୍ରା ହାଲକ୍ଷ୍ମୀ



लक्ष्मी साधना जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है, दीपावली पूजन तो सभी करते हैं, लेकिन कितने व्यक्तियों ने लक्ष्मी के बीज तत्व को समझ कर उसकी साधना, तपस्या की है। यह महत्वपूर्ण है, इस सम्बन्ध में सदगुरुदेव का अपने शिष्यों के लिए यह आलेख, प्रवचन जिसका एक-एक शब्द उनके जीवन को परिवर्तित कर सकता है -

आज नये वर्ष के सुप्रभात के अवसर पर मैं समस्त साधकों, शिष्यों का अभिनन्दन करता हूं, स्वागत करता हूं और आशीर्वाद देता हूं कि यह नववर्ष आपके लिये मंगलमय हो। कई स्थानों पर दीपावली से ही नववर्ष प्रारम्भ होता है, कई स्थानों पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है, कई स्थानों पर वैशाख शुक्ल पूर्णिमा से नववर्ष प्रारम्भ होता है। जो लक्ष्मी के पुजारी है, जो लक्ष्मीपति है, जो लक्ष्मीपुत्र है, लक्ष्मीदास है, लक्ष्मीनाथ है उन सब के लिये आज से ही नववर्ष प्रारम्भ है। इसीलिये मैंने आपको नववर्ष पर आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी है। कि पूरा वर्ष आपके लिये सभी दृष्टियों से सम्पन्नता युक्त हो, पूर्णता युक्त हो।

याश्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्यलक्ष्मी
पापात्मनां कृतथियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुतज्जन्म प्रभवेषु लज्जा
तां त्वां नतोऽस्मि परिपालय देवि विश्वम् ।

भगवती महालक्ष्मी आराध्य देव विष्णु की आधार भूता शक्ति दस महाविद्याओं में कमला के नाम से महाविद्या और त्रिगुणात्मक स्वरूप में भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप में सम्पूर्ण विश्व में वन्दनीय है क्योंकि वे पूरे विश्व का आधार भगवती लक्ष्मी है। जो क्षीर सागर से उत्पन्न, समस्त संसार का पालन पोषण करने वाली, जीवन में सुख-सौभाग्य और आनन्द, पूर्णता प्रदान करने वाली एक ऐसी महादेवी है, जिसकी आराधना संसार का प्रत्येक व्यक्ति करने के लिए उत्सुक है और यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि संसार के प्रत्येक देश में भगवती लक्ष्मी की साधना, आराधना, उपासना होती है। चाहे वह अलग नाम से हो, चाहे वह अलग रूप में हो, चाहे वे अलग क्रिया पद्धति में परन्तु लक्ष्मी की मान्यता तो सम्पूर्ण विश्व में, क्योंकि लक्ष्मी के बिना तो जीवन का आधार भूत सत्य समाप्त हो जायेगा। जीवन के दोनों पक्ष है, आध्यात्मिक और भौतिक। आध्यात्मिक जीवन का आधार भी लक्ष्मी ही है क्योंकि अध्यात्म रहेगा मनुष्य में और मनुष्य जीवित रहेगा जल से, अन्न से, आवास से पर इसके मूल में तो लक्ष्मी ही है। ठीक इसी प्रकार से सम्पूर्ण भौतिक सम्पदा की अधिष्ठात्री देवी महादेवी ही है। यह अलग बात है कि हम में से भी अधिकांश व्यक्ति गरीब, निर्धन,

असहाय और अशक्त है। जिनके पास पूर्ण उपयोग में आने वाली वस्तुओं का भी अभाव है। पर इसका कारण मनुष्य का इसके बारे में अज्ञानता ही स्पष्ट करता है। यह बात निर्विवाद सत्य है कि मात्र परिश्रम से जीवन में पूर्णता और सम्पूर्णता नहीं आ सकती। एक मजदूर दिन भर परिश्रम करता है और शाम को 30-35-40 रुपये लेकर घर जाता है और जीवन में उसके अभाव ही अभाव बना रहता है। यद्यपि परिश्रम करने में तो उसने कोई कमी नहीं रखी, परन्तु परिश्रम और मात्र परिश्रम से लक्ष्मी प्राप्ति नहीं हो सकती। लक्ष्मी प्राप्ति तो देवी कृपा या भगवती लक्ष्मी की साधना से ही संभव है और जो व्यक्ति अहंकार से ग्रसित है, जो व्यक्ति नास्तिक है, जो व्यक्ति देवताओं को, साधनाओं को, आराधनाओं को, सिद्धियों को, मंत्रों को नहीं पहचानता या विश्वास नहीं करते वे जीवन में बहुत बड़े अभाव को पाल-पोस रहे होते हैं। उनके जीवन में सबकुछ होते हुए भी कुछ नहीं होता। निर्धनता उनके चारों और मंडराती रहती है। जीवन की समस्याएं उसके सामने मुँह फैलायें खड़ी रहती हैं। वह अपने आप को चाहे जितना भी साहसी सिद्ध कर दे, मगर यह कटु सत्य है कि वह जीवन में उस आनन्द, उस मधुरता, उस वैभव को, प्राप्त नहीं कर सकता, जो देवी कृपा या भगवती लक्ष्मी की कृपा से प्राप्त होती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह गृहस्थ जीवन में हो, भौतिक जीवन में, सन्यासी हो, हिमालय में विचरण करने वाला हो, लक्ष्मी की कृपा का अवलम्बन तो उसे लेना ही पड़ता है। जो इस कटु सत्य को समझ लेता है, जो इस बात को समझ लेता है कि जीवन का आधार भूत सत्य भौतिक सम्पदा है और भौतिक सम्पदा के माध्यम से ही जीवन में पूर्णता और निश्चिन्तता आ सकती है। वह लक्ष्मी की आराधना, लक्ष्मी का अर्चना और लक्ष्मी की कृपा का अभिलाषी जरूर होगा। मैं यह नहीं कहता कि कुंकुम, अक्षत से ही पूजा की जाएं। मैं यह भी नहीं कहता कि केवल आरती उतारी जाएं, यह तो पूजा का एक प्रकार है। साधना तो इससे ऊँचाई पर खड़ी है, जहां मंत्र जप के माध्यम से हम देवताओं को भी इस बात के लिये विवश कर देते हैं कि वे अपनी सम्पूर्णता के साथ व्यक्ति के साथ हो, उसकी सहायता करें, उसके जीवन में जो अभाव है, जो परेशानी है, जो बाधाएं हैं, अङ्गने हैं उनको दूर करें और उसका जीवन ज्यादा सुखमय, ज्यादा मधुर, ज्यादा आनन्द दायक बनायें। इसमें कोई दो राय नहीं कि जीवन में महाकाली और महासरस्वती की साधना भी जरूरी है क्योंकि भगवती काली कि साधना से जहां जीवन निष्कंटक और शत्रु रहित बनता है, व्यक्ति



निश्चिंत हो कर अपने पथ पर तेजी के साथ आगे बढ़ता है। महासरस्वती साधना के माध्यम से उसे बोलने की शक्ति प्राप्त होती है, उसका व्यक्तित्व निखरता है, वह समाज में सम्मानीय और पूजनीय होता है। मगर यह सब तब हो सकता है जब लक्ष्मी का आधार हो।

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनम् आश्रयन्ति ॥

जिसके पास लक्ष्मी की कृपा है, सनर कुलीन है, समाज उसको समझदार समझता है, प्रतिष्ठित समझता, उच्चे खानदान का समझता है, सपंडित है उसको पंडित कहते हैं, विद्वान् कहते हैं, सगुणज्ञ लोग उससे सलाह लेते हैं, उसके पास बैठते हैं, उससे मित्रता करने का प्रयत्न करते हैं। जिसके पास लक्ष्मी की कृपा होती है। वह अपने आप अच्छा वक्ता बन जाता है। 'स्वय वक्ता। सः सुदर्शनीयम्' लोग उसका सम्मान करते हैं। समाज में पूजा करते हैं, उसके पास बैठने और उसकी मित्रता करने के लिये प्रत्यनशील होते हैं। कवि कह रहा है कि 'सर्वगुणा काञ्चन मासियन्ते।' यह सब गुण नहीं है, यह भगवती लक्ष्मी की कृपा के गुण है। जो उस मनुष्य को प्राप्त है। उठता है कि क्या प्रत्येक मनुष्य के लिये लक्ष्मी की साधना आवश्यक है? यदि हमारे जीवन में अन्न की नितांत आवश्यकता है, जल की जरूरत है, प्राण वायु लेने की नितांत अनिवार्यता है तो लक्ष्मी की साधना भी अत्यन्त आवश्यक है। जो इस सत्य को नहीं समझ सकते, वह जीवन में

मनुष्य के

प्रश्न

होते हैं। क्या प्रत्येक मनुष्य के लिये लक्ष्मी की साधना आवश्यक है? यदि

हमारे जीवन में अन्न की

नितांत आवश्यकता है, जल की जरूरत है,

अन्न की नितांत अनिवार्यता है तो लक्ष्मी की

साधना भी अत्यन्त आवश्यक है। जो इस

सत्य को नहीं समझ सकते, वह जीवन में

कुछ भी नहीं समझ सकते। जो व्यक्ति जितना

जल्दी इस तथ्य को समझ लेता है, वह इस बात

को समझ लेता है कि जीवन में पूर्णता के लिये

लक्ष्मी की आराधना, लक्ष्मी का सहयोग

आवश्यक है। वह जीवन में पूर्णता की ओर

वेग के साथ अग्रसर हो सकता है। यह

जरूरी नहीं है कि कोई योगी, कोई संन्यासी

या कोई साधु या साधक ही लक्ष्मी की

साधना करें। लक्ष्मी की साधना तो कोई

भी कर सकता है। चाहे पुरुष हो, चाहे

स्त्री हो, चाहे बालक हो, चाहे वृद्ध हो,

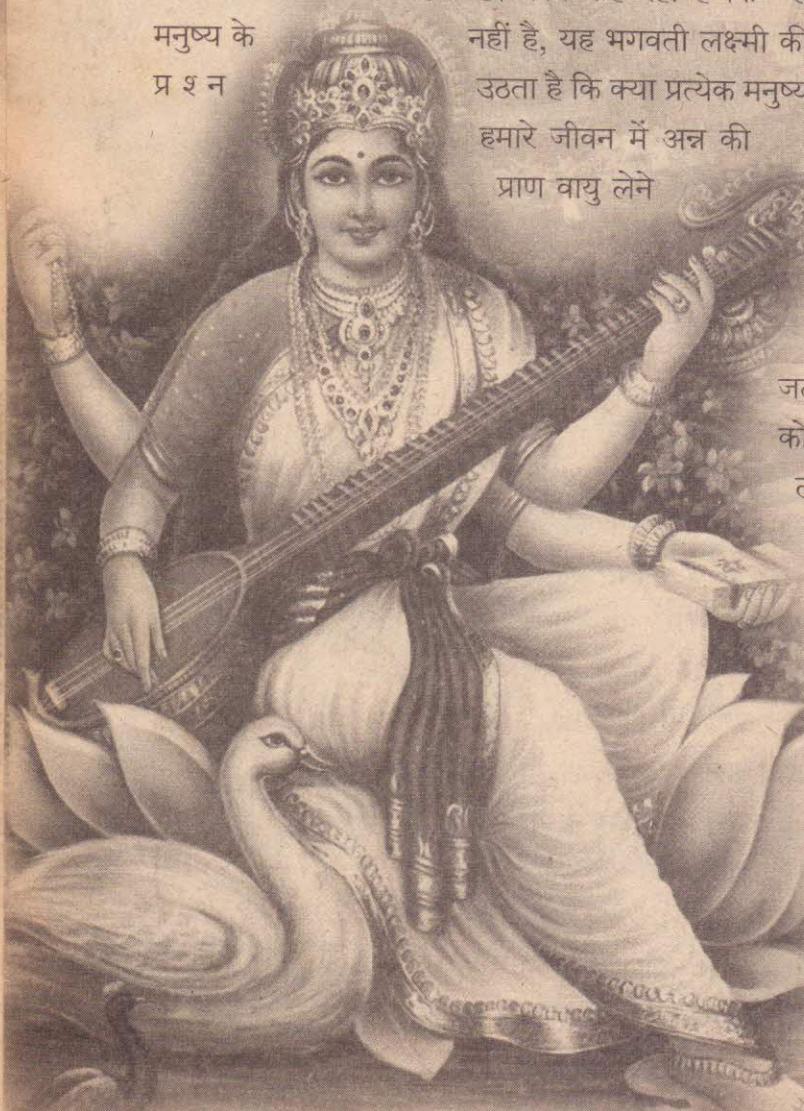
चाहे अमीर हो, चाहे गरीब हो। लक्ष्मी

की साधना से ही जीवन में पूर्णता और

अनुकूलता आ सकती है। जीवन सुखमय

बन सकता है, जीवन में श्रेष्ठता, जीवन में

पूर्णत, जीवन में सौभग्य, जीवन में सुख



और सम्पन्नता आ सकती है और किसी भी देवता की साधना से यह सम्भव नहीं है। चाहे हम रुद्र की साधना करें, चाहे ब्रह्मा की साधना करें, चाहे कुबेर की साधना करें, चाहे इन्द्र की साधना करें यह सब गौण है। वैभव और लक्ष्मी की अधिष्ठात्री देवी तो भगवती लक्ष्मी ही है और मात्र लक्ष्मी की साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने अभावों को दूर कर सकता है। पूर्वजों की गरीबी और निर्धनता को हजारों मील दूर धकेल सकता है और रोग रहित होकर के जीवन को आनन्द दायक बना सकता है, सम्पन्नता और वैभव का प्रदर्शन कर सकता है और लक्ष्मी की कृपा होने पर मन्दिर बना सकता है, धर्मशालाएँ बना सकता है, तालाबों का निर्माण करा सकता है और समाज सेवा के माध्यम से हजारों-हजारों लाखों लोगों का कल्याण कर सकता है। इस दृष्टि से तो भगवती लक्ष्मी की साधना से जहां व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को श्रेष्ठ कर सकता है, पूर्णता प्रदान कर सकता है वहां समाज के बहुत बड़े वर्ग को भी सुख और सौभाग्य, आनन्द और मधुरता प्रदान कर सकता है। एक मात्र भगवती महालक्ष्मी की साधना ही जो अत्यन्त सरल है जिसमें मंत्रों का आडम्बर नहीं है, जिसमें ज्यादा कर्म-काण्ड नहीं है, क्रिया-कलाप नहीं है, जिसमें ज्यादा उपकरणों की आवश्यकता नहीं है। अत्यन्त सरल और सहज साधना है। कहीं भी बैठ कर इस प्रकार की साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

आवश्यकता है दृढ़ निश्चय की, आवश्यकता है इस सत्य को समझने की,

आवश्यकता है इस साधना में प्रवृत होने की और आवश्यकता है दृढ़ता

के साथ इस साधना को पूर्णता प्रदान करने की और यह कार्य गुरु

ही कर सकता है। क्योंकि लक्ष्मी के तो हजारों रूप हैं,

हजारों प्रकार की लक्ष्मी की साधना है। वैष्णव मत से

अलग साधना है, रुद्र मत से अलग प्रकार है, दामनी

पञ्चति से लक्ष्मी की साधना अलग ढंग से की जाती है,

वेदोक्त लक्ष्मी पूजन और साधना अलग ढंग से बताई

गई है, शाकत सम्प्रदाय ने लक्ष्मी साधना का एक अलग

ही रूप स्पष्ट किया है, फिर औघड़ सम्प्रदाय ने, नाथ

सम्प्रदाय ने, शमशान सम्प्रदाय ने, प्रत्येक पंथ सम्प्रदाय

ने लक्ष्मी के कई प्रकार, कई स्वरूप और लक्ष्मी से

सम्बन्धित कई साधनाएँ स्पष्ट की हैं। इसलिये यह समझ

में नहीं आता कि किस प्रकार से साधना की जाएं, कौनसी

साधना की जाएं? यदपि सभी साधनाएँ भगवती लक्ष्मी से ही

सम्बन्धित हैं, यह सभी साधनाएँ लक्ष्मी प्रदान करने वाली साधनाएँ

हैं। इन सभी साधनाओं से लक्ष्मी का वरद् हस्त वरदान प्राप्त होता है।

और प्रत्येक व्यक्ति के लिये, एक अलग प्रकार की साधना ही मान्य है।

क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न है, उसकी प्रकृति, उसका आकार,

उसका चिन्तन, उसकी विचार पञ्चति, उसके जीवन निर्माण के तन्तु सब कुछ

अलग-अलग हैं। अलग-अलग है तो फिर लक्ष्मी का स्वरूप भी अलग-अलग है। उस

अमुख व्यक्ति के लिये किस प्रकार की साधना उपयुक्त है, कौनसी साधना उपयुक्त है, किस तरह से लक्ष्मी की



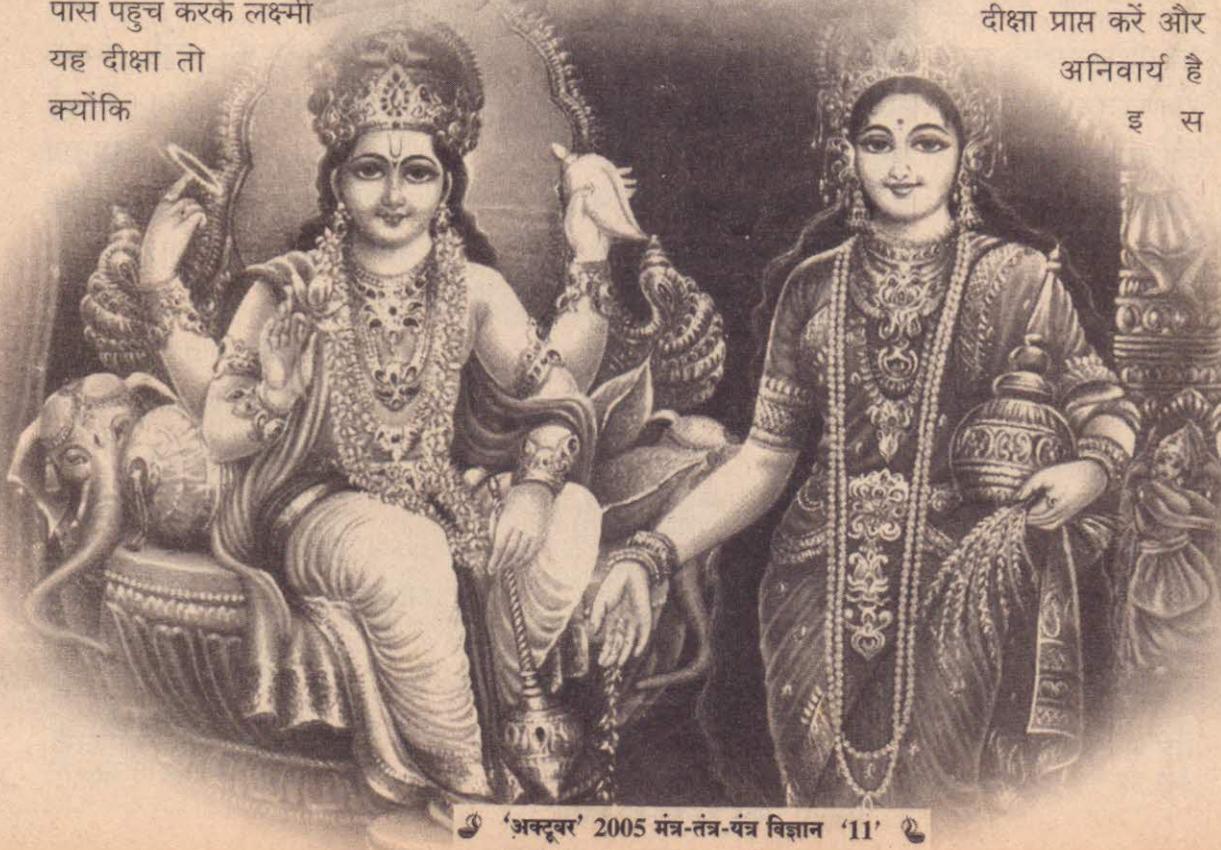
मंत्रे तीर्थे द्विजे दैवते दैवज्ञे भेषजे तथा।
यादुशी भावना वस्य सिद्धिर्भवति तदृशी

जैसी भावना होती है, जिसकी जैसी श्रद्धा होती है उसको उतनी ही फल प्राप्ति होती है। यदि हम भगवती महालक्ष्मी की साधना प्रारम्भ करें तो उसका आधार ही श्रद्धा होती है। श्रद्धाहीन मंत्र जप व्यर्थ है। श्रद्धाहीन दीपावली मनाना बेकार है। हजार-हजार धी के दीपक जला कर भी हम भगवती महालक्ष्मी को प्रसन्न नहीं कर सकते। उनके सामने भोग लगा कर, घटे-घड़ियाल बजाकर देवी की अनुकूलता प्राप्त नहीं कर सकते। यह तो हम कई वर्षों से करते आ रहे हैं, कई वर्षों से दीपावली की रात्रि को दीपों की जगमगाहट करते आ रहे हैं, अतिशबाजी फोड़ते आ रहे हैं। भगवती महालक्ष्मी का चित्र घर में स्थापित करके और उसके सामने अंगरक्ती, धूप, दीप लगाते आ रहे हैं, भोग लगाते आ रहे हैं, घटे-घड़ियाल बजाते आ रहे हैं। मगर हम वर्हीं के वर्हीं हैं जहां थे। क्या कारण है? इतना सब कुछ करने के बावजूद भी हमें फल क्यों नहीं मिल रहा। इसके मूल में अश्रद्धा है, औपचारिकता है, एक निर्वाह है कि हमें दीपावली मनानी है कि हमें लक्ष्मी का पूजन करना है, हमें लक्ष्मी का पूजन करना है और जो तुम्हारे पंडित आते हैं उनको भी लक्ष्मी की साधना और मंत्र का ज्ञान नहीं है। वह तो उसी ढरें के साथ मंत्र जप बोल लेते हैं जो उनके बाप-दादाओं ने उनको सिखाया हुआ होता है। उनको यह भी ज्ञान नहीं होता कि मंत्र जप सही है भी या नहीं। इसको करना चाहिए या नहीं, वह तो लकीर के फकीर होते हैं, वह स्वयं श्रद्धाहीन होते हैं। फलस्वरूप साधक भी श्रद्धाहीन रह जाता है। इसलिये भगवती महालक्ष्मी की साधना उनकी प्रसन्नता प्राप्ति उनसे वरदान प्राप्त करने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि हमारे मन में श्रद्धा हो, संकल्प शक्ति हो, गुरु हो जो तुम्हें ज्ञान दे सके, जो तुम्हें चेतना दे सके। सम्पर्क करके, व्यक्तिगत रूप से मिलकर के उन मंत्रों को प्राप्त किया जाएं जो अपने आप में चैतन्य हैं और आधुनिक जीवन में पूर्णता प्रदान

करने वाले हैं। और फिर गुरु के दीक्षा प्राप्त करें और अनिवार्य है

इ स

यह दीक्षा तो
क्योंकि





पेचीदा कार्य है। जिसे गुरु भली प्रकार से सम्पन्न कर सकता है। दीक्षा प्राप्ति के बाद साधक समय-समय पर लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न करें। जिससे उसके जीवन में जो अभाव है, जो निर्धनता है, जो कर्मी है वह दूर हो सकें। कुछ तथ्य लक्ष्मी से सम्बन्धित जान लेने चाहिये। महालक्ष्मी की साधना या मंत्र जप या अनुष्ठान किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ की जा सकती है। पंचमी, दशमी, पूर्णिमा या किसी भी शुक्रवार से यह साधना सम्पन्न करें, शुरू करें तो ज्यादा उचित रहता है। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यदि शतअष्टोतर लक्ष्मी दीक्षा प्राप्त कर ले, तो सफलता निश्चित होती है। किसी भी प्रकार की भगवती महालक्ष्मी से सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने के लिये सहस्र रूपेण महालक्ष्मी यंत्र को स्थापित करें और उसके सामने साधना या उपासना अथवा अनुष्ठान प्रारम्भ करें तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। क्योंकि यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण, इसमें हजार लक्ष्मियों की स्थापना और उनका कीलन होता है। जिससे कि साधक के घर में स्थायित्व प्रदान करती हुई लक्ष्मी स्थापित हो। इसमें कमल पुष्प, गुलाब के पुष्प का प्रयोग पूजन के समय करें और कमलगड़ी की माला से मंत्र जप हो या स्फटिक माला से मंत्र जप हो, तो ज्यादा उचित माना गया है। इस प्रकार की साधना व्यक्ति अपने घर में अकेले या पत्नी के साथ सम्पन्न कर सकता है।

मैंने इस बार तीनों ही पञ्चतियों से दीपावली पूजन कार्य सम्पन्न करवाया। मगर महालक्ष्मी पूजन का उत्तरार्द्ध भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है, जितना महालक्ष्मी पूजन का पूर्वार्द्ध होता है। इसलिये इस गलतफहमी में नहीं रहना चाहिये कि महालक्ष्मी पूजन होने पर सब कुछ सम्पन्न हो गया है, पूरा हो गया है। ऐसी गलतफहमी में नहीं रहना चाहिये, किसी भी कार्य का पूर्वार्द्ध जितना महत्वपूर्ण होता है, उत्तरार्द्ध भी उतना ही महत्वपूर्ण है और पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनों मिलकर ही पूर्णत्व को प्राप्त होता है। इसलिये आज का दिन भी और कल का दिन भी आपके लिये महत्वपूर्ण है। साधनाओं के लिये भी और विशेष रूप से कार्य के लिये भी। रात्रि को मैं कुछ विशेष प्रयोग भी सम्पन्न कराऊंगा।

आज तो राजस्थान में ऐसा नियम है कि दीपावली के दूसरे दिन लोग मिलने के लिये आते हैं, आपके उधर भी आते होंगे, मिलने के लिये जाते हैं, मिलने के लिये आते हैं। परिवार वाले और मित्र भी और दूसरे लोग भी और सामाजिक दृष्टि से यदि हम उन्हें रिस्पॉन्शस (Responce) नहीं दें, यदि खुद हम उनको मिलें नहीं तो वह बड़ा ही अपमान महसूस करते

है। राजस्थान में तो बड़ा जल्दी गुस्सा आता है कि यह बहुत ही लाड़ साहब हो गये है। मिलते ही नहीं, ऐसी उनकी भावना बन जाती है। इसलिये आने मैं थोड़ा विलम्ब हो गया मुझे, लेकिन आपसे मैं कभी भी मिल सकता हूं। आपसे मिलने के लिये औपचारिकताओं की जरूरत नहीं है।
 वहां औपचारिकताओं के जरूरत होती है। मुझे मालूम है कि 11 बज गये हैं। बड़ा ही फड़फड़ा रहा था, मगर फिर भी मुस्कुराता रहा कि आईये, आईये। यह सब सामाजिक मान्यता है, सामाजिक परम्पराएं हैं और उनको भी निभाना उतना ही महत्वपूर्ण है। इस लक्ष्मी पूजन प्रयोगों में आपके पास लक्ष्मी से सम्बन्धित कई साधनाओं के साथ लक्ष्मी के तीन बीज हैं। पूरे लक्ष्मी साधना को, पूरे लक्ष्मी से सम्बन्धित वाङ्मय जितना साहित्य है, जितनी साधना है चाहे वे साबर साधनाएं हो, चाहे तांत्रिक साधना हो, चाहे मांत्रिक साधना हो उन सभी मैं लक्ष्मी से सम्बन्धित तीन बीज ही समावेश हैं। बीज का मतलब है उस पूरे ढांचे का मूल आधार, पूरे पेड़ का अगर मूल आधार है तो उसका बीज है। उस बीज के माध्यम से ही पूरा वृक्ष बनता है और लक्ष्मी के तीन बीज हैं। पहला श्रीं, दूसरा हि या हीं (Hrim या Hreem) या तीसरा बीज कलीं भी कहा जाता है। श्रीं, हीं, कलीं भी कहा जाता है। और तीनों की विशिष्ट साधनाएं, विशिष्ट पद्धतियां प्रचलित हैं। मैं उनमें से संक्षेप में अपने इस प्रवचन में उन पद्धतियों का वर्णन आप के लिये कर रहा हूं। जो प्रैक्टिकल रूप में आपके लिये ज्यादा उपयोगी होंगी। फिर कुछ प्रयोग हैं, सबसे पहले तो आप जो यंत्र निर्माण कर रहे हैं, भोज पत्र पर, स्लेट पर कल आपने श्रीं पूजन किया। श्रीं चक्र पर आपने 36 बीज लिखे होंगे। फिर मैंने पूजन कराया, तो मैंने उसे धुलवा दिया था, साफ करवा दिया था और उस पर कुंकुम लगवाया था। तो मैं उस गलत फहमी को थोड़ा दूर कर दूं कि अनन्त काल तक आपका श्रीं लिखा हुआ रहेगा नहीं। आपका तो अंकन होना चाहिए, उसके बाद मैं आपके मानस में यह रहे कि कल तो आपने धुलवा दिया था तो फिर 'श्रीं' कहा रह गया, यह अर्थ नहीं है। आपके स्नान करने से जो ऑरिजनलटी, जो गुण है, क्वालिटी है वो खत्म नहीं हो जायेगी। जब तक आपने स्नान नहीं किया, जब तक वह गुण है और जैसे ही आपने स्नान किया वे गुण खत्म हो जायेंगे। ये तो कोई अर्थ नहीं है।

मुझे दो-ढाई साल पहले एक सज्जन मिलने को आये और पेंट-शर्ट, सूट पहने हुए थे और दिमाग से कुछ क्रैक से थे। मुझे ऐसा लगा। आते ही उन्होंने मुझसे कहा कि Hello, Dr. Shrimali, How are you? मैंने

कहा well, come-in, sit down. तो वह बैठ गये। और उन्होंने बायां हाथ आगे कर दिया। मैंने सोचा कि या तो मूर्ख है या बहुत ज्यादा बुद्धिमान है। इन दोनों में बीच की स्टेज वाला नहीं है। उसने कहा मैं हरियाणा का हूं और व्यापारी हूं। फिर मैं समझ गया, ये परमहंस तो है ही तो मैंने कहा कि - भारतीय परम्परा में तो सीधा-साधा हाथ जोड़कर भी प्रणाम हो सकता है, आपने तो एकदम बायां हाथ आगे कर दिया। मैं तो इस ज्ञान गंगा में डूबकी लगा नहीं रहा हूं। उसने कहा कि - मेरा नाम अमुक, अमुक है और मैं हरियाणा में व्यापारी हूं और मैं कोई छोटा-मोटा व्यापारी नहीं हूं और नेता भी हूं। और मैं चुनाव में खड़ा हुआ था, मगर दो बार हार गया। मैंने कहा नेता तो हो ही गये। हार गये तो क्या हुआ। यह है कि मैं हारा हुआ एम.एल.ए हूं। यही कह सकते हैं। क्योंकि हरियाणा में लिखते हैं एक्स एम.एल.ए, हारा हुआ एम.एल.ए। भई एम.एल.ए में खड़ा हुआ हार गया। यह भी अपने आप में पोस्ट है। तो मैंने कहा कि आप कोई छोटी-मोटी चीज नहीं हैं। मैं तो हारा हुआ भी एम.एल.ए नहीं हूं। आप हारे हुए एम.एल.ए तो हैं। उसने कहा कि कल मैं इन्दिरा गांधी से मिल कर आया हुआ हूं। यह तो बहुत बड़ी बात हुई और इस हाथ से मिल कर आया हूं और इस हाथ को मिलाया। इसलिये इस हाथ को तीन दिन धोऊंगा नहीं। इसलिये इस हाथ को मिलाया नहीं। आप देखिये इसी हाथ से मैंने इन्दिरा गांधी से हाथ मिलाया और वह ज्यों का त्यों उस हाथ को पकड़े रखा। हाथ धोएंगा तो वह हाथ मिलाया हुआ वह सारा इफिक्ट खत्म हो जायेगा।

तो आपके मन में यह आया हो कि कल तो गुरुजी ने क्रिया कराई, दो दिन की मेहनत खत्म कर दी। हमने तो बड़ी मुश्किल से श्रीं, श्रीं लिखा, अगर आप हरियाणा के हैं तो मुझे फिर कुछ कहना नहीं। अन्यथा श्रीं उसमें अंकन है, मिट गया है। तो आपका तो उसमें मंत्र जप है। यूं तो रोज

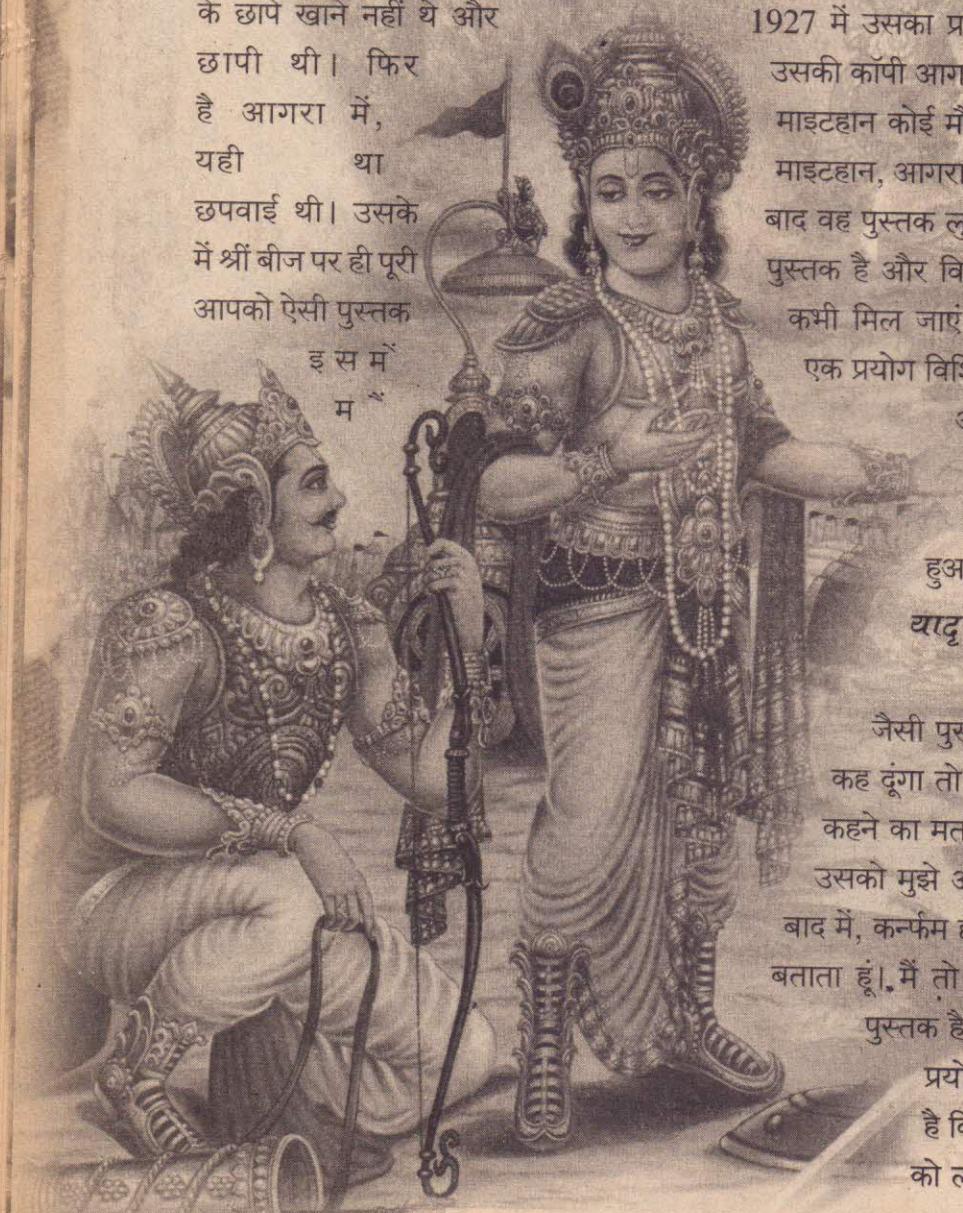
ही उसे स्नान करना पड़ेगा। उससे कुछ अन्तर नहीं होगा और वह यंत्र तो मूल रूप से मैंने आपके लिये, उस 'गाइड लार्न' के लिये दिया था इसलिये दिया था कि यदि भोज पत्र फट भी जाए तो आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है कि ताम्र पत्र पर यंत्र अंकित है। मंत्र तो मैंने सिद्ध किया हुआ था ही।

यह तो कृष्ण की कही हुई बात, जब अर्जुन महाभारत युद्ध में खड़ा हुआ और उसने देखा एक तरफ कौरव सेना खड़ी है, एक तरफ पांडव सेना खड़ी है और उसने अपने चारों भाईयों को देखा। नकुल, सहदेव को देखा, भीम को देखा और युधिष्ठिर को देखा और फिर सामने कौरवों को देखा तो बहुत घबराने लगा। उसने कहा कि सामने मेरे मामाजी खड़े हैं, सामने मेरे काकाजी खड़े हैं, सामने मेरे गुरु द्रोणाचार्य खड़े हैं, भीष्म पितामह खड़े हैं उनकी गोदी में खेला हूं, उनके हाथों में बड़ा हुआ हूं, उन्होंने मुझे सिखाया, पढ़ाया और अब तीर लेकर के मैं इनको खत्म कर दूं। ऐसा कैसे हो सकता है? उसने कृष्ण को कहा कि मुझे युद्ध करना ही नहीं, मुझे राज्य ही नहीं चाहिये, मैं लड़ा चाहता ही नहीं, किनसे लड़ूंगा मैं? ये मेरे शत्रु हैं ही नहीं। इन द्रोणाचार्य से मैंने सीखा है, विद्याएं सिखी हैं, ये तो मेरे गुरु हैं। ये भीष्म पितामह मेरे दादा हैं, उनकी गोदी में मैं खेला हूं, बड़ा हुआ हूं। तब कृष्ण ने कहा कहा कि अर्जुन तू जिनको देख रहा है उनको तो मैं पहले ही मार चुका हूं। ये तो मेरे हुए हैं ही क्योंकि ये तो मरेंगे ही। तू तो केवल निमित्त मात्र के लिए खड़ा है। तू तो केवल यह सोच रहा है कि मुझे तीर चलाना है। तेरे तीर से ये भीष्म पितामह नहीं मर सकते, ये तो जिसके हाथों से मर सकते हैं उसके हाथों से ही मरेंगे। ये मारने वाला तो मैं हूं। मैं मार चुका हूं, तू केवल निमित्त हो जा।

मैं इस पूजा के लिये आपको कह रहा हूं आप निमित्त हो जाइये। बाकी तो सब कुछ मैं

कर चुका हूं जो कुछ करना है। आप तो केवल निमित्त है, केवल अंकन करना है। इस बात की आपको अधिक चिंता करने की जरूरत नहीं है। जो भी प्रयोग करना है, मंत्र सिद्ध करना है, आप उसमें केवल भागीदार है। जो कुछ होना है वह हो रहा है, होगा ही। इसलिये उसके आगे ही आप 'श्रीं' अंकन करेंगे और यह 'श्रीं' बीजांकन है। अपने आप में महत्वपूर्ण प्रयोग है। इसके बाद आपकी कल जो मालाएं पूरी नहीं हुई है, उन्हें पूरा कीजिए क्योंकि यह श्रीं बीज प्रयोग जो है, अपने आप में विशिष्ट प्रयोग है। कल मैंने उस प्रयोग के माध्यम से, आपका सीधा उस यंत्र से भी सम्बन्ध स्थापित किया है कि उस पर तिलक करके अपने ललाट पर तिलक करने का मतलब है कि मेरी देह, मेरे प्राण, मेरी चैतन्यता इस यंत्र से सम्बन्धित बनें। इसलिये इस प्रकार से इस प्रयोग को मैंने सम्पन्न कराया। जीवन में श्रीं प्रयोग या श्रीं बीज प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है और उसके लिये सबसे श्रेष्ठतम् ग्रन्थ यदि है तो वह 'श्रीं विद्या' अर्चन पद्धति है। हस्तलिखित ग्रन्थ है, प्रकाशित हुआ नहीं है। बहुत समय पहले वैकटेश उपदेश मुम्बई में होती थी, उस वैकटेश उपदेश के श्री कृष्ण दास मालिक थे। उन्होंने उस ग्रन्थ का प्रकाशन किया था लियो पद्धति में, पहले इस प्रकार के छापे खाने नहीं थे और छापी थी। फिर है आगरा में, यही था छपवाई थी। उसके में श्रीं बीज पर ही पूरी आपको ऐसी पुस्तक

इस में
म



1927 में उसका प्रकाशन किया था, एक हजार कॉपी उसकी कॉपी आगरा में छपी थी। माइटहान कोई जगह माइटहान कोई मौहल्ला है, जगह है। उसका ऐडरस माइटहान, आगरा। कोई सेठ थे उन्होंने वापिस उसको बाद वह पुस्तक लुप्त है। मगर वह पुस्तक अपने आप पुस्तक है और विशेष महत्वपूर्ण पुस्तक है और यदि कभी मिल जाएं तो वह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। एक प्रयोग विशिष्ट प्रयोग दिया है। उस प्रयोग को आपके सामने लिखवा देता हूं। उसमें कहा है तो उसको अनुभव करके मैं कह रहा हूं। किसी पुस्तक में लिखा हुआ

यादृशं लिखितं दृष्ट्वा, तादृशं
लिखतं मया

जैसी पुस्तक में लिखी हुई है वैसी ही बात कह दूंगा तो मेरा गुरुत्व खत्म हो जायेगा। मेरे कहने का मतलब ही नहीं रहेगा, लिखा हुआ है उसको मुझे अनुभव करना है। अनुभव करने के बाद मैं, कन्फर्म हो तो मुझे बताना चाहिये। ऐसा ही बताता हूं। मैं तो केवल प्रमाण दे रहा हूं कि ऐसी पुस्तक है। उस पुस्तक में श्रीं बीज का एक प्रयोग दिया हुआ है और उन्होंने कहा है कि संक्रान्ति या अमावस्या की रात्रि को लगभग 11 बजे से 1 बजे के बीच

में श्रीगंध तैयार करें। श्रीगंध तैयार करते समय

श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः॥

मंत्र को बोलते रहे और श्रीगंध का निर्माण करते रहे। श्रीगंध में कुंकुम, केसर, कपूर बराबर मात्रा में मिलाते हैं और उसमें जल मिला कर, स्याही की तरह तैयार करते हैं। फिर यह प्रयोग ही है, प्रयोग तो प्रयोग है। क्योंकि यह प्रयोग अपने आप में विशिष्ट तांत्रिक प्रयोग है और तंत्र के बारे में कन्पयूजन की जखरत नहीं है। फिर रात्रि को, इस अर्द्ध रात्रि में। अर्द्धरात्रि कहलाती है 11 बजे से 1 बजे का जो टाईम होता है वह अर्द्धरात्रि कहलाती है, मध्य रात्रि कहलाती है। फिर स्नान करें 11 बजे से 1 बजे के बीच में। यदि इस प्रयोग को करना है तो। स्नान करने के बाद किसी वस्त्र को स्पर्श नहीं करे यानि बिना वस्त्रों के स्नान करें कहने का मतलब यह है और एकांत स्थान हो। कि आपको कोई देखे नहीं और आप भी किसी को देखे नहीं। पत्नी को पीहर भेज दें, बच्चों को ननिहाल भेज दें। फिर साधना करें। स्नान करने के बाद आसन पर आकर बैठ जाएं। शरीर पर किसी प्रकार का वस्त्र या धागा नहीं हो और दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठे और भोज पत्र पर चांदी की श्लाका से उस श्रीगंध से 1008 बार श्रीं लिखें। प्रत्येक श्रीं पर एक बार

श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः॥

मंत्र का जप करें। एक बार मंत्र बालें और भोज पत्र पर श्रीं मंत्र लिख दें, कुल 1008 लिखें। मगर यह ध्यान रखना है कि 11 से 1 बजे के बीच में सब काम समाप्त होना है। इस स्नान करने से लेकर सब काम कम्पलिट होना है। यह और बता देता हूं आपको, उसके बाद में एक विशेष मंत्र है, उस मंत्र को आपको लिखवा देता हूं। उस मंत्र का एक माला मंत्र जप हकीक माला से करें। हकीक माला ले लें हाथ में और फिर उस मंत्र को जपें। इसमें ॐ नहीं है।

श्रीं देवत्यै गन्धर्वं पिशाचीं कुबेरायै हसन्मुखिं आगच्छ
सिद्धये ही श्रीं हूं फट॥

और इस मंत्र का 108 बार उच्चारण करना है, 1008 लिखने के बाद। और उस श्रीगंध से तर्जनी अंगुली से उस श्रीं पर बिन्दीयां लगा देनी है। बिन्दीयां लगाते रहना है और मंत्र बोलते रहना है। उन 1008 पर जो भोज पत्र पर लिखे हैं। इसका मतलब है एक बार मंत्र बोलेंगे तो दस या बारह बिन्दीयां लगनी चाहिये। जब 108 बार बोलेंगे तो 1008 पर बिन्दीयां लग जायेगी और फिर उस भोज पत्र को रात्रि को मोड़ कर के, चांदी के ताबीज में (पहले से ही बनवा कर तैयार रखें) डाल करके, दाहिनी भुजा पर बांध लें और सो जाये वहीं पर और दूसरे दिन सुबह, दोपहर (दोपहर तक यानि करीब-करीब 12 बजे तक) तक अनायास धन की प्राप्ति होगी ही। यह गारन्टी है और विशिष्ट धन प्राप्ति होगी। ऐसा भी होता है की सुबह सिरहाने ही पड़ा मिल जाये। मगर ऐसा नहीं भी हो क्योंकि आपकी एकाग्रता नहीं है। एकाग्रता हो आपकी तो सिरहाने धन मिलेगा ही। यह भी निश्चित है और नहीं मिले तो चिंता करने की जरूरत नहीं। दोपहर का मतलब है 12-1 बजे तक तो आपको अनायास धन की प्राप्ति होगी ही। मार्ग में पढ़े हुए पैसे मिल जाएं, बटुआ मिल जाये। कोई आकर के दे दें। ऐसा कुछ भी हो जाये, जहां सौ रुपये की बिक्री होती है वहां दो हजार की हो जाये। मगर आप इस प्रयोग को आजमा लें और उसका इफिक्ट पूरे एक महीने तक रहता है। मगर पहले दिन इफिक्ट ज्यादा होगा, दूसरे दिन उससे कम होगा, तीसरे दिन उससे कम होगा, चौथे दिन उससे भी कम होगा, यह भी बता देता हूं। मगर पहले दिन तो इफिक्ट होता ही है। उस पुस्तक में ऐसा लिखा है कि आपकी एक महिने की आमदनी एक दिन में प्राप्त हो जाती है। यदि आप दो हजार रुपये अनायास प्राप्त हो जायेंगे और

यह प्रयोग समझाया था और उनको उनको धन मिला है और रास्ते में दूसरे दिन की गुरुजी दोष लग गया तो कहा तुम्हें तो यह मिला है, होगा, तुमने जेब तो काटी नहीं।

तो छः बार उसने प्रयोग किया, यह तो महीने भर की कमाई इसमें और भी प्रयोग है केवल श्रीं प्रयोग के बारे में महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें नुकसान नहीं है और इसमें

रुपये महीना कमाते हैं। तो उस दिन आपको दो यहां पर एक व्यक्ति उपस्थित है जिनको मैंने

पांच - छः बार ऐसा हुआ है और मार्ग में चलते हुए, मिला और मेरे पास आये की चोरी को तो यह पैसा है नहीं। मैंने किसी का पैसा होगा, बटुआ गिरा तुम्हें मिला तुम उसका उपयोग करो।

छः बार उसको सफलता मिली।

एक दिन में मिल सकती है। जिनकी रेंज ज्यादा है। मैंने तो दिया है। जो कि आपके लिये कोई दोष नहीं है, कोई कहीं किसी प्रकार की



तकलीफ नहीं है।

यह प्रयोग मेरा आजमाया हुआ है और मेरा ही आजमाया हुआ नहीं, मेरे कई सन्न्यासी शिष्यों का भी आजमाया हुआ है। वह जंगल में करते हैं साधना और भिक्षा लेने जाते हैं और कोई व्यक्ति मिलता है महाराज दो हजार रुपये मिले, आप ही ले जाईये। महाराज धोती-पोथी फेंक देते हैं और मस्ती मारते हैं। मैंने कहा सालों तुम भूखे मरोगे। कमाने की तुम्हारे पास कोई दूसरी तरकीब तो है नहीं। तुम पांच दिन की साधना तो कर नहीं सकते, भीख मांगोगें, भूखे मरोगे, मेरा नाम ढूबाओंगे। इसलिए तुम कमाओं और खाओं। ऐसा इसलिये तुम यह प्रयोग कर लो, महीने भर की रोटी का तुम्हारा इंतजाम हो जायेगा। वह इसके अलावा कुछ करते ही नहीं। जंगल में उनको कोई देखता ही नहीं, अगर नंगे बैठे रहें। शरीर पर कोई धागा होता ही नहीं है इसमें, न यज्ञोपवित होता है, न कोई मोली होती है। यह दिगम्बरी साधना है, जैन साधना के निकट है और जैन साधना में तो लक्ष्मी से सम्बन्धित कई साधनाएं हैं। कलयुग में साबर साधनाएं और तांत्रिक साधनाएं ज्यादा इफैक्टीव हैं।

भगवती महालक्ष्मी की साधना को जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना कही गई है। भगवती महालक्ष्मी सम्पूर्णता के साथ आप लोगों को, साधकों को, श्रोताओं को प्राप्त हो मैं ऐसा ही आशीर्वद प्रदान कर रहा हूँ।

श्री सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी
निखिलेश्वरानन्द जी

वार्षिक सदस्यता



गणपति यंत्र

भगवान गणेश सभी देवताओं में प्रथम पूज्य देव हैं। इनके बिना कोई भी कार्य, कोई भी पूजा अधूरी ही मानी जाती है। समस्त विष्णुओं का ताश करने वाले विष्णविनाशक गणेश की यदि साधक पर कृपा दर्ती रहे, तो उसके घर में ऋषिद्वि-सिद्धि जो कि गणेश जी की पत्नियाँ हैं, और शुभ-लाभ जो कि उनके पुत्र हैं, का भी स्थायित्व होता है। ऐसा होने से साधक के घर में सुख, सौभाग्य, समृद्धि, मंगल, उन्नति, प्रगति एवं समस्त शुभ कार्य होते ही रहते हैं। इस प्रकार का यंत्र अपने आप में भगवान गणपति का प्रतीक है, और इस प्रकार का यंत्र प्रत्येक साधक के पूजा स्थान में स्थापित होना ही चाहिए। बाद में यदि किसी प्रकार की कोई साधना के पूर्व गणपति पूजन करना हो, तो इसी यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर लेना होता है। इस यंत्र का नित्य धूप आदि द्वारा करने की भी आवश्यकता नहीं है। मात्र इसके प्रभाव से ही घर में प्रगति, उन्नति की स्थिति होने लगती है। घर में इस यंत्र का होना ही भगवान गणपति की कृपा का धोतक है, सुख, सौभाग्य, शान्ति का प्रमाण है।

स्थापन विधि - इस यंत्र को प्राप्त कर गणपति चित्र के सामने हाथ जोड़कर 'गं गणपतये नमः' का मात्र दस मिनट जप करें और गणपति से पूजा स्थान में यंत्र रूप में निवास करने की प्रार्थना करें। इसके पश्चात् यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। अबूकूलता हेतु नित्य यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर नमस्कार कर दें।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त यंत्र आप प्राप्त कर सकते हैं। अपनी मनोनुकूल इस यंत्र का नाम पोस्टकार्ड संख्या 4 पर लिखें दें। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित भेज दी जाएगी तथा वी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं.4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage

स्तरपर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) - 0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) - 0291-2432010



जायत्रु—जायत्रु

महालक्ष्मी

इस कल्युग में जीवन का उपाधार ही महालक्ष्मी है

धर्म, काम और मोक्ष के बीच वहिये अर्थ के कहावे ही अर्थात् इका मानव कंकाव चक्र के बहिये अर्थ के कहावे बदल वहेहैं लेकिन हर्गें बहिवाबना पड़ेगा क्या है लक्ष्मी का बावितविक विवक्षण किका प्रकावे की लक्ष्मी जगत् की अधिष्ठात्री देवी है। लक्ष्मी को किन कृप में किछु किया जाएँ। क्या है लक्ष्मी के आठ विवक्षण कैके प्राप्त ही अकर्ती है श्री, किछि, वश, आयु, वृद्धि, वर्चक्षय इत्यादि। इन्हीं का प्रथमी के उत्तर जानिये, इका आलेख में और विचावे करें कि आपको अपना गीवन किका दिशा में ले जाना है।

यह तो सर्वज्ञत तथ्य है कि लक्ष्मी को धन की देवी माना प्रकृति रूप में जल और कृषि को प्रकट करती है, वनस्पति, गया है, लक्ष्मी की रूपाति धन की अधिष्ठात्री देवी होने के औषधी को प्रकट करती है। जल और कृषि का गहरा सम्बन्ध उपरान्त भी इसे ज्ञान की देवी सरस्वती के बाद प्रमुख स्थान है क्योंकि कृषि से ही हमें सारे भोज्य पदार्थ, वन, औषधी, दिया गया है। क्योंकि संसार में सबसे बड़ा धन ही ज्ञान धन पशु-पक्षियों के रहने का स्थान, हरियाली इत्यादि प्राप्त होते हैं, ज्ञान के बिना कोई भी वस्तु स्थाई नहीं रह सकती है। और इसके लिये जल भी आवश्यक है। अतः वेदोक्त विद्वानों लक्ष्मी को विष्णु की शक्ति कहा गया है जो कि सृष्टि के का यह कथन सही प्रतीत होता है कि श्री इन तीन स्थितियों पालनकर्ता है लक्ष्मी ही वह शक्ति है जो संसार में वृद्धि करती की अधिष्ठात्री है जिसमें बाद में लक्ष्मी रूप में सौन्दर्य जुड़ है। यह भाग्य की अधिष्ठात्री देवी है जो संसार के पालन के गया और यह चारों स्थितियों की अधिष्ठात्री देवी बन गई। लिये आवश्यक है। वेदों में श्री का और लक्ष्मी का वर्णन आया पुराणों के अनुसार लक्ष्मी भृगु कृषि और उनकी पत्नी

रूपाति की पुत्री है। बाद में वह समृद्ध मंथन के पश्चात् समुद्र से उत्पन्न हुई। इसकारण उसे क्षीर सागर राजकन्या कहा जाता है। भगवान् विष्णु की सहचरी होने के कारण जब-जब भगवान विष्णु ने अवतार लिया, लक्ष्मी उनकी अद्विग्निं बनी। वह वामन रूप में अवतार लेने पर पद्मा अर्थात् कमला के निरन्तर सृष्टि चलती रहती है, संतान होती रहती है तथा रूप में सहचरी बनी, परशुराम रूप में धरणी रूप में सहचरी

बनी, राम अवतार में सीता रूप में सहचरी बनी तथा कृष्ण अवतार में रुकमणी रूप में सहचरी बनी। वह विष्णु से बिल्कुल भी अलग नहीं है जिस प्रकार शब्द, अर्थ और ज्ञान के बिना अधूरे है, पुण्य कार्य सत्य के बिना अधूरे है उसी प्रकार विष्णु भी श्री लक्ष्मी के बिना अधूरे है और लक्ष्मी विष्णु के बिना अधूरी है।

विष्णु पूर्ण पुरुषभाव को प्रकट करते हैं और लक्ष्मी पूर्ण स्त्री भाव को प्रकट करती है। लक्ष्मी के सौन्दर्य की तो व्याख्या ही नहीं की जा सकती, लक्ष्मी अपने स्थिर रूप में अपने दोनों हाथों में कमल पुष्प लिये हुए हैं। साथ ही कमल बीजों की माला धारण किये हुए हैं। अधिकतर लक्ष्मी के दोनों और दो हाथी बताये जाते हैं जो अपने सूँड में कुंभ को लिये होते हैं इन्हें अमृत कुंभ कहा जाता है।

लक्ष्मी का अभिप्राय कैवल धन ही नहीं है। धन मुक्ता तो लक्ष्मी का एक चलाय मान उवलप है जो दैनिक व्यवहार में लैन-दैन के रूप में प्रयुक्त होता है। लक्ष्मी का वाटतविक उवलप 'श्री' है औट यह श्री ऊपी लक्ष्मी अपने अष्ट उवलप धान्य लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, धैर्य लक्ष्मी, विद्या लक्ष्मी, जय लक्ष्मी, वीर्य लक्ष्मी, गज लक्ष्मी औट ऊआठ लक्ष्मी के रूप में प्रयुक्त होती है... लक्ष्मी की आधना औट लिंगि इन अष्ट उवलपों की ही लिंगि है, प्रस्तुत विवेचन इन्हीं आठ उवलपों के संबंध है। जिसके प्रत्येक शब्द को आधक अपने जीवन में अपना कर लक्ष्मी की पूर्ण लिंगि प्राप्त करें ...

लक्ष्मी को गहरे रंग में, गुलाबी रंग में, सुनहरे रंग में, पीत वर्ण में और श्वेत वर्ण के रूपों प्रकटीकरण मिलता है। इन सब के भी अलग-अलग गहन अर्थ हैं। यदि वह गहरे रंग में है तो इसका यह तात्पर्य है कि वह विष्णु के संग, विष्णु के समान ही है। जब लक्ष्मी को स्वर्णप्रभा समान सुनहरे पीले रंग में स्पष्ट किया जाता है तो वह धन की अधिष्ठात्री, धन प्रदाता देवी के रूप में स्पष्ट होती है। श्वेत वर्ण में लक्ष्मी का शुद्धतम स्वरूप है, उस रूप में वह प्रकृति के शुद्धतम स्वरूप को प्रकट करती है जिससे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।

जब लक्ष्मी विष्णु के संग होती है तो वह केवल द्विभुजा स्वरूप में स्थापित होती है। जब हम मन्दिर में लक्ष्मी मूर्ति देखते हैं तो वह कमल के सिंहासन पर स्थित अपने चार हाथों में पद्म, शंख, अमृत कलश और बिल्वफल लिये हुए प्रकट होती है। मनुष्य को चार विधाएं, चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने वाले रूप में प्रकट होते हैं। लक्ष्मी के हाथ में स्थित कमल पुष्प जो कि धीरे-धीरे खिलता हुआ प्रतीत होता है वह संसार के प्रकटीकरण के साथ-साथ उसकी वृद्धि को स्पष्ट करता है। दुर्गा रूप में महालक्ष्मी आठ भुजाओं सहित अवतरित होती है। चार भुजाओं में तो पद्म, शंख, कलश, बिल्वफल हैं और बाकी चार हाथों में बाण, तीर, चक्र, भाला धारण किये हुए होती हैं। लक्ष्मी के हाथ में फल यह स्पष्ट करता है कि पूरे संसार को फल प्रदान करने वाली वही देवी है और कर्म के बिना फल नहीं मिलता। बिल्व फल धारण करने का तात्पर्य यह है कि यह बिल्व फल स्वादिष्ट और सुन्दर नहीं दिखाई देता लेकिन स्वास्थ्य के लिये अति उत्तम है। यह जीवन के मोक्ष भाव को प्रकट करता है। अर्थात हम जीवन में स्वाद और स्वरूप की ओर ध्यान देने की बजाय गुणों की ओर ध्यान दें तो जीवन की गति श्रेष्ठ हो जाती है और यह श्रेष्ठ गति पूर्णत्व, मोक्ष की ओर ले जाती है।

कई विद्वानों ने लक्ष्मी के वाहन के रूप में उल्लू को बताया है। यह आश्चर्य है कि लक्ष्मी जैसी धन प्रदात्री देवी उल्लू पर विराजमान है जिसको दिन में दिखाई नहीं देता और रात के अंधेरे में सब कुछ देख सकता है। वास्तव में संस्कृत भाषा में उल्लूख शब्द उल्लू को प्रकट करता है इसी प्रकार उलूक का दूसरा अर्थ इन्द्र भी है अर्थात् इन्द्र का एक नाम उलूक है जो देवताओं के अधिराज है। धन, शक्ति, गौरव के देव हैं अतः लक्ष्मी उलूक रूप में इन्द्र पर विराजमान होती है। इसी प्रकार इन्द्र को पूजने वाले व्यक्तियों को यह सावधानी देती है कि सांसारिक धन, वैभव, गौरव अस्त्वाई है क्योंकि धन, गौरव

और वैभव व्यक्ति को घमण्ड से भर देते हैं और जब व्यक्ति में घमण्ड भर जाता है तो वह अंधा हो जाता है और उसे सूर्य के प्रकाश में भी कुछ नहीं दिखाई देता। लेकिन यदि उस पर श्री और लक्ष्मी विराजमान हैं तो अहंकार, गौरव और वैभव से भरा व्यक्ति अपने मार्ग से विचलित नहीं होता उसे जीवन में लक्ष्मी की स्थिरता प्राप्त होती है और पूर्णत्व और श्री की प्राप्ति के लिये वह गतिशील रहता है ना कि अंधे उल्लू के रूप में धन, वैभव और अहंकार उसे चलाते हैं।

इसीलिये गीता में लिखा है कि स्थितप्रज्ञ बनें लेकिन उल्लू की तरह स्थितप्रज्ञ नहीं बनें जो सूर्य की रोशनी में अपनी आंखें बंद कर देता है। इसलिये मनुष्य को ज्ञान रूपी सूर्य के सामने जिससे बृद्धि की किरणें निकलती हैं। कभी भी आंखें बंद नहीं करनी चाहिए।

लक्ष्मी पूजा जहां उत्तर भारत में दीपोत्सव के रूप में सम्पन्न की जाती है, वही दक्षिण भारत में लक्ष्मी पूजा वरलक्ष्मी के रूप में श्रावण पूर्णिमा को सम्पन्न की जाती है।

लक्ष्मी को विष्णु-नारायण-हरि की शक्ति माना गया है। नारायण हरि विष्णु तो शुद्ध तत्व स्वरूप है और लक्ष्मी उनका बाह्य स्वरूप है जो माया तथा प्रकृति के विभिन्न गुणों को दर्शाती है। सांसारिक चमत्कारों को स्पष्ट करती है। संसार में मनुष्य को रहने के लिये बांध देती है। यदि व्यक्ति नारायण विष्णु और हरि हो जाता है तो उसे संसार मिथ्या लगने लग जाता है उसे यह ज्ञान हो जाता है कि जो कुछ संसार में दिखाई दे रहा है वह सत्य नहीं है, परमतत्व नहीं है, परमानन्द नहीं है। लेकिन जब लक्ष्मी नारायण के बाह्य रूप को धारण कर लेती है तो व्यक्ति को संसार में आनन्द, सुख, भोग, विलास, सौन्दर्य, रस, आभूषण, वस्त्र, कीर्ति, यश, गौरव, सन्तान प्राप्ति, कामना, इच्छा इत्यादि दिखाई देती है और इनके सहारे और इनको प्राप्त करने के लिये वह अपना जीवन पूर्ण शक्ति से गतिमान रखता है। इसीलिये संसार में लक्ष्मी की सर्वाधिक आवश्यकता है क्योंकि ऊपर



दिये गये तत्वों से ही संसार का गतिचक्र चलता रहता है। और जब तक यह गतिचक्र चलता है तब तक मनुष्य इस संसार में दुःख से सुख की यात्रा, आलस्य के कर्तव्य की यात्रा, निराशा से आशा की यात्रा, पीड़ा से स्वास्थ्य की यात्रा, विशाद से आनन्द की यात्रा करता है और वह भी विष्णु की भाँति अपने चारों ओर एक स्वयं की सृष्टि बनाता है जिसमें यह सारे तत्व परिवारजन-पुत्र, बन्धु-बांधव, घर-गांव और संसार होता है।

लक्ष्मी अपनी शक्तियों से अपने प्रकटीकरण से संसार को बांधे रखती है वह विद्या लक्ष्मी भी है जो ज्ञान के जिज्ञासुओं को ज्ञान प्रदान करती है। लक्ष्मी के बिना संन्यासी भी अपना कार्य नहीं कर सकते हैं। वास्तव में गृहस्थ से अधिक संन्यासीयों को लक्ष्मी की आवश्यकता होती है क्योंकि उन्हें स्वयं के हित की अपेक्षा परमार्थ के हित के कार्य अधिक करने पड़ते हैं। स्थान-स्थान पर भ्रमण करना पड़ता है, सांसारिक व्यक्तियों के भीतर छाये हुए अंधकार को दूर करना पड़ता है।

आज संसार में जितने भव्य देवालय, सार्वजनिक स्थान, उद्यान, अपितु सम्प्रदाय है और विभिन्न गुरुओं ने अपने-अपने आश्रम जो अपंग व्यक्तियों से लेकर, पशु-पक्षीयों की सेवा में मतानुसार धर्म की व्याख्या कर अपने मत-सम्प्रदाय को आगे रत रहते हैं उन्हें ऋषियों-संन्यासीयों ने ही बनाया। उनके बढ़ाया। वास्तवितक तथ्य तो यह है कि यदि हम भागवत, माध्यम से किसी लक्ष्मीवान ने किया सम्पन्न की लेकिन प्रेरणा गीता, कुरान, बार्बिल इत्यादि सारे ग्रंथ एक साथ खोलकर के स्रोत संन्यासी और ऋषि, गुरु इत्यादि रहे हैं। संसार में पढ़ें तो उनमें अधिकतर बातें समान ही प्रतीत होगी। सब बैठे-बैठे किसी के मन में दान, धर्म की इच्छा उत्पन्न नहीं होती महायग्नियों में यही लिखा है कि हमें प्रकृति के देव जल, अग्नि, है जब तक उसे योग्य गुरु, ऋषि, संन्यासी द्वारा प्रेरणा प्राप्त नहीं होती, इसलिये गृहस्थ हो अथवा संन्यासी हो लक्ष्मी की पृथ्वी, वायु और आकाश के नियमों का पालन करना चाहिए। नहीं होती, इसलिये गृहस्थ हो अथवा संन्यासी हो लक्ष्मी की इन तत्वों का शरीर में बराबर समायोजन होना चाहिए। पशु आवश्यकता तो सभी को रहती है। कोई अपने ज्ञान से संसार और वनस्पति की रक्षा करनी चाहिए। आहार-विहार विचार को जाग्रत करता है तो कोई अपने धन से संसार को जाग्रत करता है। दोनों लक्ष्मी के ही स्वरूप है।

लक्ष्मी के वैसे तो 108, 1008 नाम हैं और इससे भी अधिक उसके स्वरूप हैं। लेकिन मूल रूप से लक्ष्मी के आठ स्वरूप हैं जो जीवन में अत्याधिक आवश्यक हैं जीवन को पूर्ण शक्ति के साथ चलायमान करने के लिये सदैव व्यक्ति के जीवन में होने ही चाहिये, ये लक्ष्मी के आठ स्वरूप हैं।

धन लक्ष्मी, भू-लक्ष्मी, सरस्वती लक्ष्मी, प्रीति लक्ष्मी, कीर्ति लक्ष्मी, शान्ति लक्ष्मी, तृष्णि लक्ष्मी, पृष्ठि लक्ष्मी।

इन सब की प्राप्ति की इच्छा से ही जीवन जीना चाहिये। यदि जीवन में इन लक्ष्मीयों के किसी भी स्वरूप का अभाव है तो जीवन अधूरा है। धन है लेकिन बल या शक्ति नहीं है। कीर्ति है संसार में, प्रशंसा है संसार में लेकिन घर और जीवन में शांति नहीं है तो भी लक्ष्मी का कोई अर्थ नहीं रह जाता। जब आठों वरदायक स्वरूप जीवन में विद्यमान रहते हैं तो व्यक्ति सांसारिक और आध्यात्मिक लक्ष्मी से पूर्ण होकर जीवन की यात्रा करता है और उसे जीवन में कीर्ति, तृष्णि, पृष्ठि और शांति मिलती है तभी उसके जीवन में लक्ष्मी स्थाई रूप से रह सकती है। अतः मेरा तो साधकों से एक ही अनुरोध है कि केवल उल्लू की भाँति धन की अंधी दौड़ में सम्मिलित न होकर जीवन में धैर्य, बल, शांति, पृष्ठि और तृष्णि भी लाएं तभी अपने स्वयं की सेवा, समाज की सेवा और गुरु की सेवा शुद्ध रूप से सम्पन्न कर सकेंगे। इसके लिये जीवन में जो कर्म प्रदान साधनाएं हैं, उन्हें करना तो आवश्यक ही है क्योंकि कर्म के बिना जीवन की कोई गति नहीं है।

जीवन के चार पुरुषार्थ माने गये हैं, ये चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। इसमें प्रथम पुरुषार्थ धर्म का तात्पर्य है 'धर्म सः इति धारयते' अर्थात् जीवन में जो बातें धारण करने योग्य हैं उसे धर्म कहा गया है। उपनिषदों के इस अर्थ से यह स्पष्ट है कि हिन्दू मुस्लमान, ईसाई, यहूदी धर्म नहीं हैं है। लक्ष्मी के आठ स्वरूपों को जीवन का आधार, अर्थ का

इस प्रकार इन सब सूक्तियों से संसार में जीवों अर्थात् मनुष्यों एवं स्त्रियों के संस्कारों की रचना होती है। यही संस्कार जीवन का निर्माण करते हैं। इसी कारण मनुष्य जीवन निरंतर प्रगति कर रहा है। सब धर्मों में श्रेष्ठ संस्कारों पर विशेष बल दिया गया है। संस्कार और विचार का निर्माण मनुष्य के जीवन के प्रारम्भ से ही हो जाता है। ये संस्कार और विचार मनुष्य को अपने समाज चारों ओर के वातावरण, कुल, परिवार, जाति इत्यादि से प्राप्त होते हैं। इसीलिये धर्म को जीवन का आधार माना गया है। धर्म के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दू सम्प्रदाय में साक्षात् देवी-देवताओं को माना गया है। वहीं मुस्लिम एवं ईसाई मतानुसार एक ईश्वरीय शक्ति है जिसके प्रतीक स्वरूप, दूत स्वरूप, देव स्वरूप पैगम्बर मोहम्मद साहब तथा ईसाईयों के पैगम्बर ईसामसीह हैं।

धर्म जीवन का आधार है लेकिन धर्म से जीवन जीने के लिये प्रथम आवश्यकता अर्थ की रहती है और इसीलिये इसे दूसरा पुरुषार्थ कहा गया है। जीवन प्राप्त हुआ है तो धर्म के साथ जीवन जीते हुए अर्थ की प्राप्ति की जाये, उससे जीवन चलाया जाये तभी जीवन का तीसरा और चौथा पुरुषार्थ काम और मोक्ष सफल हो सकते हैं।

अर्थ का अभिप्राय :

सामान्य रूप से अर्थ का तात्पर्य धन, अर्थात् रूपया, पैसा मान लिया गया है। जबकि यह अपने आप में एक अत्यन्त सीमित अर्थ है। केवल रूपये पैसे इत्यादि से जीवन चल ही नहीं सकता है। यह तो अर्थ का एक छोटा सा रूप है और इसीलिये हमने हिन्दू मान्यता में अर्थ का तात्पर्य लक्ष्मी को माना है। सामान्य रूप से लक्ष्मी का जो स्वरूप देखते हैं वास्तविक रूप में लक्ष्मी का स्वरूप उससे बिलकुल अलग है। लक्ष्मी के आठ स्वरूपों को जीवन का आधार, अर्थ का

आधार माना गया है। लक्ष्मी के इन आठ स्वरूपों को अष्टलक्ष्मी कहा गया है और जिसके जीवन में अर्थ अपने पूरे स्वरूप में अष्टलक्ष्मी स्वरूप में विद्यमान है वही जीवन पूर्णकहा गया है लक्ष्मी के ये आठ स्वरूप है :-

धन लक्ष्मी, भू-लक्ष्मी, सरस्वती लक्ष्मी, प्रीति लक्ष्मी, कीर्ति लक्ष्मी, शान्ति लक्ष्मी, तृष्णि लक्ष्मी, पृष्ठि लक्ष्मी।

इस प्रकार लक्ष्मी के ये आठ स्वरूप इस माया रूपी संसार को अर्थात् मनुष्य के जीवन को आनन्द पूर्वक चलाने के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। लक्ष्मी के सहयोग से ही मनुष्य के जीवन में धन सम्पदा, सांसारिक वस्तुएँ, सरसता आनन्द प्राप्त हो सकता है।

लक्ष्मी की कृपा से ही मनुष्य सांसारिक जीवन में अपने तीसरे पुरुषार्थ 'काम' का पूर्ण रूप से उपयोग कर वह मोक्ष मार्ग पर गतिशील हो सकता है। लक्ष्मी का यह स्वरूप जो कि विद्या माया स्वरूप है। वह मनुष्य को निरंतर कर्म पथ पर अग्रसर करते हैं।

लक्ष्मी के स्वरूप को भी अगर हम देखें तो वह स्वरूप समृद्धि प्रदान करने वाला और जीवन को सुरक्षित रखने वाला आनन्द देने वाला, धन आभूषणों से परिपूर्ण है। जिसके दोनों ओर गज विद्यमान है, जो कि राज्य शक्ति को प्रकट करते हैं। वहीं लक्ष्मी कमल पर विराजमान है तथा अपने हाथ में पूर्ण विकसित कमल लियें हुए हैं ये कमल जीवन की पूर्णता को प्रकट करते हैं साथ ही पूरा स्वरूप एक ज्ञान आभा के रूप में प्रकट होता है।

अंत में यहीं कहना चाहूँगा की लक्ष्मी जो कि विष्णु की शक्ति है केवल धन और माया के रूप में ही प्रकट नहीं होती है। यह धन और माया तो जीवन में श्रेष्ठ कार्यों को करने के एक माध्यम है। संसार में कितने ही धनाधीष हुए और लोग उन्हें भूल गये। लेकिन जिन्होंने लक्ष्मी का सदुपयोग कर मन्दिर, देवालय, धर्मशालाएँ, अस्पताल इत्यादि का निर्माण कराया उन्हें संसार में सदा याद रखा।

इस लक्ष्मी की प्रार्थना में ऋषि पराशरभट्टारक ने प्रार्थना लिखी है कि

पित्रेष त्वत्प्रेयाऽजननि परिपूर्णमसि जने
हितस्त्रोतोवृत्त्या भवति च कदाचित्कलुषधीः।
किमेतद्विदोषः क इह जगतीति त्वमुचितैः
रुपायैर्विस्मार्य स्वजनयसि मातावदसि नः॥

हे मातृ स्वरूप महालक्ष्मी! जगत के पिता भगवान विष्णु है जाज्वल्यमान स्वरूप में प्रकट होती है।

और अपने बालकों पर क्रोधित हो जाते हैं क्योंकि जगत में मनुष्य अपराध करता ही है। तब आप ही भगवान विष्णु को यह कहती है कि इस जगत में कौन निर्दोष है, इस रूप में भगवान विष्णु को उपदेश दे कर उनका क्रोध शांत कर दया को जाग्रत कर, मानव को आप अपनाती है इसीलिये आप हम सब की माता है।

ऋषि का तात्पर्य है पूर्णता जो नौ कलाओं की सर्वोच्च स्थिति है और इस नौ कलाओं में से प्रत्येक कला दूसरी कला से जुड़ी है। सांसारिक कर्तव्य करते हुए दान रूपी कर्तव्य जहां होता है वहीं लक्ष्मी की पहली कला विभूति उपस्थित होती है। विभूति से ही व्यक्ति में नम्रता का आगमन होता है जो लक्ष्मी की दूसरी पीठ शक्ति है। इन दोनों के संयोग से साधक में स्वतः ही कांति का प्रादुर्भाव होता है और तब उसके चेहरे पर दिव्य सौन्दर्य, जो अलौकिक सा लगे, शिलमिला उठता है। तीन कलाओं की प्राप्ति के बाद पुष्टि नामक चतुर्थ कला का आगमन होता है, वाणी सिद्धि, कार्य-सिद्धि, पुत्र-पौत्र आदि सुख, जीवन में गति आदि इसी कला से प्राप्त होती है। जिसके फलस्वरूप पांचवीं कला कीर्ति का प्रादुर्भाव होता है। व्यक्ति को समाज में और अपने कार्यों में सम्मान मिलता है उसके जीवन में धन्यता आती है।

कीर्ति साधना से उत्त्रति मुङ्घ होकर विराजमान होती है और इसके बाद आगमन होता है पुष्टि नामक सातवीं कला का, जिससे साधक जीवन में एक सन्तुष्टि अनुभव करता है तथा वह उत्कृष्टि नामक आठवीं कला को धारण करने की पात्रता प्राप्त कर लेता है। उत्कृष्टि का जब जीवन में आगमन हो जाता है तब व्यक्ति के जीवन में क्षय दोष समाप्त हो जाता है, फलस्वरूप फिर जीवन में वृद्धि ही वृद्धि होती है और लक्ष्मी स्थायित्व ग्रहण करते हुए ऋषि रूप से पूर्णता के साथ विद्यमान हो जाती है।

इन नौ कलाओं से हीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी पहले तो आ ही नहीं सकती और यदि आ भी जाए तो स्थायी नहीं रह सकती। साधक को साधना करते समय इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

वस्तुतः लक्ष्मी की साधना आध्यात्मिक साधना ही है। लक्ष्मी की साधना एकांगी साधना ही नहीं वरन् भगवान श्री नारायण के साथ की संयुक्त साधना है। जिसका मूल दया में छुपा है। शास्त्रों का प्रमाण है कि दया के महागर्भ से ही भगवान श्रीमद् नारायण एवं भगवती महालक्ष्मी अपने

दीपावली पर्व मुहूर्त

दीपावली पर्व मूल रूप से पांच दिनों का एक कल्प है जो वृषभ लग्न की कुण्डली

धन त्रयोदशी से प्रारम्भ होकर यम द्वितीया (भैया दूज) को पूर्ण होता है। धन त्रयोदशी के दिन कुबेर पूजा, नवीन बहीखाता खरीदना, लेखनी पूजन, इत्यादि प्रमुख कार्य सम्पन्न होते हैं।

रूप चुतुर्दशी के दिन व्यापारिक वर्ग अपने व्यापार स्थान पर गद्दी पूजन अर्थात् बैठने के स्थान का पूजन सम्पन्न करते हैं और दीपावली के दिन रात्रि को महालक्ष्मी पूजन सम्पन्न किया जाता है।

ज्योतिष गणना के अनुसार यह पूजन निम्न मुहूर्त के अनुसार सम्पन्न होने चाहिए।

धन त्रयोदशी :

ज्योतिषीय गणना के अनुसार धन त्रयोदशी कार्तिक कृष्ण 13 रविवार, दिनांक 30-10-2005 को है। इस दिन प्रातः 9.51 से 12.51 तक लाभ-अमृत तथा 2.20 से 4.00 बजे तक शुभ का चौधड़िया है। इस समय में आप बहीखाता पूजन कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। कुबेर पूजा एवं दीपदान का विशेष मुहूर्त सांय 5.30 से 6.18 तक है तथा इसी मुहूर्त में आप स्थिर लक्ष्मी (स्वर्ण/रजत) खरीद सकते हैं। स्थिर लक्ष्मी खरीद हेतु यह श्रेष्ठ समय है।

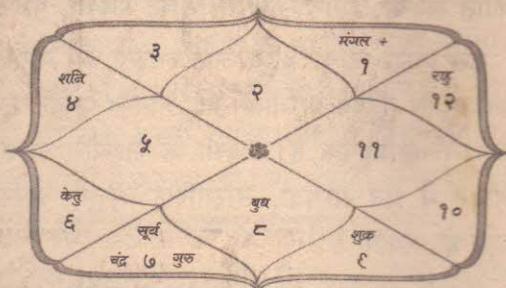
रूप चतुर्दशी :

रूप चतुर्दशी कार्तिक कृष्ण 14, सोमवार दिनांक 31.10.2005 को हस्त नक्षत्र होने से प्रातः 7.18 से 9.24 तक श्रेष्ठ काल है और यह समय साधनाओं के लिए अति श्रेष्ठ है। इस मुहूर्त में साधक सम्मोहन, आकर्षण, अप्सरा से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न कर सकता है।

दीपावली पूजन मुहूर्त

दीपावली कार्तिक कृष्ण 30, मंगलवार दिनांक 01.11.2005 को है। दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन पूरे परिवार सहित पूर्ण विधि-विधान से अवश्य करना चाहिए। लक्ष्मी को चंचला कहा गया है। लेकिन स्थिर मुहूर्त में पूजन करने से लक्ष्मी का वास स्थाई रूप से रहता है। ज्योतिष गणना के अनुसार प्रत्येक दिन में बारह लग्न काल आते हैं। उनमें वृषभ लग्न तथा सिंह लग्न स्थिर माने गये हैं। इन दोनों लग्न की कुण्डली चक्र निम्न प्रकार से है।

य ह
लग्न स्थिर
ल ज न
संजक है
तथा सांय
काल 6.45
से प्रारम्भ



होकर 8.40 तक रहेगा यह समय प्रदोष काल भी है तथा शास्त्रों में ऐसा माना जाता है कि पूर्ण गृहस्थ के स्वरूप रसेश्वर भगवान शिव और पार्वती साथ रहते हैं। गृह स्थिति भी हर दृष्टि से अनुकूल है। इस लग्न में पूजा करना प्रत्येक गृहस्थ के लिये अनुकूल है।

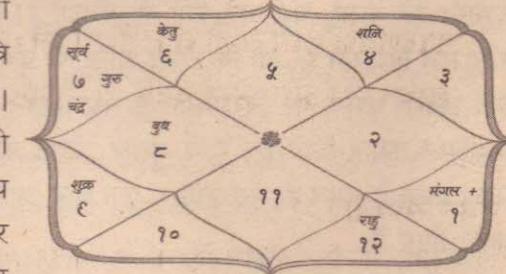
सिंह लग्न की कुण्डली

दीपावली को कालरात्रि कहा गया है। जब लक्ष्मी प्रत्येक गृहस्थ के घर विचरण कर

अपना आशीर्वाद प्रदान करती है। सिंह लग्न के मुहूर्त में लग्न स्थान में देव गुरु जो कि धन-धान्य स्थाई सम्पति के अधिष्ठाता है स्थित है। यह लग्न काल रात्रि 1.13 मिनट से 3.29 मिनट तक है। तंत्र सम्बन्धी किसी भी साधना के लिये तथा पूरे परिवार की उन्नति के लिये सिंह लग्न में पूजा करना अत्यन्त फल प्रदायक माना गया है। इस समय किसी भी साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है।

दीप पूजन का मुहूर्त

दीप जलाने का भी एक विशिष्ट मुहूर्त होता है। श्रेष्ठ समय पर दीप प्रज्ज्वलित करने से वर्ष भर आपके घर-आंगन में लक्ष्मी का प्रकाश प्रज्ज्वलित होता रहता है। इस वर्ष दीपावली अर्थात् दिनांक 1.11.2005, मंगलवार को सांय 5.54 से 6.45 तक का समय दीप प्रज्ज्वलित करने का श्रेष्ठ समय है।



शास्त्रीकृत गुरु प्रदत्त

दीपावली पूजन



हिन्दू शास्त्रों में दीपावली को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पर्व माना गया है, वास्तव में यह पर्व आनन्द पर्व है जीवन को नयी दिशा देने का पर्व है। अतः इस पूजन को पूर्ण विधि-विधान सहित साधना करें। यदि आप गुरु के समक्ष उपस्थित होकर यह साधना करते हैं, तो अति उत्तम है और किसी कारणवश ऐसा न हो सके तो अपने घर में पूरे परिवार सहित आनन्द वातावरण में पूजन करें, घर को स्वच्छ रखें और श्रेष्ठ वस्त्र धारण कर पूजन करें।

पूजन सामग्री

कुंकुम, मोली, अगरबत्ती, केशर, कपूर, सिन्दूर, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, फल, पुष्प माला, गंगाजल, पंचामृत (दूध, दही, धी, शहद और चीनी), यज्ञोपवीत, वस्त्र, मिठाई एवं पंचपात्र।

दीपावली पूजन के शुभ मुहूर्त में सर्वप्रथम आप स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण करें तथा उत्तर दिशा की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठें, सामने बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा लें एवं एक थाली में कुंकुम से अष्टदल कमल बना कर उसे बाजोट पर रख कर उसमे 'महागणपति-महालक्ष्मी यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र के पूर्व में 'ऋद्धि कल्पान्तिका', पश्चिम में 'सिद्धि कल्पान्तिका', उत्तर दिशा में 'शुभ' और दक्षिण दिशा में 'लाभ' की स्थापना करें। यंत्र के मध्य में 'ॐ धनदायै नमः' मंत्र पांच बार बोल कर अष्टगंध से पांच बिन्दियां लगावें, फिर अपने मस्तक पर तिलक करें। इसके बाद निम्न प्रकार से पूजन क्रम प्रारम्भ करें-

पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां जरोऽपि वा /
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः //

इस मंत्र को पढ़कर अपने ऊपर तथा सभी पूजन सामग्री पर पंचपात्र में रखा हुआ जल छिड़क कर पवित्र कर लें।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र को पढ़े -

ॐ विष्णु विष्णुः श्री मदभगवत्ते महापुरुषस्य
विष्णोराज्या प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽहि
द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे दैवस्वत्मनवन्तरे
जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अस्मिन् पवित्र क्षेत्रे अमुक
वासरे (दिन का नाम लें) अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना
गौत्र बोलें), अमुक शमर्हिहं (अपना नाम बोलें) यथा
मिलितोपचारैः श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थे तदंगत्वेन
गणपति पूजनं च करिष्ये।

जल भूमि पर छोड़ दें।

गुरु पूजन

सामने गुरु यंत्र व गुरु चित्र स्थापित कर लें तथा दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नमः ।

पादं स्नानं तिलकं पुष्पं धूपं ।

दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि नमः ॥

ऐसा बोल कर पाद, स्नान, तिलक, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य आदि समर्पित करें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें -

अङ्गान्तिमिरान्धस्य ज्ञानाङ्गजन शत्राकया ।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गणपति पूजन

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का ध्यान करें -

गजाननं भूतं गणाधिसेवितं,

कपितथं जम्बूफलं चारुभक्षणं ।

उमासुतं शोकं विनाशं कारकं;

नमामि विद्वेश्वरं पादपंकजम् ॥

उँगणेशाय नमः ध्यानं समर्पयामि ॥

भगवान गणपति को आसन के लिए पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद सामने स्थापित यंत्र को जल से स्नान करावें, फिर पंचामृत स्नान करावें, स्नान के समय निम्न मंत्र बोलें -

पश्च नद्यः सरस्वती मूर्यिवन्ति सस्त्रोतसः ।

सरस्वती तु पश्चाद् सादेशेऽभवत् सरित् ॥

इसके बाद चन्दन, अक्षत, पुष्पमाला, नैवेद्य आदि समर्पित करें तथा धूप-दीप दिखाएं -

चन्दनं अक्षतान् पुष्पं मालां

नैवेद्यं च समर्पयामि नमः ।

धूपं दीपं दर्शयामि नमः ॥

इसके बाद तीन बार मुख शुद्धि के लिए आचमन करायें इलायची और लौंग आदि से युक्त पान चढायें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें -

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विज्ञायक ॥

ॐ गं गणपतये नमः ।

निर्विघ्नमस्तु । निर्विघ्नमस्तु । निर्विघ्नमस्तु ।

अनेन कृतेन पूजनेन सिद्धि बुद्धि सहितः ॥

श्री भगवान् गणाधिपतिः प्रीयन्ताम् ॥

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करें -

ॐ अम्बेऽअम्बिके अम्बालिके न मा नवति कश्चन ।

सुसस्त्वश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः ध्यानं समर्पयामि ॥

दारिद्र्य विद्राविणी लक्ष्मी कला

अपनी दार्यी ओर चावल की 16 ढेरी बनाकर उसमें 16 कलाओं को स्थापित करने हेतु प्रत्येक ढेरी पर एक सुपारी स्थापित हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमानवति कश्चन ।

सुसस्त्वश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।

निम्न मंत्रों को बोलते हुए कुंकुम, अक्षत से पूजन करें।

ॐ गं गणपतये नमः गणपतिमावा हयपि, स्थापयामि ।

ॐ गौर्ये नमः गौरी मावा स्थापयामि ।

ॐ पदमाये नमः पदमामावा स्थापयामि ।

ॐ शच्य नमः शचीमावा स्थापयामि ।

ॐ मेधाये नमः मेधा मावा स्थापयामि ।

ॐ सावित्र्ये नमः सवित्रीनामा स्थापयामि ।

ॐ विज्याये नमः विज्यामा स्थापयामि ।

ॐ ज्याये नमः ज्यामावा स्थापयामि ।

ॐ देवसेनाये नमः देवसेनामावा स्थापयामि ।

ॐ स्वधाये नमः स्वधामावा स्थापयामि ।

ॐ स्वाहाये नमः स्वाहामावा स्थापयामि ।

ॐ मातृभ्यो नमः मातृरावा स्थापयामि ।

ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृरावा स्थापयामि ।

ॐ धृत्ये नमः धृतिमावा स्थापयामि ।

ॐ पुष्टये नमः पुष्टिमावा स्थापयामि ।

ॐ तुष्टये नमः तुष्टिमावा स्थापयामि ।

ॐ आत्मनः कुलदेवताये नमः

आत्मनः कुलदेवतामावा स्थापयामि ।

महालक्ष्मी ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर भगवती का ध्यान करें -

पदमासना पदमकरां पदमाला विभूषिताम् ।

क्षीर सागर संभूतां हेमवर्ण समप्रभाम् ॥

क्षीर वर्ण समं वस्त्रं दधानं हरिवल्लभाम् ।
भावये भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभां ।
श्री महालक्ष्म्यै नमः ध्यानं समर्पयामि ॥

आसन

आसन के लिए एक पुष्प अर्पित करें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि नमः ॥

पाद

पाद के लिए दो आचमनी जल चढ़ायें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः पादं समर्पयामि ॥
अद्यं आचमनीयं स्नानं च समर्पयामि ॥

पंचामृत स्नान

पंचामृत से भगवती महालक्ष्मी को स्नान करायें-

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम् ।
पंचामृतं गृहणेदं पंचास्यप्राणवल्लभे ।
श्री महालक्ष्म्यै नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदक स्नान

इसके बाद उन्हें शुद्ध जल से स्नान करायें -

परमानन्द बोधाभिं निमज्जन निजमूर्तये ।
शुद्धोदके स्वत स्नानं कल्पायाम्यम्ब शंकरि ॥ श्री
महालक्ष्म्यै नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

वस्त्र

वस्त्र समर्पित करें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥

आभूषण

श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि ॥

गन्ध

इत्र चढ़ावे -

श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि ॥

अक्षत

श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ॥

पुष्प

श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इसके बाद कुंकुम, चावल तथा पुष्प मिला कर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यंत्र पर चढ़ायें -

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि ॥
ॐ चञ्चलायै नमः कटिं पूजयामि ॥
ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि ॥

ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि ॥
ॐ जगन्मात्रै नमः जठरं पूजयामि ॥
ॐ विश्ववल्लभायै नमः वक्षः स्थलं पूजयामि ॥
ॐ कमलवासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि ॥
ॐ पद्मानन्नायै नमः मुखं पूजयामि ॥
ॐ कमलपत्राख्यै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि ॥
ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥

धूप

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपं आघ्रापयामि ॥

दीप

श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शचयामि ॥

नैवेद्य

नाना	विधानि	भक्ष्याणि
व्यञ्जनानि		हरिप्रिये ।
वर्थेष्ट	भुइक्ष्य	नैवेद्यं
षडरसं	च	चतुर्विधम् ॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि ॥

नैवेद्य समर्पित कर तीन बार जल का आचमन कराएं।

ताम्बूल

लौंग इलायची युक्त पान समर्पित करें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥

दक्षिणा

दक्षिणा द्रव्य समर्पित करें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥

इसके बाद यंत्र के चारों ओर रखी गुटिकाओं का भी संक्षिप्त पूजन करें।

इसके बाद 'कमलगद्वे की माला' से निम्न मंत्र का 1 माला मंत्र जप सम्पन्न करें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मीं अरागच्छ अरागच्छ
धनं देहि देहि ॐ ॥

इसके बाद धी की पांच बन्ती की आरती बना कर आरती करें -

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसि दिन सेवत, हर विष्णु धाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता

उमा, रमा ब्रह्मणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि जाता॥
उँ जय लक्ष्मी माता

दुर्गा रूप निरजनि, सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता॥
उँ जय लक्ष्मी माता

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता॥

उँ जय लक्ष्मी माता

जिस घर तुम रहती तहं, सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥
उँ जय लक्ष्मी माता

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान पान का वेभव सब तुमसे आता॥

उँ जय लक्ष्मी माता

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥

उँ जय लक्ष्मी माता

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर जाता।
आ अरनन्द समाना, पाप उत्तर जाता॥

उँ जय लक्ष्मी माता

जल आरती

तीन बार आचमनी से जल लेकर दीपक के चारों ओर घुमायें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

उँ धौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूँ) शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्ति रोषधृयः शान्तिः / वनस्पतयः
शान्ति विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूँ)
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

पुष्पाञ्जलि

दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा यंत्र पर चढ़ा दें -

नाना सुगन्ध पुष्पाणि वथा कालोदभवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण जगदम्बिके ॥
श्री महालक्ष्मयै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

प्रणामाञ्जलि

दोनों हाथ जोड़कर मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करें -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताः ॥
श्री महालक्ष्मयै नमः नमस्करोमि ॥

समर्पण

इसके बाद निम्न समर्पण मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन व जप भगवती लक्ष्मी को समर्पित करें, जिससे कि इसका फल आपको प्राप्त हो सके -

उँ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु,
अनेन कृतेन पूजाराधन कर्मणा।
श्री महालक्ष्मी देवता परासंवित्
स्वरूपिणी प्रीयन्ताम् ॥

एक आचमनी जल ले कर पूजन की पूर्णता हेतु भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद वहां उपस्थित परिवार के सभी सदस्यों एवं स्वजनों का प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण पूजन व साधना सम्पन्न होती है। साधना समाप्ति के पश्चात् महागणपति-महालक्ष्मी यंत्र, ऋषि कल्पान्तिका, सिद्धि कल्पान्तिका, शुभ, लाभ व कमलगड्डे की माला को पूजा स्थान में रख दें और सवा माह तक नित्य कमलगड्डे की माला से - ॥ उँ श्रीं श्रीं महालक्ष्मीं आगच्छ आगच्छ धनं देहि देहि उँ ॥ मंत्र का 1 माला जप करें। सवा माह पश्चात् सभी सामग्री जल में विसर्जित कर दें।

दीयावली 01 दिवान्वर 200/- को है। आपके लिये दीयावली साधना पैकेट का दिमाण करवाया जा रहा है, इस दीयावली पर अपने दो मित्रों को पत्रिका परिवार से जोड़ कर दीयावली साधना पैकेट आप उपहार स्वरूप भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन आप किसी काशणवश अपने मित्रों को सदस्य नहीं बता सकें तब भी आप इसे कार्यालय से ब्यौछावर 450/- में प्राप्त कर सकते हैं।

इस सारी सामग्री को प्राण प्रतिष्ठा युक्त करने में संक्षय लगता है अतः साधकों से दिवेदद्व है कि संक्षय रहते कार्यालय को सूचना दे दें।

अतः विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 490/- की ती.पी.पी. ट्राय आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

जहां कर्म है, वहीं सिद्धि है

‘कर्म सिद्धि’ भी भाग्य का दूसरा स्वरूप है

कर्म सिद्धि बनावस्थ दीक्षा

पिछले छंक में आपने कर्म और भाव्य के सम्बन्ध में आवश्यक अध्ययन किया होगा। आज के इस आलेख में कर्म के सम्बन्ध में और कर्म के माध्यम से जीवन निर्माण की प्रक्रिया स्पष्ट की जा रही है। जिसमें आवश्यक है कि आप आपने सोये हुए कर्म के साथ भाव्य को गुरु के माध्यम से अपनी साधना के माध्यम से जाग्रत करें, इसलिये तो आपको कर्म वर्चस्व दीक्षा संब्यास साधना शिविर में और आपको आपने घर बैठे गुरु द्वारा प्रदत्त विशेष ऊर्जा तरंगों से प्राप्त होणी और इसका अनुभव आप स्वयं शीघ्र कर सकेंगे।

☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆

कर्म सिद्धि में सत्कर्म, पुण्यकर्म को जाग्रत करने के लिये देंगे, व्यर्थ का वाद विवाद करेंगे तो इन सब अशुद्ध वचनों का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों कर्मों की प्रभाव मनुष्य के कर्म पर पड़ता ही है। शुद्ध वचनों के लिये, आवश्यकता पड़ती है। जहां तक मानसिक और आध्यात्मिक शुद्ध उद्देश्य होना भी आवश्यक है। यदि आप कोई जीवन में कर्म है उसके सम्बन्ध में मनुष्य को एक उच्च स्तर की भावभूमि क्रिया कर रहे हैं, साधना कर रहे हैं और आपका उद्देश्य ही लानी पड़ती है और जब वह भाव आ जाता है तो मनुष्य गलत है तो चाहे कितने ही शुद्ध वचन बोलें उनका प्रभाव नहीं सत्कर्म की ओर प्रवृत्त होता है। लेकिन यह प्रत्येक व्यक्ति के लिये सम्भव नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति के लिये शारीरिक दृष्टि से और उनके प्रभाव स्वरूप मन और आत्मा को शान्ति प्राप्त होती है। कैसा भी संकट आ जाये किसी श्रेष्ठ व्यक्ति का श्रेष्ठ कर्म करना सम्भव है।

शरीर की क्रियाओं में पांच कर्मेन्द्रियां कार्य करती हैं, उनमें अथवा गुरु का कहा गया एक श्रेष्ठ वचन भी असीम मानसिक भी कर्म हेतु प्रधान ‘शब्द और क्रिया’ हैं। दैहिक सत्कर्म शांति प्रदान करता है।

उचित वाणी और उचित क्रिया द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि सही वचन की परिभाषा क्या है? इसके लिये पहले यह जानना पड़ेगा कि गलत वचन क्या है? वे वचन जो दूसरों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाते हैं, वेदना प्रदान करते हैं, वे वचन अशुद्ध वचन कहे जिनके द्वारा हम किसी को मानसिक नकारात्मक, इसका प्रभाव हमें वचनों का उद्देश्य और वचनों पीड़ा नहीं पहुंचाते। यदि हम अशुद्ध वचन बोलेंगे, गालियां की विषय वस्तु से ही मालूम पड़ता है। जिस प्रकार के कर्म

होते हैं उसी प्रकार के वचन होते हैं। यह कर्म का सिद्धान्त है कि 'जो बोएंगे वही काटेंगे और एक बार नहीं बार-बार जाते हैं। यह सब शब्द और क्रिया का खेल है। जीवन इसी से काटेंगे।' यदि हम शुद्ध वचनों द्वारा शुद्ध कर्म की जीवन खेती चलता है जैसे- शब्द बोलते हैं वैसी ही क्रिया बनती है और करेंगे तो उसका फल हमें श्रेष्ठ रूप में बार-बार प्रदान होगा। वही कर्म का आधार बन जाती है।

कई बार हम अभद्र शब्द, पीड़ा जनक शब्द, असत्य, गपशप इत्यादि सम्पन्न कर देते हैं और यह क्रिया विशेष रूप से तब है। जिन्हें सदैव ध्यान रखें, करते हैं जब हम तनाव में होते हैं। घर में तनाव में होते हैं तो मौहल्ले के चौराहे पर चार व्यक्तियों के साथ बैठकर अभद्र भाषा का प्रयोग कर, अपना मानसिक तनाव निकालने का प्रयास करते हैं। जीवन में जो गलत निर्णय होते हैं वे तनाव के कारण ही लिये जाते हैं, यदि उस समय थोड़ी मानसिक स्थिरता लाकर, स्वयं के भीतर उत्तर कर स्थिति पर शांति पूर्वक विचार कर, कर्म और क्रिया को सम्पन्न करें तो गलत निर्णय नहीं हो सकते हैं।

शब्दों का बाण, शब्दों का घाव शारीरिक घाव से अधिक गहरा होता है। समय रहते शरीर का घाव तो मिट जाता है लेकिन शब्दों का घाव, पूरे जीवन मानस में अंकित रहता है। इसका एक दूसरा पहलू भी है कि किसी श्रेष्ठ गुरु द्वारा कहे गये शब्द, वाक्य, वचन जीवन भर के लिये अंकित हो जाते हैं। नारद ने वाल्मीकी को इतना ही कहा कि 'यह सब तुम किसके लिये कर रहे हो' और उसे चेतना आ गई तथा वाल्मीकी डाकू से ऋषि बन गये। गीता में भी कृष्ण ने मूल रूप से एक ही तो वचन कहा कि 'निष्काम भाव से कर्म करते रहो, फल की इच्छा मत करो, फल तो प्राप्त होगा ही' और इन वचनों ने अर्जुन के साथ पूरे भारत वर्ष की दिशा ही बदल दी।

यह ध्यान रखने योग्य बात है कि हमें दृढ़ बनना चाहिये, दृढ़ वचन बोलने चाहिये लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं है कि हम दृढ़ता के लिये अशुद्ध वचन बोलें, अशुद्ध प्रतिज्ञा करें। याद रखें कि कठोर और अभद्र भाषा हमारे मानसिक स्तर का संतुलन बिगाड़ देती है और इसी से शारीरिक रोग, बाधाएं उत्पन्न होती हैं क्योंकि जो बाह्य संसार है वह हमारे भीतर के संसार का ही एक विराट स्वरूप है। यदि हम स्वयं जो कार्य कर रहे हैं वह गलत है तो हमें बाह्य संसार पूरा का पूरा गलत भावना है तो पूरा संसार में कोई तथ्य नहीं है। बार-बार साधनाएं सम्पन्न कर हम अपने पूर्व जन्म के अशुद्ध कर्मों को ही तो शुद्ध करने का प्रयास करते हैं। यदि याद रखें कि कठोर और अभद्र भाषा हमारे मानसिक स्तर का आवश्यकता ही क्यों पड़ती? जब जो भाग्य में लिखा है वही भाग्य ही सब कुछ होता तो मनुष्य को जीवन में साधना, पूजा, सत्कर्म, सद्विचार, पुण्य कर्म, मित्रता आदि की आवश्यकता ही क्यों पड़ती? जब जो भाग्य में लिखा है वही होना है तो मनुष्य किसी भी प्रकार का कोई प्रयास करें, वह परिश्रम ही क्यों करें? जो होना है वो हो जायेगा, जो नहीं होना है सो नहीं होगा। यदि ऐसी विचार धारा रखते हैं तो आलसी बन कर जीवन बिता सकते हैं। कालचक्र तो देगा। जैसी आंतरिक भावना है वैसी बाह्य भावना बन जाती है जो नहीं होना है सो नहीं होगा। यदि ऐसी विचार धारा रखते हैं तो आलसी बन कर जीवन बिता सकते हैं। कालचक्र तो देगा। यदि हम आंतरिक रूप में सोचने लगते हैं। जब हम आंतरिक रूप से सोचते हैं कि सब हमारे शत्रु हैं तो बाह्य रूप से भी हमारे हजारों शत्रु बन जाते हैं और जब हम आन्तरिक रूप से मित्रता किये थे, और क्या कर्म नहीं किये थे, लेकिन उनके प्रभाव

सही वचन और सही क्रिया के लिये तीन सिद्धान्त आवश्यक है। जिन्हें सदैव ध्यान रखें,

1. अपने आप में सावधान रह कर अपने वचन और क्रियाओं को देखिये।
2. उन व्यक्तियों को भूला दीजिये अथवा क्षमा कर दीजिये जिन्होंने अपने वचन और क्रियाओं द्वारा आपको हानि पहुंचाने का प्रयास किया है। उन शब्दों को अपनी जीवन पुस्तक से निकाल ही दीजिये।
3. सदैव चेतना युक्त होकर वचन बोलें और उसी के अनुसार क्रिया करें। जो जानकारी नहीं है वे वचन और वह क्रिया करना उचित नहीं है।

कर्म का पुनर्जन्म सिद्धान्तः

जीवन के बाद मृत्यु आती है और मृत्यु के बाद जीवन आता है यह तो सभी जानते हैं और यह सत्य है कि मृत्यु के पश्चात् 11 वें दिन आत्मा यमलोक की ओर प्रस्थान करती है और उसे वहां पहुंचने में पूरा एक वर्ष लगता है, इसी कारण हिन्दू शास्त्रों में एक वर्ष तक मासिक श्राद्ध, तर्पण इत्यादि की व्यवस्था है। एक वर्ष के पश्चात् हम श्राद्ध संवत्सरी के माध्यम से आत्मा की शांति और उसकी पूर्ण मुक्ति के लिये विशेष प्रकार की क्रियाएं सम्पन्न करते हैं और तभी हमें जीवन में उनका आर्शीवाद प्राप्त होता है।

यह तो निश्चित है कि कर्म से बड़ा संसार में कोई तथ्य नहीं है। बार-बार साधनाएं सम्पन्न कर हम अपने पूर्व जन्म के अशुद्ध कर्मों को ही तो शुद्ध करने का प्रयास करते हैं। यदि याद रखें कि कठोर और अभद्र भाषा हमारे मानसिक स्तर का संतुलन बिगाड़ देती है और इसी से शारीरिक रोग, बाधाएं उत्पन्न होती हैं क्योंकि जो बाह्य संसार है वह हमारे भीतर के संसार का ही एक विराट स्वरूप है। यदि हम स्वयं जो कार्य कर रहे हैं वह गलत है तो हमें बाह्य संसार पूरा का पूरा गलत भावना है तो आलसी बन कर जीवन बिता सकते हैं। कालचक्र तो देगा। यदि हमारे भीतर छल-कपट, मक्कारी की भावना है तो पूरा संसार छल-कपट से भरा हुआ ही दिखाई देगा। जैसी आंतरिक भावना है वैसी बाह्य भावना बन जाती है जो नहीं होना है सो नहीं होगा। यदि ऐसी विचार धारा रखते हैं तो आलसी बन कर जीवन बिता सकते हैं। कालचक्र तो देगा। यदि हम उसी रूप में सोचने लगते हैं। जब हम आंतरिक रूप से सोचते हैं कि सब हमारे शत्रु हैं तो बाह्य रूप से भी हमारे हजारों शत्रु बन जाते हैं और जब हम आन्तरिक रूप से मित्रता किये थे, और क्या कर्म नहीं किये थे, लेकिन उनके प्रभाव

हमें यह जात नहीं है कि पिछले जन्मों में हमने क्या कर्म किये थे, और क्या कर्म नहीं किये थे, लेकिन उनके प्रभाव

स्वरूप हमें इस जीवन में सुख-दुख अवश्य प्राप्त हो रहा है। यह तो ठीक ऐसी ही बात हो गई कि हमने एक बैंक में अमुक धनराशि जमा करावायी और उसके ब्याज से काम चला रहे हैं अथवा उस धनराशि को निकाल-निकाल कर जीवन चला रहे हैं, जब वह धनराशि समाप्त हो जाती है हम बैंक से और अधिक उधार लेकर जीवन चलाते हैं। ऐसी ही स्थिति जीवन की है। पिछले जीवन के कर्मों का पुण्य फल अथवा दुःखदायी फल हमारे जीवन बैंक में जमा है यदि हम इस पुण्य फल में और अधिक सिद्धि करना चाहते हैं तो हमें निरन्तर श्रेष्ठ कर्म और अधिक करने पड़ेगें, जिससे जीवन की अमूल्य कर्मराशि, भाग्यराशि में परिवर्तित होकर श्रेष्ठ गति की ओर अग्रसर होती रहे।

पूर्व जन्मों के दोष को, पूर्व जन्म के कर्मों के प्रभाव को, भाग्य के दोष को वर्तमान जीवन में किये गये कर्मों द्वारा सुधार सकते हैं। जीवन में लगे हुए कांटों को भी कर्मद्वारा ही

निकाला जा सकता है, इसलिये तो कर्मरत तो हमें जीवन में निरन्तर रहना ही पड़ेगा और इसीलिये सद्गुरुदेव सदैव कहते थे कि कर्म जीवन्त है तो आपका भाग्य सो नहीं सकता और सोए हुए भाग्य को भी कर्म के द्वारा जाग्रत किया जा सकता है। कर्म के द्वारा ही दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित किया जा सकता है।

कर्म द्वारा अपनी इच्छाओं को प्राप्त किया जा सकता है, अपने परिश्रम के उचित फल को प्राप्त किया जा सकता है और यह कर्मसिद्धि गुरु कृपा, आशीर्वाद से, श्रेष्ठ क्रिया, श्रेष्ठ विचार और श्रेष्ठ वचन द्वारा प्राप्त होती है।

इसीलिये इस बार गुरुदेव ने निश्चय किया है कि 'कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा' प्रत्येक शिष्य को प्राप्त हो, जिसके द्वारा वह अपने जीवन में अंधी राह पर नहीं चले, उसे अपना लक्ष्य स्पष्ट हो। कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा द्वारा साधक अपने जीवन में जो भी कर्म करता है उसमें उसे सफलता प्राप्त होती ही है।

जीवन है तो कर्म है

कर्म प्रधान व्यक्ति ही पुरुष कहलाता है

कर्म हीन व्यक्ति का भाग्योदय भी नहीं होता

इस हेतु आपके लिये सौभाग्य का एक अवसर आया है

गुजराती श्रेष्ठदम्



कर्म दिव्य वर्चस्व दीक्षा

दिनांक : 15 नवम्बर 2005

आप घर बैठे हैं या यात्रा में हैं यह मत सोचिये की गुरुदेव आपके साथ नहीं हैं। गुरु तो दिव्य तरंगों के माध्यम से सदैव अपने शिष्य के साथ रहते ही हैं। शिष्य अपनी तरंगों जाग्रत कर वह भाव ग्रहण कर सके यह क्षमता, यह भावना, यह श्रद्धा, यह विश्वास उसमें उत्पन्न होना ही चाहिये।

कर्मवर्चस्व सिद्धि दीक्षा प्राप्त करने का श्रेष्ठ मुहूर्त है, संन्यास महोत्सव इस दिन आप अपने जीवन में आलस्य, निद्रा को त्याग करने का संकल्प लेते हैं। इस दिन आप अपने जीवन में ऋषि बनने का संकल्प लेते हैं।

नियम

- ❖ आप इस प्रपत्र को भर कर आज ही लिफाफे में भेज दीजिए, हम आपका प्रपत्र गुरुदेव के समक्ष प्रेषित कर देंगे।
- ❖ गुरुदेव की आज्ञा से आपको “कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा” सामग्री, दो सौ चालीस रुपयों की वी.पी. से भेज रहे हैं, जिसे आप पोस्ट मैल को दो सौ चालीस रुपये देकर वी.पी. छुड़वा लें, और “कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा हेतु सामग्री” अपने पास सुरक्षित रख लें।
- ❖ वी.पी. छूटने पर आपने जो मित्र का पता दिया है, उसे एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे।
- ❖ 15 नवम्बर 2005 को लेख में दी गई साधना विधि अनुसार पूजन सम्पन्न करें और अपने आपको ऊर्जा प्राप्ति के लिए तत्पर करें।
- ❖ पूज्य गुरुदेव 15 नवम्बर 2005 को दीक्षा मुहूर्त में विशेष ऊर्जा प्रवाहित करेंगे। प्रत्येक साधनारत साधक विशेष गुरु चेतना अनुभव भी करेंगे, और आपके पूरे शरीर में नारायण शक्ति स्थापित हो सकेंगी। इस काल में निम्न मंत्र का उच्चारण करना है। यदि ध्यान भंग भी होता है तो कोई चिंता नहीं करें, गुरुदेव के वित्र की ओर देखते रहें -

मंत्र : // ऐं //

- ❖ मंत्र जप के पश्चात् शांत भाव से अपने आसन पर बैठे रहें, आपके शरीर में कम्पन होने लगे तो होने दो। मन को शान्त रखकर ऊर्जा प्रवाह ग्रहण करते रहें। यह प्रवाह मन्द और तीव्र हो सकता है। उसके पश्चात् ‘कर्म वर्चस्व मुद्रिका’ को दायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण कर लें।

आपके जीवन का सौभाग्य

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को सिद्धि प्रदान करने एवं जगमगाहट देने में समर्थ है।

* प्रपत्र *

आप ‘कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा सामग्री’ 240/- रु की वी.पी. से निम्न पते पर भेजें। वी.पी. आने पर मैं छुड़ा लूंगा।

मेरी पत्रिका सदस्या संख्या

मेरा पूरा नाम

मेरा पूरा पता

वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बना दें और रसीद मुझे भेज दें।

मेरे मित्र का नाम

मेरे मित्र का पता

जब स्थापित है

धन ब्रह्मोदशी 30.10.2005

कुबेर यंत्र

तो किसे आगा है लौभाग्य को, लम्भि को

कुबेर देवताओं के कोषाधिपति कहे जाते हैं, और इनकी साधना उपासना देवताओं तक ने की है, शास्त्रों के अनुसार दरिद्रता, निवारण, आश्वय बाधा दोष समाप्ति उवं अद्भुत आश्चर्यजनक आर्थिक उन्नति के लिए यह साधना श्रेष्ठ ही नहीं अति उत्तम मानी जाती है।

कुबेर साधना से युक्त विस्तृत विवेचनात्मक लेख जिसे पत्रिका पाठकों के लिए पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

भारतीय ग्रन्थों में कुबेर को धन का देवता माना गया है, ज्ञान है। अटकलबाजी के सहारे वे इसके बारे में कुछ न कुछ और देवताओं में भी कुबेर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है क्योंकि कह देते हैं।

यह आर्थिक समृद्धि का देवता है।

यह यंत्र प्रामाणिक होने के साथ-साथ प्रत्येक गृहस्थ के सकता है। इस मंत्र का जप पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यदि यह संभव न हो तो किसी योग्य विद्वान से भी कुबेर मंत्र के जप करवाये जा सकते हैं।

घर के पूजा स्थान में भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लेना चाहिए, इसके बाद उसकी केशर आदि से षोडशोपचार पूजा करके उनमें लक्ष्मी का आह्वान करना चाहिए, इसके साथ ही इसके पास कुबेर यंत्र की स्थापना कर लेनी चाहिए।

कुबेरे यंत्र अपने आप में पूर्णतः गोपनीय रहा है। यद्यपि तंत्र से सम्बन्धित कई ग्रन्थों में कुबेर यंत्र का वर्णन आया है परन्तु इसका सही रूप में अंकन कर्हीं पर भी प्राप्त नहीं हुआ। लेखक इसकी खोज में था और कुछ वर्षों पूर्व उसे अपने गुरु से कुबेर यंत्र के बारे में पूर्णता से ज्ञात हुआ था, इस यंत्र के बारे में कहावत है कि पिता को चाहिए कि वह अपने पुत्र को भी कुबेर मंत्र का ज्ञान न दें, गुरु को चाहिए कि वह अपने जीवन में अपने अत्यन्त प्रिय शिष्य को ही इस यंत्र का ज्ञान दें। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय रहा है और आज तक प्रामाणिक रूप से न तो इसका प्रकाशन हुआ है और न इसके बारे में प्रामाणिकता से साधु-संतों को

यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावशाली और श्रेष्ठ धनदायक यंत्र माना गया है। लगभग सभी तांत्रिकों और मंत्र-लिए उपयोगी है। मर्मज्ञों ने इस यंत्र की सराहना की है। प्राचीन समय में जितने भी आश्रम थे, उन आश्रमों में पूर्ण विधि-विधान के साथ कुबेर यंत्र की स्थापना अवश्य होती थी, जिससे कि वे आश्रम धन-धान्य से समृद्ध रहते थे, हजारों शिष्यों का पालन पोषण होता था और वे आश्रम राजाओं से भी ज्यादा समृद्ध माने जाते थे, उनके मूल में कुबेर यंत्र का ही प्रभाव था।

कहते हैं कि रावण ने महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त किया था और इस यंत्र को सिद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप वह और उसका राज्य पूर्णतः समृद्ध हो सका था और उसकी लंका सोने की बन गई थी।

मेरे जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि यह यंत्र अपने आप में कितना अधिक प्रभाव पूर्ण है। इस यंत्र की विशेषता यह है कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायता है, जिसके घर में यह यंत्र स्थापित होता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

कई कुम्भ पहले स्वामी प्रवज्यानन्दजी ने लगभग दस हजार साधुओं को भोजन कराया था। एक छोटे से कमरे में स्वर्य बैठ गये थे और अन्दर से उन्होंने खाद्य सामग्री बाहर देते रहने का

उपक्रम किया था। सभी साधु आश्चर्यचकित थे इनके पास अवश्य ही कोई न कोई ऐसी साधना है जिसके बल पर वे हजारों साधुओं को भोजन कराने में समर्थ हो सके हैं, जबकि वे अपने शरीर पर लंगोटी के अलावा कोई बन्धन नहीं रखते। उनकी बगल में एक छोटा-सा झोला पड़ा रहता है और उस झोले में से वे खाद्य पदार्थ निकाल-निकालकर लोगों को खिलाते रहते हैं।

मेरा उनसे मधुर सम्बन्ध है, और पीछे के समय में भी मैं उनसे मिल चुका था, अतः जब मैंने उनसे जिज्ञासा की कि उनके पास कौन सी साधना है जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और हजारों लोगों का पेट भरने में सक्षम हैं, उनका भण्डारा या कोष कभी भी खाली नहीं होता।

उन्होंने मन्द-मन्द मुस्कराते हुए रहस्योदयाटन किया कि उन्होंने कुबेर साधना सम्पन्न कर रखी है और उनके झोले में कुबेर यंत्र है, जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और जितना भी द्रव्य वे चाहते हैं, प्राप्त हो जाता है।

आबू से आगे वशिष्ठ आश्रम है वहां पर भी एक साधु कुछ समय पहले रहते थे जिन्हें लोग नंगा बाबा कहते थे, क्योंकि वे सर्वदा नंगे रहते थे और उनके पास एक झोला था जिसमें से वे मनचाही वस्तुएं तथा खाद्य पदार्थ निकालते थे और उनके जीवन में आर्थिक अभाव कभी भी नहीं रहता था।

कुछ समय पहले उनका शरीर शांत हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने लेखक को बुलाया था और अपने झोले से कुबेर यंत्र निकालकर देते हुए कहा था कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है या

तुम जानते हो एक तथ्य, लेकिन मानते नहीं हो वह तथ्य है, तुम सभी भीख मांगते हो और मैं तुम्हें भिखारी नहीं 'साधक' बनाना चाहता हूं, क्योंकि तुम अपने दुःख और दीनता की बातें दूसरों को सुनाकर उनसे सुख पाने की, उनकी सहानुभूति पाने की इच्छा रखते हो।

यदि तुम एक पल रुक कर सोचोगे, तब तुम एहसास कर पाओगे, कि वास्तव में तुम भिखारी हो,

-एक उंचे स्तर के भिखारी। तुम सुख और सहानुभूति की भीख चाहते हो। मैं ऐसा नहीं कर रहा हूं, कि तुम अपना दुःख किसी से कहो मत, अवश्य कहो, लेकिन अपने आपसे, किसी दूसरे से नहीं। यदि फिर भी तुम्हारा दुःख कम ना हो सके, तो अपने गुरु, अपने इष्ट के चरणों में मौन अभिव्यक्त कर दो।

मैं जीवन में जो कुछ प्राप्त कर सका हूं उसके मूल में कुबेर यंत्र ही हैं तुम मेरे अत्यन्त प्रिय रहे हो, यद्यपि अब तुम गृहस्थ में चले गये हो परन्तु फिर भी तुम्हारी आत्मा उच्च है और मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त ऊँची भावना है, इसीलिये मैं यह कुबेर यंत्र तुम्हें देना अपना कर्तव्य समझता हूं।

उनका यह कुबेर यंत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित है और वास्तव में ही कलियुग में यह यंत्र आश्चर्यजनक सफलता एवं सिद्धि देने वाला है।

पिछली दीपावली को मुझे देश के श्रेष्ठतम उद्योगपति के यहां लक्ष्मी-पूजन के लिये निमंत्रण मिला, यद्यपि मैं व्यस्त था, परन्तु उनका आग्रह ज्यादा था और पिछले बीस वर्षों से उनका मुझ से मधुर सम्बन्ध रहा है, व्यस्तता होने पर भी मैंने दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन कराने की स्वीकृति दे दी।

जब मैं पूजन कराने के लिए बैठा तो उन्होंने तिजोरी में से निकालकर एक यंत्र मेरे सामने रखा और बताया कि पिछली तीन पीढ़ियों से हम इस यंत्र की पूजा दीपावली की रात्रि को करते हैं। मेरे पढ़दादा को यह यंत्र एक उच्चकोटि के महात्मा ने दिया था और कहा था कि यह यंत्र घर की तिजोरी में रख देना और नित्य एक बार इसका दर्शन कर लेना, साथ ही साथ दीपावली की रात्रि को इसका पूरी तरह से पूजन करके पुनः तिजोरी में रख देना।

तब से हम प्रत्येक दीपावली को इस यंत्र की पूजा करते आ रहे हैं। मेरे पिताजी ने यह यंत्र मुझे दिया था और अब यह परम्परा बन गई है कि सबसे बड़े पुत्र को यह यंत्र दिया जाय। आज हम जो कुछ भी हैं इस यंत्र के फलस्वरूप ही है, ऐसा मेरे पिताजी ने मुझे कहा था। मुझे जात नहीं है कि यह यंत्र क्या है और इस यंत्र का क्या नाम है?

मैंने जब यंत्र का ध्यान पूर्वक अवलोकन किया तो मैं खुद आश्चर्य में ढूब गया क्योंकि वह 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कुबेर यंत्र' ही था। इसी प्रकार के यंत्र को मैं आबू में नंगे बाबा से प्राप्त कर चुका था, और इसी यंत्र को कुम्भ में प्रवज्यानन्दजी के पास देख चुका था।

वास्तव में यह यंत्र अपने आप में यंत्र राज है और पूरे तंत्र-मंत्र ग्रंथों में सह यंत्र को सबसे अधिक महत्व दिया गया है, यह अलग बात है कि यह यंत्र अपने आप में गोपनीय रहा है और सामान्य व्यक्तियों को सुलभ नहीं हो सका है।

यह यंत्र धातु का बना होना चाहिए, साथ ही साथ यह यंत्र केवल विजयकाल में ही निर्मित होना चाहिए। जब इस यंत्र का

निर्माण हो जाय तब पूर्ण विधि विधान के साथ प्राण प्रतिष्ठा और चैतन्य विधान होना चाहिए जिससे कि यह यंत्र पूर्ण प्रभाव युक्त हो सके।

इस प्रकार का यंत्र स्वयं ही सिद्ध होता है। किसी जटिल विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती। गृहस्थ को चाहिए कि शुभ स्थान पर इस यंत्र को स्थापित कर देना चाहिए और नित्य इसके दर्शन तथा इसके सामने संभव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए। यह जिसके घर में या जिसके पास होता है उसी को फलदायक होता है। किसी विशेष नाम से यंत्र का निर्माण नहीं होता। जिस प्रकार जहां पर भी दीपक लगाया जाता है वही रोशनी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार वह यंत्र जिस घर में होता है उसी घर को ऊंचा उठाने व पूर्ण समृद्धि, सुख एवं सौभाग्य देने में सहायक होता है।

इस प्रकार मंत्रसिद्ध होने के बाद इस पर पांच लाख मंत्र जप करने से चैतन्य होता है।

साधना विधान

सर्व प्रथम इस यंत्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण वाले व्यक्ति से विजय काल में ही कराना चाहिए फिर इस यंत्र का षोडशोपचार पूजन कर इसमें प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद निम्न विनियोग करना चाहिए।

विनियोग:

अस्य कुबेर मंत्रस्य विश्वा त्र्यः बृहती छन्दः।
शिवमित्र धनेश्वरी, दारिद्र्य विनाशक पूर्ण समृद्धि
सिद्धयर्थं जपे विनियोग।

ध्यान:

मनुजबाह्यविधान वरस्थितं गरुडरत्नलिमं निधिन्यावकम्/
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरण्दे दघतं भज तुंविलम्॥

विरोचन:

इसके बाद कर न्यास और अंग न्यास करना चाहिए तथा सर्वतोभ्र मंडल बनाकर उस पर इस यंत्र को स्थापित करना चाहिए। उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यंत्र दुग्धारा देते हुए निम्न मंत्र से अभिषेक करना चाहिए।

मंत्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं
वित्तेश्वराय नमः ॥



तत्पश्चात् दस हजार पुरुषों से अभिषेक कर पुष्पांजलि देनी चाहिए और उस यंत्र पर निम्न कुबेर मंत्र का पांच लाख मंत्र जप करना चाहिए, तब यंत्र सिद्ध होता है।

कुबेर मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय
धनधान्यादिपतये धनधान्य समृद्धिं मे देहि
दापय स्वाहा।

जब पांच लाख मंत्र जप हो जाय तब उसका दशांश धृत यज्ञ करना चाहिए जिससे कि यंत्र सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार का सिद्ध यंत्र अपने आप में ही दुर्लभ होता है और यह यंत्र वास्तव में ही यंत्रराज कहलाने में समक्ष है क्योंकि जब आज के युग में मानव की प्रतिष्ठा, सम्पत्ति आदि से ही आंकी जाती है तब प्रत्येक व्यक्ति का गृहस्थ का कर्तव्य है कि वह पूर्ण भौतिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर जीवन की उच्चता प्राप्त करें।

परन्तु केवल मात्र प्रयत्न या परिश्रम से ही सब कुछ संभव नहीं होता, परिश्रम के साथ ही साथ यदि मंत्र आदि का सहारा लिया जाय तो निश्चय ही वह पूर्ण उन्नति और समृद्धि प्राप्त

कर सकता है।

आर्थिक-उन्नति, व्यापार-वृद्धि एवं पूर्ण सुख सौभाग्य प्राप्त करने के लिये इससे श्रेष्ठ न तो कोई साधना है और न कोई यंत्र है।

इस यंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि नित्य इसका पूजन आवश्यक नहीं है, अपितु केवल मात्र इसके दर्शन ही पर्याप्त है। इस यंत्र को घर के पूजा स्थान में, फैकट्री में, कारखाने में उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है, स्थापित करते समय भी किसी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल मात्र इसकी उपस्थिति ही कुबेरवत् उत्तरि देने में समर्थ है।

वास्तव में हम भारतवासी, सौभाग्यशाली है कि हमारे पूर्वजों ने इतने श्रेष्ठ मंत्र, और साधनाओं को हमारे सामने रखा और हम उसका लाभ उठाने में समर्थ हो सके पर जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है “सकल पदारथ है जग मांही, भग्यहीन नर पावत नाही।” अतः इस प्रकार का यंत्र भाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर सकते हैं।

जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता, दिव्यता, उच्चता, समृद्धि, सुख-सौभाग्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, पुत्र-सुख, दीर्घायु, स्वस्थता एवं सभी प्रकार के सुख-सौभाग्य प्रदान करने में यह यंत्र समर्थ है क्योंकि अष्ट लक्ष्मी साधना का समावेश

स्वतः ही कूबेर यंत्र में हो जाता है।

अभी तक यह यंत्र गोपनीय रहा है, परन्तु मेरा कर्तव्य है कि मैं पत्रिका के सदस्यों से इस गोपनीयता से परिचित कराऊं और वे इस मंत्र और यंत्र का पूर्ण लाभ उठाकर जीवन में सभी प्रकार से पूर्णता प्राप्त कर सकें।

जब एक माला मंत्र जप पूर्ण हो जाए तो गुरु प्रार्थना एवं गुरु आरती सम्पन्न करें। इसके पश्चात् यंत्र को तिजोरी, पूजा स्थान, व्यापार स्थल, कार्य स्थल में रखा जा सकता है। नित्य कुबेर ध्यान कर इसका स्पर्श शुभ और सौभाग्य प्रदान करता है।

साधना सामग्री - 240/-

पत्रिका पटिघाट के लिये शुभ मुहूर्त में कुबेर यंत्रों का निर्माण कराया गया है। यह कुबेर यंत्र पूर्ण प्राण प्रतिष्ठा युत मंत्र चैतन्य है, साधक बुधघाट को प्रातः हस कर हसका पंचोपचार पूजन करें और यंत्र पर पुष्प अर्पित करें। यंत्र पूजन के पश्चात् मंत्र के सामने पीला आसन बिछाकर बैठें और एक माला कुबेर मंत्र का जप करें।

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय
 धनधान्यादिपतये धनधान्य समृद्धिं मे देहि
 दायय स्वाहा ।

विजय दशमी का एक और महत्व भी है। पौराणिक काल में राजा देवदत्त का एक पुत्र कौत्स हुआ था जिसने अपने गुरु वरातन्त्रु से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की थी। शिक्षा-दीक्षा पूर्ण होने पर उसने अपने गुरु से गुरु दक्षिणा हेतु प्रार्थना की, गुरु ने गुरु दक्षिणा हेतु मना किया लेकिन राजपुत्र होने के कारण वह गुरु दक्षिणा का आग्रह करता रहा। अतः मैं गुरु ने कहा कि मैंने तुम्हें चौदह विद्याएं सिखाई हैं और प्रत्येक विद्या के लिये एक करोड़ सौनों के सिक्के दक्षिणा होती है। कौत्स को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन गुरु की आज्ञा टाल नहीं सकता था और वह गुरु दक्षिणा के लिये निकल पड़ा। उसे मालूम था कि उसके पिता के पास इतनी धनराशि नहीं है। जगह-जगह मालूम करने पर यह ज्ञात हुआ कि राजा रघु (जो की राम के पूर्वज थे) वे बहुत बड़े दानी हैं। उनके पास कौत्स पहुंचा और अपनी इच्छा बताई लेकिन राजा रघु ने उसी समय विश्वजीत यज्ञ सम्पन्न किया था तथा अपना प्रा खजाना ब्राह्मणों को दे दिया था। लेकिन राजा रघु भी अपनी जिद के पक्के थे और उन्होंने वचन दिया कि मैं द्वारा पर आकर कोई खाली नहीं जा सकता है। मैं तुम्हारे लिये धन की व्यवस्था करता हूं। राजा रघु इन्द्र के पास गये और उन्होंने स्वर्ण मुद्राएं मांगी। इन्द्र ने धन के देवता कुबेर को बुलाया और कहा कि अयोध्या नगरी के चारों ओर और अयोध्या नगरी में “शानु और आसि” वृक्षों के चारों ओर स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा कर दो। इस पर नगर में लगे हुए सारे शानु और आसि वृक्षों पर स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा होने लगी। राजा रघु ने चौदह करोड़ स्वर्ण मुद्राएं कौत्स को दे दी तथा वाकी बची मुद्राएं अयोध्या वासीयों को बांट दी। उस दिन विजया दशमी थी। उसके बाद यह परम्परा चल पड़ी की दशहरा के दिन शानु तथा आसि वृक्ष के पत्तों का संग्रह करने से कुबेर की कृपा प्राप्ति होती है। नवरात्रि समाप्ति के पश्चात् ही यह क्रिया सम्पन्न हो सकती है। क्योंकि अयोध्या में सारे लोग राम से भी पहले नवरात्रि के नौ दिन उपवास, ब्रत, पूजा सम्पन्न कर दशहरे का उत्सव सम्पन्न करते थे। इसलिये नवरात्रि पर्व केवल शक्ति का ही नहीं धन-सम्पदा प्राप्त करने का उत्सव भी है।

शिव्य धार्म

- ❖ शिव्य को चाहिए, कि वह जब भी गुरु शब्द का उच्चारण करे, तो श्रद्धा से उच्चारण करे।
- ❖ शिव्य वह है, जो समय के मूल्य को पहिचान सके और जीवन में निरन्तर साधनारत बना रहे।
- ❖ गुरु चरणों के अतिरिक्त शिव्य के लिए कोई तीर्थ नहीं होता, उसी भाव से वह गुरु चरणोदक को भी अमृत समझकर पान करता है।
- ❖ गुरु चरणों में उपस्थित होकर विनम्र भाव से शरणागत होना ही शिव्यता है, क्योंकि विनम्र हृदय में ही ज्ञान का संचार होता है।
- ❖ निरन्तर शिव्य को गुरु मूर्ति का विनान करना चाहिए और नियमित रूप से नित्य गुरु मंत्र का जप करना चाहिए।
- ❖ शिव्य वह है, जिसके जीवन में गुरु के अलावा कोई अन्य भाव या विनान ही न हो ऐसा भाव होने पर वह सब कुछ प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है।
- ❖ यथा सम्भव यह प्रयास हो, कि गुरु कैसे प्रसन्न हो सकते हैं, किस प्रकार से उनकी सेवा की जाए, कैसे गुरु को सन्तुष्ट किया जाए, यहीं शिव्य का ध्येय होता है।
- ❖ जब भी गुरु से मिले तो अपने दिल को पूरा खुला रखकर पूरी बात गुरु से कह दे, गुरु से कुछ छिपा नहीं होता, अतः उनसे कुछ छिपाया भी नहीं जाना चाहिए।
- ❖ गुरु जो भी मंत्र दे, जो भी दीक्षा दे, उसे पूर्ण भक्तिभाव से ग्रहण करे, कभी भी मन में गुरु या मंत्र के प्रति मन में कुर्तक या अश्रद्धा न लावें।
- ❖ गुरु शिव्य को अपने समकक्ष बनाने का सदैव प्रयास करते हैं, और इसी कारण से उन्हें स्वयं सर्वप्रथम शिव्य के अनुरूप स्वरूप धारण करना पड़ता है, परन्तु यह शिव्य की अज्ञानता होती है, जो वह गुरु को सामान्य मनुष्य के रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा विनान दुर्भाव्यपूर्ण होता है।
- ❖ गुरु जो भी आज्ञा देते हैं, उसके पीछे कोई रहस्य अवश्य होता है, अतः शिव्य के बिना किसी संशय के गुरु आज्ञा का अविलम्ब पूर्ण तत्प्रता से पालन करना चाहिए, क्योंकि शिव्य इस जीवन में क्यों आता है, उसका इस युग में क्यों जन्म हुआ है? वह इस पृथ्वी पर क्या कर सकता है, इन सबका ज्ञान केवल गुरु को ही हो सकता है।
- ❖ गुरु और गुरु कार्य को त्यागने वाले को कहीं शरण नहीं मिलती, इसलिए अपनी सामर्थ्यानुसार गुरु कार्यों में पूर्ण मनोभाव से सहयोगी बनें रहें।

शुद्ध वाची

- ☆ जीवन के रास्ते पर अत्यन्त पेचीदी पगड़ियां हैं, पर मैं तुम्हें इनसे अलग हटाकर प्रेम की नाव में यात्रा करने के लिए कह रहा हूं, तुम्हें प्रेम के सागर में हिचकोले खाने को कह रहा हूं, वहां जाने की बात कर रहा हूं जहां प्रेम का अनन्त ज्ञान है।
- ☆ प्रेम तो एक उत्फुल्ल सुवास है, एक सुगन्ध है, प्रेम तो एक छल-छल बहता हुआ झारना है, जिसके नीचे स्नान करने से पूरे तन-मन को मर्स्ती की हिलोरी सी आकर के एक फुहार सी पड़कर के भिगो देती है।
- ☆ समुद्र खुब आगे चलकर गंगोत्री के पास नहीं जाएगा, कि गंगा तुम आओ मुझे मिल लो, गंगोत्री से गंगा खुब उतर कर समुद्र तक जाएगी। उस गंगा को जाना है समुद्र तक, यदि गंगा नहीं जाएगी, बीच में सूख जाएगी, तब भी समुद्र अपनी जगह को नहीं छोड़ेगा। समर्पण तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।
- ☆ प्रेम एक ऐसी पुरवाई है, जिसके स्पर्श से ही अजीब खुमारी आ जाती है, शरीर के तार-तार झांकृत हो जाते हैं कि पूरा शरीर नृत्य करने लग जाता है।
- ☆ केवल किसी मंत्र की साधना और आंखें बन्द करके पालथी मार कर बैठना ही जीवन की श्रेष्ठता नहीं है। जीवन की श्रेष्ठता तो जीवन को परितृप्त कर देने में है और यह आनन्द, यह मर्स्ती, यह पूर्णता, यह श्रेष्ठता और जीवन का यह सौन्दर्य तो प्रेम में ही है।
- ☆ जब शिष्य अपने गुरु या इष्ट से प्रेम करना सीख जाता है, उसके जीवन के अणु-अणु में, जीवन के कण-कण में, रोम-रोम में, जीवन के प्रत्येक कार्य में आनन्द का रहस्यास आ जाता है, एक सुगन्ध आ जाती है, एक तरंग सी आ जाती है।
- ☆ जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है- ज्ञान-चेतना, सुख-सौभाग्य, आनन्द, मर्स्ती, भौतिक

सुविधाएं, मगर तब भी यह जरूरी नहीं है, कि प्रेम
प्राप्त हो ही।

- ☆ अगर पेड़ की जड़ में रस नहीं हैं तो उस पेड़ में
हरी-भरी कोपलें आ ही नहीं सकती, उस पेड़
पर सुन्दर पुष्प नहीं खिल सकते, क्योंकि
उसकी जड़ सुखी हुई हैं। मनुष्य में भी
यदि प्रेम का रस सूख जाए, तो जीवन में
श्रेष्ठता और दिव्यता प्राप्त नहीं हो
सकती।
- ☆ तालाब का जल अगर स्थिर है, तो उसमें
सडांध आ जाएगी, क्योंकि उसमें गति
नहीं है, उसमें चंचलता नहीं है, इसलिए
मैं तुम्हें तालाब नहीं बनाना चाहता, मैं तुम्हें
छलकती हुई प्रेम की नदी बना देना चाहता हूं।
- ☆ इसलिए मैं कहता हूं कि तुम नदी बन जाओ, क्योंकि प्रेम की कल्पना, प्रेम की भावना नदी जानती
है। नदी इस बात को नहीं जानती, कि यह पहाड़ है, पत्थर है, चट्टान है, वह तो बस आगे की
और गतिशील रहती है। उसका लक्ष्य, उसका चिन्तन, उसकी धारण एक ही है कि मुझे उस समुद्र
में जाकर लीन हो जाना है।
- ☆ मैं तुम्हें समुद्र में छलांग लगाने की क्रिया सिखा रहा हूं, मैं तुम्हें उस महासमुद्र में छलांग लगाकर
लहर बनने की क्रिया बता रहा हूं, जिससे तुम गुरु से आत्म साक्षात्कार कर सको, इष्ट में लीन
हो सको... और यही प्रेम की पूर्णता है।
- ☆ और जिस समय तुम पूर्ण लीन होना चाहो अपने गुरु में एकाकार होना चाहो, उस समय मेरे साथ
लहर बनकर बहो, प्रेम की परिभाषा सीखो... और तब तुम्हारे जीवन में एक मर्ती की हिलोर आ
सकेगी, तुम पहली बार एहसास कर सकोगे कि जीवन की सर्वोच्च चेतना और आनन्द प्रेम ही है।
- ☆ परन्तु गुरु से प्रेम का यह रास्ता इतना आसान नहीं है, यह तो तलवार की एक धार है जिस पर
चलने से पैर लहूलुहान हो जाते हैं। यह ऐसी पगड़पड़ी नहीं है जिसके नीचे पुष्प बिछे हों... प्रेम
करना तो बहुत कठिन है, तकलीफदायक है। पूर्ण हृदय से प्रेम करने की क्रिया बिरले को ही आ
पाती है।

आपके लिये, आपके द्वारा सम्पन्न करने योग्य

दीपावली-महालक्ष्मी महाव्रत के

108 विशिष्ट प्रयोग

जिन्हें सम्पन्न कर जीवन की दिशा बदल कर

अपने अनुकूल जीवन आनन्दपूर्वक जी सकते हैं,

ये प्रयोग अवश्य करें और इनके प्रभाव के बारे में हमें सूचित भी करें -



लक्ष्मी का अर्थ हमारे शास्त्रों में केवल मात्र धन से ही सम्बन्धित नहीं है, अपितु जीवन के विविध आशाम धन-धन्य, गृहस्थ, आरोग्य, शांति, पुत्र, पौत्र, शत्रु विनाश, यश, समृद्धि, प्रतिष्ठा, भवन से भी है। यही कारण है कि लक्ष्मी को अनेकानेक नामों से सम्बोधित किया गया है और उनके प्रत्येक स्वरूप का पूजन भी वर्णित किया गया है। दीपावली का पर्व महालक्ष्मी की साधना का पर्व है, इस अवसर पर लक्ष्मी के ही विभिन्न स्वरूपों से सम्बन्धित प्रयोग प्रस्तुत हैं, जिन्हें सम्पन्न कर आप अवश्य ही लाभ प्राप्त कर सकेंगे और अपने जीवन की समस्याओं को इन लघु प्रयोगों के माध्यम से समाप्त कर सकेंगे।

इन प्रयोगों को आप कार्तिक कृष्ण पक्ष 1 (दिनांक 18.10.2005) से मार्गशीष कृष्ण पक्ष 30, अमावस्या (दिनांक 01.12.2005) तक सम्पन्न कर सकते हैं। जिन-जिन प्रयोगों में दिन विशेष का उल्लेख नहीं है वे प्रयोग किसी भी दिन सम्पन्न किये जा सकते हैं। इन प्रयोगों को आरम्भ करने से पूर्व साधक संक्षिप्त रूप से गुरु पूजन अवश्य करें, यदि आपने दीक्षा न भी ली हो तो भी मानसिक रूप से गुरु का पूजन कर प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं। इन प्रयोगों को अत्यन्त शुद्धता और पवित्रता के साथ सम्पन्न करें, प्रयोग करते समय मन में कुविचार अशब्दा, आदि भाव न लाएं।

1. भगवती लक्ष्मी के धनप्रदायक स्वरूप को 'श्री' नाम से रूप चतुर्दशी (31.10.05) के दिन 'पद्मा' को अपने दाहिने सम्बोधित किया गया है। दीपावली के दिवस पर लाल रंग का हाथ में लेकर सिर, दोनों नेत्र, दोनों कान, मुख, गले, हृदय, वस्त्र बिछा कर पीले पुष्प के आसन पर 'श्री चक्र' स्थापित उदर, दोनों हाथ, नाभि, जंघा, पैर पर क्रम से स्पर्श करते हुए कर पूजन करें। फिर निम्न मंत्र का जप 51 बार करें -

ग्यारह-ग्यारह बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

// ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः //

// ॐ ह्रीं पद्मे अरागच्छ नमः //

यह प्रयोग दीपावली के दिन आप कभी भी प्रातः, सायं या बांधकर तिजोरी में रख दें, ज्यारह दिन के पश्चात् इसे नदी में प्रवाहित कर दें। आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है।

प्रयोग समाप्त होने पर 'पद्मा' को निर्जन स्थान पर फेंक दें।

साधना सामग्री - 60/-

साधना सामग्री - 60/- करने से कितना भी मानसिक तनाव हो, वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है, सवा माह के बाद 'हाल्ट हकीक' को नदी में

2. आकर्षक शरीर की प्राप्ति के लिए साधक या साधिका हो जाता है, सवा माह के बाद 'हाल्ट हकीक' को नदी में

प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 100/-

4. विद्या प्राप्ति में कठिनाई आ रही हो, तो साधक दीपावली के दिन एक पेंसिल, जिससे बच्चा लिखता हो, को सफेद वस्त्र में बांधकर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें -

//ॐ ऐं ब्रह्मि॒ ऐं उ॑म् //

इसके पश्चात् किसी भी गुरुवार से प्रारम्भ कर अगले गुरुवार तक नित्य उसी पेंसिल से निम्न मंत्र को बच्चे द्वारा तीन बार लिखाएं। पेंसिल को सुरक्षित रखें।

5. साधक में कार्य करने की शक्ति न्यून होती जा रही है। वह कार्य आरम्भ तो करता है, लेकिन कोई भी कार्य पूरा नहीं कर पाता है, तो साधक वह प्रयोग सम्पन्न करें।

दीपावली के दिन किसी पात्र में 'ईप्सा' रखकर उसका पूजन करें, धी का दीपक लगा दें, निम्न मंत्र का जप 18 दिन तक नित्य 21 बार करें -

// ॐ ऐं तेजस्स॒ सिद्धिं॒ क्ल॑र्ण॒ ॐ॑ फट॒ //

प्रयोग के पश्चात् ईप्सा को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

6. 'अनौपम्या' को लाल वस्त्र में बांधकर घर के उत्तर दिशा में रखने से घर में शांति का वातावरण बनता है। सवा माह के बाद 'अनौपम्या' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 70/-

7. यदि आप बेरोजगार हैं और आपको कार्य की तत्क्षण आवश्यकता है, तो 'त्रिविद्या' को अपने दाढ़िने हाथ में लेकर प्रातः 7 तथा सायं 7 बजे निम्न मंत्र का 21 बार जप करें -

// ॐ हौं॑ कार्य॒ सिद्धिं॒ ॐ॑ नमः॒ //

यह प्रयोग नौ दिन तक करें, शीघ्र ही मार्ग मिलेगा तथा प्रयोग के बाद त्रिविद्या किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 60/-

8. यदि आप अपने वर्तमान कार्यक्षेत्र से सन्तुष्ट नहीं हैं और उसे बदलना चाहते हैं, लेकिन कोई उपयुक्त अवसर नहीं मिल रहा है तो किसी पात्र में चावल भर कर उसमें 'सुरेश्वरी' स्थापित कर दें, नित्य पांच दिन तक 41 बार निम्न मंत्र का जप करें -

// ॐ ऐं॒ हस्त्रे॑ हौं॑ फट॒ //

ॐ 'अक्षवर' 2005 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '47'



पांचवे दिन सुरेश्वरी को नदी में या निर्जन स्थान में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 70/-

9. घर में कितना धान्यादि लाकर रख दिया जाय, किन्तु फिर भी आवश्यकता पड़ने पर वह कम ही रहे, जिसके कारण सदैव तनाव सा व्याप रहे, तो ऐसी स्थिति से निपटने के लिए 'महाधात्री' को किसी पात्र में गुलाब के पुष्प की पखुड़ियों का आसन बनाकर स्थापित करें, महाधात्री का पूजन अष्टग्रन्थ तथा चावल से करें। उसके समक्ष धी का दीपक लगाकर नित्य 45 मिनट मंत्र का उच्चारण करें -

// ॐ हौं॑ थनमानव्य॒ अरबद्व॒ सिद्धिं॒ ॐ॑ फट॒ //

यह प्रयोग पांच दिन तक करें, पांचवें दिन 'महाधात्री' को घर के भण्डार गृह में रख दें। सवा माह के बाद महाधात्री को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 80/-

10. धन के निरन्तर आगमन के लिए किसी पात्र में कुंकुंम से अष्टदल कमल का निर्माण कर 'प्रमोदा' को स्थापित कर उस पर कमल के पांच पुष्प चढ़ाएं, धी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का जप 51 बार करें -

// ॐ श्रीं॑ श्रीं॑ महाधृतं॑ देहि॑ ॐ॑ नमः॒ //

यह प्रयोग सात दिन तक करें, सातवें दिन 'प्रमोदा' को

नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 45/-

11. महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए किसी पात्र में पांच गुलाब के पुष्प रखकर 'ईश्वरी' को स्थापित करें, धी का दीपक लगाकर ईश्वरी का पूजन करें, निम्न मंत्र का जप 35 बार 6 दिन तक करें -

// ॐ ह्रीं श्रियं देहि महालक्ष्मी आरज्ज्ञ ॐ //
छह दिनों के पश्चात् ईश्वरी को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

12. यश, सम्मान की प्राप्ति के लिए साधक धन त्रयोदशी को स्नान कर 'महिमा' को अपने आज्ञा चक्र (दोनों भौहों के मध्य) पर रखते हुए निम्न मंत्र का जप 65 बार करें -

// ॐ ऐं कीर्ति॑ ऋद्धि॒ देहि॑ देहि॑ ॐ //

यह प्रयोग भाई दूज तक करें, भाई दूज के दिन 'महिमा' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

13. वस्तु सम्बन्धी व्यापार की वृद्धि के लिए साधक को चाहिए, कि पांच धी के दीपक लगाकर मध्य में पुष्प के आसन पर 'ऋद्धि' स्थापित करें, खड़े हो 'कमलगद्वे की माला' से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें -

// ॐ ह्रीं ऐं व्यापार वृद्धि॑ ॐ नमः //

जप के उपरान्त माला 'ऋद्धि' के ऊपर रख दें, यह प्रयोग तीन दिन तक करें। पांच दिन के बाद 'ऋद्धि' तथा 'माला' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

14. मशीन सम्बन्धी व्यापार की वृद्धि के लिए साधक को चाहिए, कि मसूर की दाल से एक लाइन में सात ढेरियां बनाएं, सातों ढेरियों पर एक-एक पान का पता तथा लौंग रख दें, तेल का दीपक लगा दें, धूप लगा दें। 'अक्षया' को मध्य की ढेरी पर स्थापित कर निम्न मंत्र का 31 बार जप करें -

// ॐ वं विश्वकर्मा॑ आरज्ज्ञ साधय॑ ॐ //

यह प्रयोग नौ दिन का है, नौ दिन के बाद 'अक्षया' को अपने व्यापार स्थल में स्थापित कर दें, सवा माह के पश्चात् अक्षया को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 110/-

15. हरे रंग के वस्त्र में 'वीर्हमाना' को बांध दें, उसे चिकित्सा सम्बन्धी व्यवसाय में ऐसे स्थान पर रखें जहां

सिर्फ आप देख सकें, नित्य 'वीर्हमाना' पर एक लाल पुष्प चढ़ा कर निम्न मंत्र का जप 21 दिन तक केवल ज्यारह बार करने से चिकित्सा के व्यवसाय में सफलता मिलेगी -

// ॐ ह्रीं हरे॑ हरे॑ हः॑ ॐ नमः //

21 दिन के बाद वीर्हमाना को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 80/-

16. अक्सर यह सुनने में आता है, कि दुश्मनी वश या स्वार्थ वश लोग एक दूसरे का व्यापार बांध देते हैं, जिसका सामना व्यापारी वर्ग को अक्सर करना पड़ता है। ऐसे टोटकों को समाप्त करने के लिए लाल रंग का वस्त्र बिछाकर हल्दी से त्रिभुज बनाकर उसके प्रत्येक कोण में एक-एक पुष्प रखें। एक पात्र में स्वस्तिक का निर्माण कर 'नित्या' उसके ऊपर रखें। 'नित्या' का संक्षिप्त पूजन कर, त्रिभुज में रखें प्रत्येक पुष्प पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए निम्न मंत्र का 21-21 बार जप करें -

// ॐ ह्रीं व्यापार वाधा॑ निवारणाय॑ फट॑ //

मंत्र जप पूर्ण होने पर पुष्प तोड़कर नित्या पर चढ़ा दें। इस प्रकार जब आखिरी पुष्प भी चढ़ जाए, तो नित्या तथा समस्त पुष्प की पंखुड़ियों को सावधानी से श्मशान घाट में फेंक दें।

साधना सामग्री - 60/-

17. यदि घर का कोई सदस्य क्रोध में अधिक रहने लगा है और उचित या अनुचित बात का निर्णय किए बगैर सबका अपमान करने लगा है, तो साधक यह प्रयोग अपनाएं। जो क्रोध करता हो उसका नाम सफेद रंग के वस्त्र पर कुंकुम से लिखकर उसमें 'ज्वाला' को रख कर बांध दें तथा उसे किसी भी वृक्ष पर निम्न मंत्र का 51 बार जप करते हुए टांग दें -

// ॐ क्रीं क्रोधं॑ संहारय॑ वशय॑ ॐ फट॑ //

साधना सामग्री - 60/-

18. लाल रंग के वस्त्र में अष्टगंध से 'श्री' लिखें, फिर उसमें 'त्रिधा' को बांध कर दुकान के बाहर टांगने से ग्राहक दुकान की ओर आकर्षित होगा। तीन माह बाद 'त्रिधा' को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

19. स्वयं के व्यक्तित्व में विशेषता लाने के लिए 'सूक्ष्मा' को दीपावली के दिन धारण कर लें, नित्य प्रातः स्नान करते हुए निम्न मंत्र का जप करते हुए स्नान करें।

// ॐ श्रीं ई॑ श्रियं॑ साधय॑ फट॑ //

ज्यारह दिन के बाद 'सूक्ष्मा' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 66/-

20. यदि शत्रु अत्यधिक हावी हो रहा है, तो साधक यह प्रयोग सम्पन्न करें। यम द्वितीया के दिन रात्रि को नौ बजे के बाद पांच कोयले रखकर, 'महेसरी' रख दें, तीन दिन तक निम्न मंत्र का जप 101 बार करें -

//ॐ कर्त्तर्हौं एं शत्रुनाशाद्य फट//

जप के पश्चात् रात में ही कोयले सहित 'महेसरी' को निर्जन स्थान में फेंक दें।

साधना सामग्री - 90/-

21. 'जगजयेष्ठा' को घर में सफेद रंग के वस्त्र में बांधकर उसे घर की उत्तर दिशा में रख देने से घर में हो रहा कलह शांत होगा।

साधना सामग्री - 70/-

22. धन की प्राप्ति हेतु या आकस्मिक धन के आगमन के लिए 'जगजयेष्ठा' को निम्न मंत्र का 51 बाद उच्चारण कर धारण कर लें -

//ॐ हौं हुं एं फट//

यह प्रयोग तीन दिन तक करें, तीन दिन के बाद जगजयेष्ठा को निर्जन स्थान में फेंक दें।

साधना सामग्री - 70/-

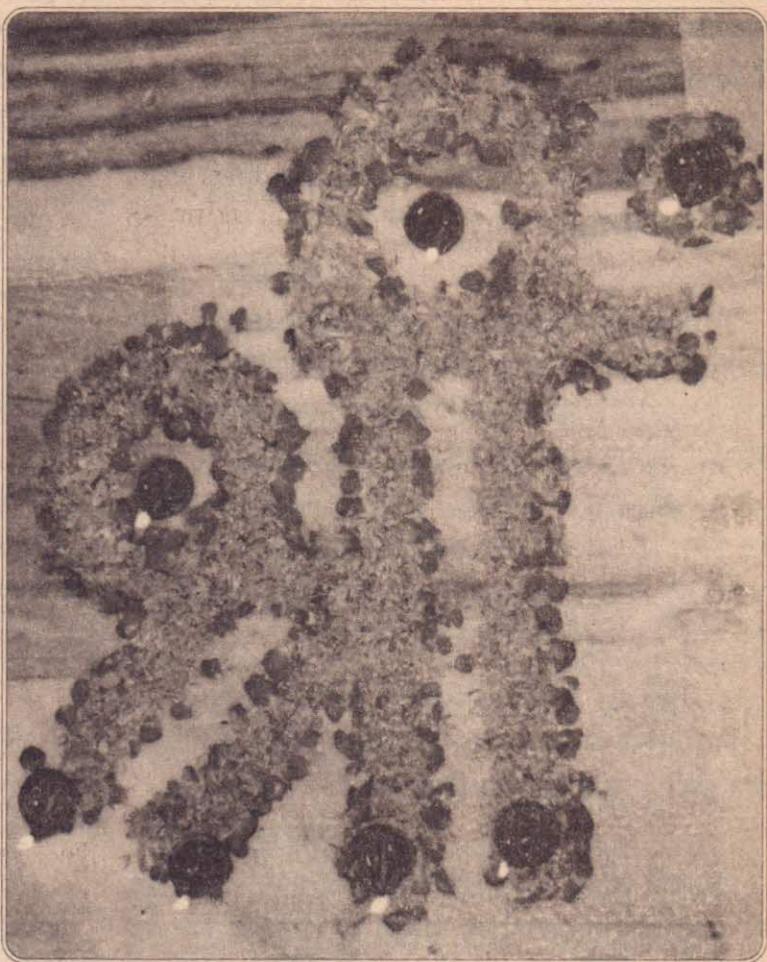
23. यदि आपका बच्चा बहुत अधिक झूठ बोलने लगा है और समझाने पर भी नहीं समझे, तो उसे दीवाली के दिन 'सत्या' पहना दें तथा नित्य आप उसके नाम का संकल्प लेकर 21 बार निम्न मंत्र का जप करें -

//ॐ फ्रं फ्रं हूं फट//

21 दिन के बाद सत्या को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 50/-

24. यदि आपका पुत्र गलत कार्यों में फँस कर घर से विमुख होता जा रहा है, तो उसे गलत कार्यों से उबरने के लिए, तो मानसिक संबल प्रदान करें ही, साथ ही प्रयोग भी करें। मिट्टी को गूंथ कर पांच ढेरियां बनाकर मध्य में 'अर्पणा' रख दें, अर्पणा, का सिन्दूर से पूजन करें, अपने पुत्र का फोटो भी रख दें। बाकी चारों ढेरियों पर क्रमशः प्रत्येक ढेरी पर निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए सिन्दूर की बिंदी लगाएं -



//ॐ एं सौः हौं उ॑//

मंत्र जप कर अपने पुत्र का फोटो उठाकर रख दें तथा बाकी चारों ढेरियों व अर्पणा को निम्न मंत्र का जप करते हुए क्रोधयुक्त हो दक्षिण दिशा में फेंक दें।

साधना सामग्री - 90/-

25. 'क्रिया योग' भी भगवती लक्ष्मी का ही एक स्वरूप है, साधक भगवती की कृपा से ही आध्यात्मिक जीवन में उन्नति कर सकता है। साधक नित्य प्रातः निम्न मंत्र का दस मिनट जप कर ध्यान करें, तो निश्चय ही उसे सफलता मिलेगी।

//ॐ श्रीं हौं हौं जल्त॑ उ॑ फट//

26. 'सम्पूर्णा' को दीपावली के दिन धारण करें, साधक का व्यक्तित्व उसकी दृष्टि से पूर्णता प्राप्त करता है। सवा माह तक उसको धारण करने के पश्चात् सम्पूर्णा नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

27. घर में मन उचाट हो रहा है और मानसिक रूप से व्यक्ति व्यथित ज्यादा रहने लगा हो, तो 'शुद्धा' को दीपावली के दिन लाल रंग के वस्त्र में निम्न मंत्र का 51 बोरु उच्चारण

कर बांध दें तथा उसे पूजन स्थान में रख दें तथा नित्य उसे देखते हुए मंत्र जप करें -

// ॐ मं मनस् चैतन्यं कुरु कुरु ॐ //

यह प्रयोग सात दिन तक करें, सात दिन बाद 'शुद्धा' अपने बगीचे में दबा दें या किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 90/-

28. यदि पति या पत्नी का आकर्षण एक दूसरे से कम होता जा रहा है, तो उसके मध्य आकर्षण बढ़ाने के लिए एक पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर 'आकर्षिणी' स्थापित कर दें। उस पर कुंकुम से पति तथा पत्नी का नाम का प्रथम अक्षर लिखें। उस पर प्रथम दिन लाल रंग के 21 पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें, दूसरे दिन पीले रंग के 21 पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र जप करें तथा तीसरे दिन सफेद रंग के 21 पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

// ॐ ह्रीं मोहिते आकर्षय नमः स्वाहा //

नित्य पुष्पों को एकत्र कर किसी मन्दिर में चढ़ा दें। तीसरे दिन पुष्पों के साथ ही 'आकर्षिणी' को मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 60/-

29. यदि साधक भवन खरीदता है, वह भवन को खरीदने की सारी औपचारिकताएं भी सम्पूर्ण कर लेता है, फिर भी

महालक्ष्मी महाकल्प के ये 108 प्रयोग जीवन की दैनिक कामनाओं, इच्छाओं, बाधाओं से सम्बन्धित हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि श्रेष्ठ कार्य के लिए किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं पड़ती। इन 908 प्रयोगों को तथा इस अंक को संभाल कर रखें तथा पूरे वर्ष में जब भी जीवन से सम्बन्धित कोई बाधा परेशानी आये तो अपनी आवश्यकता अनुसार ये साधनाएं सम्पन्न कर सकते हैं। लेकिन देयान रहे कि एक ही सामग्री का दो बार उपयोग नहीं हो सकता है। गुरु कृपा से लक्ष्मी आशीर्वाद से आपके सारे कार्य सम्पन्न हों, यहीं दीपावली की शुभकामना है।

किसी न किसी कारण से वह भवन खरीद नहीं पाता है, तो साधक 'वसुधा लक्ष्मी यंत्र' को लाल रंग के वस्त्र पर स्थापित कर यंत्र का पूजन करें, धी के तीन दीपक लगा दें तथा निम्न मंत्र का जप 21 बार कर यंत्र पर एक बिन्दी लगा दें। इस प्रकार यह क्रम तीन बार दोहराएं जब तीन बिन्दी लग जाएं, तो व्यक्ति जिस भवन को खरीदना चाहता है वहां पर यंत्र पर लगा कुंकुम गिरा दें -

// ॐ ह्रीं वसुधालक्ष्म्यै नमः //

प्रयोग के बाद यंत्र नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-

30. यदि भूमि खरीदी हुई है, लेकिन उस पर भवन निर्माण का कार्य हो पाना असम्भव लग रहा है, तो साधक भूमि के मध्य में 'वसुधा लक्ष्मी यंत्र' को एक हाथ भर गढ़ा खोदकर अपने हाथों से दीपावली के दिन स्थापित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-

31. यदि भवन आधा बन कर रुका हुआ है, तो साधक किसी पात्र में 'वसुमती' स्थापित कर उस पर जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप 101 बार करके, जल भवन में छिड़क दें -

// ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कार्य सिद्धिं ॐ नमः //

यह प्रयोग 9 दिन तक करें, नौ दिन बाद 'वसुमती' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

32. समाज में जो व्यक्ति उन्नति की ओर अग्रसर होता है, धीरे-धीरे उसके शत्रु बढ़ते ही जाते हैं, कुछ तो स्वार्थवश होते हैं, कुछ ईर्ष्याग्रस्त होते हैं, ऐसे शत्रुओं को निष्प्रभावी करने के लिए 'धूमाग्र' को किसी पात्र में स्थापित कर उसका पूजन करें, धूमाग्र के समक्ष निम्न मंत्र का 31 बार जप करें -

// ॐ हूं हूं शत्रुस्तंभनं ठः ठः स्वाहा //

जप समाप्त कर धूमाग्र को लाल वस्त्र में बांध कर रख दें, यह प्रयोग सात दिन तक करें। सात दिन के बाद धूमाग्र को लाल वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 96/-

33. शत्रु मुकदमों को बढ़ाता ही जा रहा है और पिछले कई वर्षों से चले आ रहे मुकदमों का निर्णय होना निश्चित नहीं लग रहा है, तो 'धूमाग्र' पर काजल से अपने शत्रु विशेष या समस्त शत्रु लिखकर निम्न मंत्र का उच्चारण ज्यारह बार पांच दिन तक नित्य करें -

// ॐ हूं शत्रून् वश्य विजय सिद्धिं ॐ फट //

पांच दिन के बाद धूमाग्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 96/-

34. आपके कार्यों का निरन्तर विरोध हो रहा हो और आपको समझ में नहीं आ रहा है, कि यह विरोधी कौन है तो यह प्रयोग सम्पन्न करें। किसी थाली में कोयले का चूरा कर बिछा दें, उस पर 'कालिका' स्थापित करें, कालिका का पूजन सिन्दूर तथा लाल पुष्प से करें, निम्न मंत्र का 51 बार जप करें-

//ॐ वत्तर्णं कालिश्च शत्रुशमनं कुरु कुरु फट//

यह प्रयोग 3 दिन करें, 3 दिन के बाद 'कालिका' को निर्जन स्थान में फेंक दें।

साधना सामग्री - 83/-

35. दीपावली के दिन 'भ्रमराम्बा' को लाल पुष्प के ऊपर स्थापित करें, भ्रमराम्बा का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें, भ्रमराम्बा पर कुंकुम से रंगे हुए चावल मिलाकर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 65 बार जप करें -

//ॐ नमो भगवते पुत्र सुखं साधय कुरु कुरु नमः//

यह प्रयोग ज्यारह दिन तक करें, ज्यारह दिन के बाद भ्रमराम्बा को नदी में प्रवाहित कर दें। सन्तान सुख प्राप्त होता है।

साधना सामग्री - 175/-

36. पुत्र की प्राप्ति के लिए साधक 'सिद्धि गुटिका' को लेकर पत्नी के नाम के संकल्पित कर, पत्नी को धारण करा दें तथा नित्य स्वयं तथा आपकी पत्नी निम्न मंत्र का जप 51-51 बार करें -

//ॐ श्रीं सौभाग्य वृद्धिं कुरु कुरु ॐ नमः//

21 दिन के बाद सिद्धि गुटिका नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 100/-

37. यदि सन्तान अनियंत्रित हो, तो 'सिद्धि गुटिका' के निम्न मंत्र का 75 बार जप कर सन्तान की फोटो के साथ बांध कर रख दें -

//ॐ ह्रीं ज्वालामालिनि पुत्रं वशय आकर्षण ॐ नमः//

यह प्रयोग दीपावली के दिन करें। 21 दिन के बाद पुनः एक बार 75 बार जप कर लें। उसके पश्चात् सिद्धि गुटिका नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 100/-

38. यदि आप सौन्दर्यवान बनना चाहते हैं, तो रूप चतुर्दशी के दिन 'सौन्दर्या' को किसी पात्र में स्थापित कर उस पर जल चढ़ाते हुए, निम्न मंत्र का 15 मिनट तक जप करें, तथा उस

जल को अपने ऊपर छिड़क लें -

//ॐ श्रीं कृष्ण सौन्दर्य सिद्धिं ॐ नमः//

इस प्रकार यह प्रयोग 9 दिन तक करें, 9 दिन बाद गुटिका नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

39. प्रत्येक स्त्री का स्वप्न होता है, कि वह सौन्दर्य युक्त बनी रहे, लेकिन इस प्रदूषण युक्त, तनाव युक्त वातावरण में यह सम्भव नहीं हो पाता, लेकिन इस प्रयोग के माध्यम से स्त्री अपने सौन्दर्य को बनाकर रखने में समर्थ हो सकती है। 'अप्सरा सौन्दर्य प्राप्ति गुटिका' को अपने दाहिने हाथ में लेकर दाहिने हाथ सीधा रखें, गुटिका पर दृष्टिपात करते हुए निम्न मंत्र का 61 बार जप करें -

//ॐ ह्रीं सः सूर्याय सौन्दर्य देहि स्वाहा//

यह प्रयोग सात दिन तक करें, सात दिन के बाद अप्सरा सौन्दर्य गुटिका को जल में प्रवाहित कर दें। यह प्रयोग करते समय एक समय भोजन करें।

साधना सामग्री - 100/-

40. पूरे शरीर को निश्चित अनुपात में ढालने के लिए यह प्रयोग करें। 'इन्द्रेश' को दीपावली के दिन धारण कर लें तथा नित्य निम्न मंत्र का वज्रासन में बैठकर 101 बार जप करें -

//ॐ ह्रीं अमृते अमृत कल्पं साधय ॐ फट//

यह प्रयोग ज्यारह दिन तक करें, ज्यारह दिन के बाद इन्द्रेश को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

41. कमल के बीज से निम्न मंत्र का जप करते हुए धी के साथ 101 आहुतियां देने से साधक की प्रत्येक कामना पूर्ण होती है।

//ॐ वत्तर्णं चामुण्डे मन्त्रोवांछित कुरु कुरु फट//

कमलगद्वा माला - 150/-

42. किसी पात्र में 'विधात्री' स्थापित कर उसका पूजन करें, विधात्री पर तिल तथा जौ चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप 75 बार करने से विशेष कामना की पूर्ति होती है -

//ॐ कं कामदेवाय मन्त्रोवांछित साधय ॐ फट//

यह प्रयोग तीन दिन तक करें। तीन दिन के बाद विधात्री को नदी में प्रवाहित कर दें, तिल तथा जौ एकत्र कर दान में दें।

साधना सामग्री - 60/-

43. विभवासु को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर किसी वृक्ष

मैं लटका देने से स्वयं के ऊपर आई विपत्तियां समाप्त होती हैं।

साधना सामग्री - 175/-

44. 'सामुधा' की दीपावली के दिन अपने सिर पर से निम्न मंत्र का जप करते हुए ज्यारह बार घुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक देने से रोगों से मुक्ति मिलती है।

//ॐ कल्र्णि अरापदुद्धरणाय फट ॥

साधना सामग्री - 45/-

45. ग्रह बाधा के कारण जीवन में सफलता नहीं मिल पा रही है तो 'सौशिल्य' को किसी पात्र में स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजन करें, निम्न मंत्र का जप 51 बार करें -

//ॐ जूँ सः ग्रह बाधा निवारणाय फट ॥

यह प्रयोग सात दिन तक करें, सात दिन के बाद 'सौशिल्य' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 70/-

46. शनि, राहु, मंगल ग्रह विपरीत प्रभाव दिखाने वाले हैं, तो साधक को चाहिए किसी पात्र में चावल भरकर उसमें 'सौशिल्य' स्थापित कर दें, सौशिल्य का पूजन अष्टगंध, लाल पुष्प से करें, जिस ग्रह विशेष के लिए प्रयोग कर रहे हैं, उसकी शांति के लिए संकल्प लें - 'मैं (ग्रह का नाम) की शांति के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।' निम्न मंत्र का 75 बार जप करें -

// ॐ शं ग्रह दोष न्तरशय फट ॥

यह प्रयोग 11 दिन तक करें, ज्यारह दिन के बाद सौशिल्य को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 70/-

47. मानसिक तनाव को दूर करने के लिए 'शुद्धक' को धारण कर लें, नित्य प्रातः 6 से 6.30 तक ध्यान लगाएं, मानसिक तनाव तो समाप्त होगा ही, साथ ही समस्याओं का हल भी मिलेगा। सवा महीने बाद शुद्धक को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 50/-

48. जो अध्यात्म की उच्चता को धारण करना चाहता है और निरन्तर इसी प्रयास में संलग्न है, तो उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए। सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर उस पर 'क्रिया योग्या' स्थापित करें, इसका पूजन कर धी का दीपक लगा दें, दीपक की लौ पर त्राटक करते हुए निम्न मंत्र का जप आधे घण्टे तक करें -

//ॐ ह्रीं श्रीं एं क्रियायोग स्तिर्द्वं ॐ नमः ॥

यह प्रयोग ज्यारह दिन तक करें, ज्यारह दिन के बाद क्रिया योग्या को नदी में प्रवाहित कर दें, दीपक की लौ पर नित्य त्राटक कर मंत्र जप करते रहें।

साधना सामग्री - 45/-

49. 'अमृतस्यन्दिनी' को दीपावली के दिन अपने पूजन स्थान में स्थापित कर, नित्य उस पर त्राटक करते हुए गुरु मंत्र का जप करने से साधक का कल्याण होता है। तीन महीने बाद अमृतस्यन्दिनी नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

50. 'रतिम्भरा यंत्र' को पूजन स्थान में रखने मात्र से ही साधक के घर में बुद्धि, विद्या, श्री का वास होता है। यंत्र स्थापन के तीन माह के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

51. लाल रंग के वस्त्र पर 'सर्वाभिलाषा पूर्णेषु यंत्र' को स्थापित कर यंत्र का पूजन सुगंधित द्रव्य तथा पुष्प से करें, सुगंधित अगरबत्ती लगाकर निम्न मंत्र का जप 11 दिन तक नित्य 21 बार करने से साधक का यौवन, सौन्दर्य, उमंग उत्साह की प्राप्ति होती है।

//ॐ ह्रीं सः स्टैन्डर्ड्यै सः ह्रीं ॐ ॥

साधना सामग्री - 150/-

52. किसी पात्र में अष्टगंध से षट्कोण बनाकर 'सर्वाभिलाषा पूर्णेषु यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र का पूजन करें, यंत्र पर दृष्टि एकाग्र करते हुए निम्न मंत्र का जप 65 बार करें -

//ॐ कल्र्णि विवाह स्तिर्द्वं ॐ एं फट ॥

विवाह योग्य कन्या का शीघ्र विवाह होगा। यह प्रयोग पांच दिन का है, प्रयोग के समय कन्या का फोटो भी सामने रखें। प्रयोग समाप्त कर यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

53. सफेद वस्त्र पर 'सहस्राणी' स्थापित कर, उसका पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करने से स्त्री सौभाग्यशाली होती है। सहस्राणी के समक्ष मात्र 11 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

//ॐ श्रीं श्रीं सौभाग्यं स्तिर्द्वये ॐ नमः ॥

सवा माह के पश्चात् सहस्राणी को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

54. 'सुख सौभाग्य यंत्र' को बायें हाथ में लेकर उसे दाहिने हाथ से ढकते हुए निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करने से स्त्री अनेकानेक गुणों से युक्त होती है -

॥३५ एं आं सुगुणं आं एं फट् ॥

यह प्रयोग 11 दिन का है। ज्यारह दिन के बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

55. 'कमल गड्ढे की माला' से निम्न मंत्र का एक माला जप दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके करें, अष्टगंध का तिलक लगाएं, फिर वह साधक अपने आस-पास रहने वाले लोगों को सम्मोहित सा कर लेता है। यह प्रयोग पांच दिन तक करें-

॥३५ सं सर्वं सम्मोहनाय फट् ॥

पांच दिन बाद माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

56. यदि पत्नी अत्यधिक कलहकारिणी हो गई हो तथा वश में न आये, तो साधक धनत्रयोदशी को पांच तेल के दीपक अपने चारों ओर लगा दें तथा मध्य में स्वयं खड़ा होकर निम्न मंत्र का 'कमलगड्ढे की माला' से 5 माला मंत्र जप करें-

॥३५ वर्तीं हूं स्त्रीं फट् ॥

स्त्री का स्वभाव परिवर्तित होता है तथा वह अपने पति के अनुसार चलती है, मंत्र जप कर माला तोड़कर उसके दाने घर के बाहर चारों दिशाओं में फेंक दें।

साधना सामग्री - 150/-

57. यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक विपरीत बोलने लगा हो तथा समझाने पर भी नियंत्रण में न आये, तो आक के पत्ते पर हल्दी से उस व्यक्ति का नाम लिख, निम्न मंत्र का जप 'काली हकीक माला' से 7 माला कर, पत्ते सहित माला को किसी भी वृक्ष की जड़ में ढबा दें। व्यक्ति आपके विरुद्ध फिर नहीं बोलेगा।

॥३५ हौं भ्रीं हूं फट् ॥

साधना सामग्री - 150/-

58. यदि पति पत्नी से विमुख हो रहा है और उसका ध्यान घर से कहीं और लग रहा है, तो स्त्री निम्न जप करते हुए भोजन करें, पति का पुनः पत्नी की ओर आकर्षण होगा।

॥३५ हौं ठः ठः हौं ॐ ॥

59. जिस व्यक्ति को क्रोध अत्यधिक आता है, उसका क्रोध नियंत्रित करने के लिए एक कागज पर अष्टगंध से उस व्यक्ति का नाम लिखें। उस कागज को गाय के दूध में ढबा दें, 'त्रिगुणा माला' से निम्न मंत्र का पांच माला जप करें। यह से निम्न मंत्र की ज्यारह माला मंत्र जप करें।



॥३५ वर्तीं एं वर्तीं फट् ॥

पांचवे दिन माला को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 120/-

60. पुत्र या पुत्री के असंयमित आचरण के कारण यदि बदनामी हो रही है, तो उनका उन कारणों से उच्छाटन करने के लिए निम्न प्रयोग सम्पन्न करें -

काले रंग के वस्त्र में 'जयन्ती माला' रखकर सिन्दूर से पोत कर 5 कीले तथा 1 कोयला रखकर मौली से बांध दें। पोटली को अपने हाथ में लेकर निम्न मंत्र का 60 बार जप करें

॥३५ वर्तीं एं सौः हौं स्वहा॥

प्रयोग के पश्चात् इसे किसी भी वृक्ष की जड़ में ढबा दें, ऐसा करने से पुत्र/पुत्री को अपनी नासमझी का एहसास होगा और वह स्वयं को नियंत्रित कर लेंगे।

साधना सामग्री - 160/-

61. चार अंगुल की नीम की लकड़ी लेकर उससे शत्रु का नाम किसी कागज पर लिखें, उस कागज पर लकड़ी रख दें, तथा उस पर ही एक तेल का दीपक रख दें। 'जयन्ती माला' से निम्न मंत्र की ज्यारह माला मंत्र जप करें।

॥३० क्रीं वत्तीं शत्रुशमनं वलीं क्रीं फट् ॥

यह प्रयोग तीन दिन तक करें, दीपक को न बदलें अपितु उसमें ही तेल डालकर जला दें। शत्रु कितना भी हावी हो रहा हो, एकदम से शांत हो जायेगा। यह अत्यन्त तीव्र प्रयोग है। तीसरे दिन अग्नि प्रज्ज्वलित कर माला को तोड़कर प्रत्येक मनके को धी में डुबोते हुए निम्न मंत्र जप करें, अंतिम आहुति में कागज तथा लकड़ी भी डाल दें।

साधना सामग्री - 210/-

62. निम्न मंत्र को अष्टगंध से सफेद रंग के वस्त्र पर लिख दें उस वस्त्र पर अपना बायां हाथ रखते हुए दाहिने हाथ से 'लक्ष्मी माला' से एक माला निम्न मंत्र जप करें। यह प्रयोग सात दिन तक करें। सातवें दिन वस्त्र में धन रखने के स्थान पर रख दें तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दें। अनवरत धन प्राप्ति का स्रोत प्राप्त होगा।

॥३० ह्रीं अक्षयं धनमानव फट् ॥

साधना सामग्री - 210/-

63. चौड़े मुँह के मिट्ठी के पात्र में पान, तुलसी, दूब, बिल्ब पत्र, धी, चीनी, दूध डालकर तथा उसमें 'लक्ष्मी यंत्र' रखकर सफेद कपड़े से उसका मुँह बांध दें, उस पात्र का पूजन कर निम्न मंत्र का जप 75 बार करें।

॥३० वत्तीं वलीं ह्रीं फट् ॥

खेत में एक हाथ गङ्गा खोद कर दबा देने से खेत की उपद्रवी जीवों से रक्षा में सहायता मिलती है।

साधना सामग्री - 210/-

64. किसी कागज पर लाल चंदन से गणपति बनाकर उस पर 'लक्ष्मी यंत्र' रखकर लाल पुष्प चढ़ायें, तेल का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का 65 बार जप करें।

॥३० ह्रीं विचित्रे कामं पूरव उ३० ॥

व्यक्ति की कामना पूर्ण होती है। यह प्रयोग पांच दिन का है। पांचवें दिन यंत्र को उसी कागज में लाल धागे से बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

65. कुबेर के समान धन-धान्य प्राप्ति के लिए साधक 'इन्द्राक्षी यंत्र' को स्थापित कर उसका सुगंधित द्रव्य से पूजन कर निम्न मंत्र का जप 75 बार करें।

॥३० ह्रीं श्रीं नमो भगवते धनं देहि देहि उ३० ॥

यह प्रयोग ग्यारह दिन तक नियमित रूप से करें, ग्यारह

दिन के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

66. किसी पात्र में कुंकुम से घोड़शदल कमल बनाकर उसमें 'अष्टलक्ष्मी यंत्र' स्थापित करें, अग्नि प्रज्ज्वलित कर 101 बिलवपत्र को धी के साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आहुति दे, तो स्त्री पुत्रवती होती है।

॥३० ह्रीं फ्रे सः सः उ३० ॥

प्रयोग समाप्त कर यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-

67. सर्वत्र विजय प्राप्त करने के लिए 'कीर्तिजया यंत्र' को किसी पात्र में स्थापित कर यंत्र का पूजन करें। उस पर सफेद पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करें।

॥३० एं क्रों सर्व विजयाय उ३० ॥

मंत्र जप के बाद समस्त पुष्प एकत्रित कर वृक्ष की जड़ में डाल दें। यह प्रयोग सात दिन तक करें, सात दिन के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

68. 'महानारायणी यंत्र' को किसी पात्र में रखकर उसका पूजन करें, यंत्र को जल में डुबो दें तथा मध्यमा अंगुली से 21 बार जल में निम्न मंत्र लिखें, उस जल से सन्तान को स्नान करवाएं सन्तान को नजर नहीं लगेगी। यह प्रयोग 9 दिन तक करें।

॥३० श्रीं महाभिषेंक ह्रीं उ३० ॥

नौ दिन बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

69. साधक चौखट पर बैठ अपने बाएं हाथ में 'महानारायणी यंत्र' को लेकर, किसी पात्र में यंत्र पर निरन्तर दूध चढ़ायें और निम्न मंत्र का 35 बार जप करें, तो साधक की आयुवृद्धि होती है।

॥३० एं दीर्घयुष्यं सिद्धये उ३० नमः ॥

यह प्रयोग मात्र तीन दिन करें। तीन दिनों के बाद यंत्र नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

70. 'बीसा मुद्रिका' को खेत के मध्य में रखकर उसके चारों ओर चार दीपक लगा दें, मुद्रिका का पूजन कर निम्न मंत्र का 101 बार जप करते हुए अक्षत चढ़ाते जाएं-

॥३० ह्रीं श्रीं वत्तीं अद्भूर्णे स्वरहा ॥

मंत्र जप समाप्त कर मुद्रिका को वहीं पर गङ्गा खोदकर दबा दें। खेत के चारों ओर मंत्र पढ़ते हुए अक्षत अपने पीछे फेंकते चलें। जब पूरी परिक्रमा हो जाय तो खेत को प्रणाम कर घर वापस आ जाएं, फसल उत्तम होगी।

साधना सामग्री - 120/-

71. 'सर्वमंगला यंत्र' को स्थापित कर यंत्र का पूजन आक के पुष्प से करें, धी का दीपक लगा दें, अग्नि प्रज्ज्वलित कर निम्न मंत्र से खीर की 31 आहुतियां दें-

// ॐ कर्त्तरैं महाकालाय अभीष्ट सिद्धिं नमः //

साधक की अभीष्ट सिद्धि होती है। यह प्रयोग तीन दिन तक करें तीन दिन बाद यंत्र नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 96/-

72. 'सर्वमंगला यंत्र' को स्थापित कर, यंत्र का पूजन कर, निम्न मंत्र का 75 बार जप करने से व्यक्ति को ध्यानस्थ होने में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है -

// ॐ क्रीं ह्रीं हूं अरां ॐ //

यह प्रयोग 21 दिन का है, 21 दिन के बाद समस्त सामग्री नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 96/-

73. 'स्वास्थ्य लक्ष्मी यंत्र' का पूजन कर 51 लाल पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करने से साधक आरोग्य प्राप्त करता है तथा स्वयं के कायाकल्प का भी अनुभव करता है।

// ॐ ह्रीं आरोग्यं देहि देहि फट //

यह प्रयोग सात दिन करें, सात दिन के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

74. दीपावली के दिन 'महालक्ष्मी यंत्र' पर 51 'कमलगड़े के बीज' पुष्प के साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करने से साधक धन प्राप्त करता है।

// ॐ ह्रीं ह्रीं महालक्ष्मी आरच्छ नमः //

प्रयोग के पश्चात् महालक्ष्मी यंत्र तथा कमलगड़े के बीज नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 300/-

75. लाल वस्त्र पर 'जयंकारी' स्थापित कर पूजन करें। अग्नि प्रज्ज्वलित कर तिल को सरसों के तेल से सिक्त कर 101 आहुति निम्न मंत्र का जप करते हुए करने से साधक के समस्त शत्रु स्तम्भित होते हैं।

// ॐ कर्त्तरैं शत्रुस्तं भनाय फट //

अगले दिन जयंकारी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 45/-

76. सफेद वस्त्र पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर 'आदित्यवर्णा' स्थापित करें, यंत्र का पूजन करें, धी का दीपक प्रज्ज्वलित करें, आदित्यवर्णा के समक्ष सात दिन तक निम्न मंत्र का 61 बार जप करने से साधक स्वयं में शिव समान आनंद का अनुभव करता है।

// ॐ शं शिवमनुभवाय नमः //

प्रयोग समाप्त कर आदित्यवर्णा को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 75/-

77. यदि घर में निरन्तर रोग बना हुआ रहता हो, तो साधक दीपावली के एक दिन पूर्व रात्रि दस बजे यह प्रयोग सम्पन्न करें, किसी पात्र में 'महानीला' स्थापित कर महानीला का पूजन करें उस पर निम्न मंत्र का जप करते हुए जल चढ़ाएं -

// ॐ ठः ठः रोगनाशाय फट //

उस जल को पूरे घर में छिड़क दें। यह प्रयोग सात दिन तक करें, सात दिन के पश्चात् महानीला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

78. निम्न मंत्र का प्रत्येक शनिवार को भगवती लक्ष्मी देवी पर जल चढ़ाते हुए उच्चारण करने से कामना पूर्ण होती है।

// ॐ श्रीं ह्रीं कर्त्तरैं मनोवरांछितं ॐ फट //

79. दीपावली के दिन प्रातःकाल ही स्नानादि से निवृत होकर, सफेद वस्त्र पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर उस पर 'शर्वाणी' स्थापित करें, उसका पूजन सिन्दूर तथा पुष्प से कर तेल का दीपक लगा दें तथा निम्न मंत्र का जप 65 बार करने से साधक जिसभी आजीविका से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर, अपनाना चाहता है, उसका मार्ग मिलता है।

// ॐ क्रीं ह्रीं ज्ञानं सिद्धिं ॐ फट स्वाहा //

यह प्रयोग पांच दिन का है। पांच दिन के बाद शर्वाणी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

80. किसी पात्र में 'शर्वाणी' स्थापित करें, शर्वाणी का पूजन सिन्दूर, अक्षत तथा पुष्प से करें, तिल का भोग लगाएं। शर्वाणी के समक्ष निम्न मंत्र का 65 बार जप करने से दुर्घटना

का भय समाप्त होता है -

॥३५ क्रीं कालिके हूं फट स्वरहा॥

यह प्रयोग सात दिन का है। सात दिन के बाद शर्वाणी को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

81. 'वारुणी' को एक पात्र में स्थापित करें, सामने तीन तिल के तेल के दीप प्रज्ज्वलित करें, प्रत्येक दीप का पूजन करें, उसके पश्चात् वारुणी का पूजन कर निम्न मंत्र का जप 65 बार करने से व्यक्ति रोजगार प्राप्त करता है।

॥३६ हूं हूं महाकाल प्रसीद प्रसीद ॐ फट॥

यह प्रयोग सात दिन का है। सात दिन के बाद वारुणी को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 65/-

82. वट वृक्ष के पांच पत्ते लेकर उनको एक के ऊपर एक कर रख दें, उस पर 'शक्ति खड़ग' को स्थापित कर लाल कनेर के पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 21 बार जप करने से साधक या साधिका इच्छित लड़का या लड़की से विवाह करता है -

॥३७ ऐं अभीष्ट सिद्धिं विवाह वाधा निवारणाय फट॥

यह प्रयोग पांच दिन तक करें, पांच दिन के बाद शक्ति खड़ग को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 75/-

83. सफेद रंग के वस्त्र पर चावल की ढेरी बनाकर 'शक्ति खड़ग' को स्थापित कर निम्न मंत्र का 75 बार जप करने से साधक दीर्घायु प्राप्त करता है।

॥३८ श्रीं ॐ दीर्घायुष्यं ॐ नमः॥

अगले दिन शक्ति खड़ग को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 75/-

84. दीपावली के दिन सूर्योदय के समय सूर्य के समक्ष खड़े होकर अपने हाथ में 'त्रैलोक्य भूषणा' लेकर दोनों हाथ ऊपर कर निम्न मंत्र का जप बीस मिनट तक करें, जप समाप्त करके त्रैलोक्य भूषणा को पूजन स्थान में रख दें, भाग्योदय होगा। होली पर त्रैलोक्य भूषणा को होलिका में विसर्जित कर दें।

॥३९ हरीं भाग्योदयं कुरु कुरु रुद्राय फट॥

साधना सामग्री - 121/-

85. 'अन्नपूर्णा यंत्र' को किसी पात्र में अक्षत भर कर स्थापित कर दें, अन्नपूर्णा यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा

पुष्प से करें, तीन बत्तियों का धी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करने से अन्नादि के व्यापार में वृद्धि होती है।

॥४० हरीं अरज्ञपूर्णे व्यापार वृद्धिं कुरु कुरु ॐ फट॥

यह प्रयोग ज्यारह दिन का है। ज्यारह दिन के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-

86. सफेद रंग के वस्त्र पर अष्टदल कमल अष्टगंध से बनाएं उसके ऊपर 'कमला यंत्र' स्थापित कर यंत्र का पूजन कमल के पुष्प से करें, आठे के पांच दीपक प्रज्ज्वलित कर उपरोक्त मंत्र का उच्चारण 31 बार करें -

॥ ४१ इं हरीं नित्य विलङ्घे ॐ फट॥

यह प्रयोग 9 दिन तक करें, दुकान की बिक्री में वृद्धि होगी। 9 दिन के बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

87. अशोक के सात पत्ते लाकर क्रम से रख दें, सातों के ऊपर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक इलाचयी स्थापित करें, उसके आगे 'कमला यंत्र' स्थापित कर प्रत्येक इलाचयी पर कुंकुम चढ़ायें। निम्न मंत्र का 65 बार जप करें -

॥४२ अरों क्रों व्यापार वृद्धिं नमः॥

वस्त्र से सम्बन्धित व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होगा यह प्रयोग आठ दिन तक करें, आठवें दिन यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

88. उड़द की दाल को किसी पात्र में भरके उस पर 'शंखिनी' स्थापित करें, शंखिनी पर गुडहल का पुष्प चढ़ाएं, सुगन्धित अगरबत्ती लगा दें। निम्न मंत्र का 51 बार जप करें-

॥४३ ऐं कर्तीं त्रिपुरे व्यापार वृद्धिं साधय ॐ फट॥

सौन्दर्य प्रसाधन से सम्बन्धित व्यापार में धन लाभ होगा। यह प्रयोग 7 दिन तक करें, सातवें दिन शंखिनी को दाल सहित किसी नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 115/-

89. पांच तेल के दीपक गोलाई में रखकर, मध्य में महोत्कट स्थापित करें, महोत्कट का पूजन पुष्प, अक्षत से करें। निम्न मंत्र का 61 बार मंत्र जप करें -

॥ ४४ हरों हरीं व्यापार वृद्धिं ॐ॥

मशीन से सम्बन्धित व्यापारियों के लिए यह ब्रिकी वर्जक

प्रयोग है। यह प्रयोग पांच दिन तक करें, पांचवें दिन महोत्कट को किसी वृक्ष की जड़ में दबा दें।

साधना सामग्री - 121/-

90. पृथ्वी पर आठे से चतुर्दश कमल का निर्माण कर उसके ऊपर अक्षत रखकर 'भू-वसना' स्थापित करें, भू-वसना का पूजन कर, निम्न मंत्र का 51 बार जप करें।

//ॐ हरे हरे भूदेवाय एं एं ॐ //

यह प्रयोग सात दिन तक करें, बाद में भू-वसना को नदी में प्रवाहित कर दें, भूमि सम्बन्धी व्यापार में लक्ष्मी की वृद्धि होगी।

साधना सामग्री - 150/-

91. 'कात्यायनी यंत्र' को सफेद रंग के वस्त्र में बांधकर निम्न मंत्र का 61 बार उच्चारण कर, किसी निर्जन स्थान में फेंक दें या नदी में प्रवाहित करें -

//ॐ श्रीं सौभाग्यं सुमंगलाय फट //

कैसी भी विपरीत परिस्थितयां हो व्यक्ति को अनुकलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री - 150/-

92. किसी पात्र में 'कात्यायनी यंत्र' को स्थापित कर यंत्र का पूजन सिन्दूर से कर, पांच तेल के दीपक लगा दें, यंत्र पर 21 पीले पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

//ॐ श्रीं श्रूं सरों सम्मोहनाय फट //

इस प्रयोग को 7 दिन तक करें। व्यक्ति में सम्मोहन की क्षमता की वृद्धि होती है। सात दिन बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें। नित्य पांच बार उपरोक्त मंत्र का जप कर लें।

साधना सामग्री - 150/-

93. घर में क्लेश अधिक बढ़ गया हो, पुत्रों के मध्य तनाव हो, कि वे एक-दूसरे का मुख देखना न पसन्द कर रहे हो तथा धन के लोभ में नित नये कुचक्क रच रहे हों, तो घर का मुखिया या कोई भी सदस्य यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे घर में सुख-सौहार्द का वातावरण बन सके।

किसी पात्र में पुष्प का आसन बनाकर नारसिंही को स्थापित कर, पूजन करें, अक्षत के वे दाने जो टूटे न हो को 101 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए नारसिंही पर चढ़ायें-

//ॐ कल्पैं श्रं वं ॐ फट //

यह प्रयोग 5 दिन तक करें। पांचवें दिन समस्त चावल तथा नारसिंही को किसी वट वृक्ष के नीचे गहना खोद कर दबा दें।

साधना सामग्री - 60/-

ॐ 'अक्टूबर' 2005 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '59' ३



94. सफेद रंग के वस्त्र पर किसी पात्र में अष्टगांध से निम्न मंत्र लिखकर 'स्वस्था' स्थापित करें, स्वस्था का पूजन करें। इसके पश्चात् दूध, दही, धी और मधु मिलाकर स्वस्था पर चढ़ाते हुए 75 बार निम्न मंत्र का जप करें -

//ॐ हरैं आरोग्यं सिद्धिं शिवाय नमः //

व्यक्ति के घर में आरोग्यता का निवास होगा। यह प्रयोग तीन दिन तक करें, तीन दिन के बाद स्वस्था को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 45/-

95. किसी पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर उसमें 'शिवा' स्थापित करें, शिवा का पूजन करें, अग्नि प्रज्ज्वलित कर उसमें राई तथा नमक से निम्न मंत्र की 31 बार आहुतियां दें। समस्त शत्रु तेजहीन, निर्बल हो जायेंगे तथा आपके मार्ग में रोड़े नहीं बन सकेंगे -

// ॐ हस्तकल हरैं रुद्राय शत्रुनाशाय फट //

यह प्रयोग पांच दिन तक करें। पांच दिन के पश्चात् शिवा तथा समस्त भस्म एकत्र कर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 88/-

96. लाल रंग के वस्त्र पर पुष्प का आसन रखकर भवमालिनी का स्थापित करें, फिर 101 कमल के बीज निम्न

मंत्र उच्चरित करते हुए चढ़ाने से घर में लक्ष्मी का स्थाई स्रोत सिन्दूर तथा पुष्प से करें, इसी प्रकार सभी देवियों का पूजन बनता है। यह प्रयोग दीपावली के दिन सम्पन्न करें।

//उ० श्रीं हौं लक्ष्मी अरबद्धं सिद्धये नमः //

प्रयोग समाप्ति पर समस्त सामग्री को बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें तथा मंत्र का प्रातः 11 बार उच्चारण कर लें।

साधना सामग्री - 150/-

97. घोषवर्जिता को लाल रंग के वस्त्र में अपने व्यापार स्थल पर रख दें तथा 21 दिन तक नित्य निम्न मंत्र का 65 बार जप करें -

//उ० हं कं लं व्यापार वृद्धिं फट //

घोषवर्जिता को उसी वस्त्र में बांधकर 22 वें दिन नदी में प्रवाहित कर दें तो व्यापार में बढ़ोत्तरी होगी।

साधना सामग्री - 75/-

98. किसी पात्र में जल लेकर उसको देखते हुए निम्न मंत्र का 21 बार जप कर उस जल को पूरे घर में छिड़क दें, यह प्रयोग नित्य करने से घर में छोटी-मोटी बाधाएं तो समाप्त होगी ही, साथ ही वातावरण प्रसन्नतादायक बना रहेगा।

//उ० खं खर्दं बाधा निवारणाय फट //

99. जो व्यक्ति पशुपालन करते हैं, वे पशुओं की रक्षा को लेकर हर क्षण चिन्तित रहते हैं, कि न जाने किस बिमारी से वे बेजान जीव ग्रसित हो जाएं। उनकी सुरक्षा के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें। जिस स्थान में पशु रहते हैं उस स्थान के उत्तर दिशा की ओर सूर्यों के सामने 51 बाद निम्न मंत्र का उच्चारण कर दबा दें -

//उ० हौं पशुपतये रोगनाशाय फट //

नित्य इसी मंत्र का 51 बार उच्चारण करते हुए अगरबत्ती उसी स्थल पर लगा दें। पशु स्वस्थ बने रहेंगे।

साधना सामग्री - 45/-

100. घोषवर्जिता को किसी पात्र में स्थापित कर, घोषवर्जिता का पूजन, कुंकुम, अक्षत, पुष्प से कर धी का दीपक लगा दें, निम्न मंत्र का जप 51 बार ज्यारह दिन तक करें -

//उ० हौं आकस्मिकं धनं देहि देहि उ० //

ज्यारह दिन कि बाद घोषवर्जिता को नदी में प्रवाहित कर दें, साधक आकस्मिक धन प्राप्ति के स्रोत प्राप्त करता है।

साधना सामग्री - 75/-

101. चावल के ज्यारह देवियां बना लें प्रत्येक पर एक सुपारी रखें, मध्य नृसिंहों स्थापित करें, नृसिंहों का पूजन

करें। पांच बत्तियों का दीपक लगाएं। निम्न मंत्र का जप 101 बार करें, यह प्रयोग ज्यारह दिन तक करें -

//उ० उरं हौं क्रों महानृसिंहाय फट //

साधक का व्यक्तित्व प्रचण्ड, तेजस्वी होगी। ज्यारह दिन बाद समस्त सामग्री को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 111/-

102. किसी पात्र में काजल से दो आंखें बनाएं, उस पर महाचण्ड को स्थापित करें, उस पर कुंकुम से अपने शनु का नाम लिखें, फिर क्रोध मुद्रा में निम्न मंत्र का 75 बार जप करते हुए महाचण्ड पर काली सरसों के दाने फेंके -

//उ० ऐं क्लौं शत्रुशमनं उ० //

मंत्र जप समाप्त कर समस्त सरसों जला दें। यह प्रयोग आठ दिन तक करें। शनु मानसिक रूप से आपसे भयभीत होगा ही तथा दिनों - दिन वह अपने कर्मों का फल भोगता रहेगा। 8 दिन के बाद सामग्री को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 75/-

103. लाल रंग के वस्त्र पर अष्टगंध से त्रिभुज बनाकर उसके मध्य में वसुप्रदा को स्थापित करें, उसका पूजन करें, तेल का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का जप 51 बार करें -

//उ० श्रीं वास्तुदेवाय नमः //

साधक भूमि, भवन निर्माण आदि कार्य सफलता पूर्वक कर लेता है। यह प्रयोग 6 दिन का है, छः दिन के बाद वसुप्रदा को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

104. जो साधक विद्या, लक्ष्मी, यश प्राप्त करना चाहता है यह प्रयोग सम्पन्न करें। किसी पात्र में कुंकुम घोल दें, उसमें एक पुष्प रखकर उस पर वार्णीश्वर स्थापित करें, उसके समक्ष खड़े होकर निम्न मंत्र का 65 बार जप करें -

//उ० हां हंसः हौं हौं उ० स्वाहा //

यह प्रयोग तीन दिन तक करें। तीन दिन के पश्चात् वार्णीश्वर को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 80/-

105. जयाश्री को कुंकुम से रंगे हुए चावल पर स्थापित करें जयाश्री का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प चढ़ाकर करें। जयाश्री के समक्ष धी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का जप 51 बार करें -

॥ ॐ हौरी क्रीं धन्द्राग्नम् सरथ्य ॐ ॐ ॥

धन प्राप्ति के नये अवसर मिलेंगे। यह प्रयोग तीन दिन का है। तीसरे दिन जयाश्री को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 110/-

106. किसी पात्र में इन्द्राक्षी माला स्थापित कर इन्द्राक्षी माला का पूजन अष्टग्रांथ, पुष्प तथा अक्षत से कर, सुगंधित धूप लगायें। निम्न मंत्र का जप 35 बार नित्य नौ दिन तक करें -

॥ ॐ हौरी इदं देहि महेन्द्राय नमः ॥

साधक का व्यक्तित्व इन्द्र के समान प्रभावशाली होता है।

साधना सामग्री - 300/-

107. रतिप्रिया माला को किसी पात्र में स्थापित कर यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित कर धी तथा जीरे से निम्न मंत्र का 101 बार आहुति देने से जिस व्यक्ति का भी आकर्षण करें, तो वह साधक के अनुकूल होता है।

॥ ॐ सं संकर्षणाय रतिप्रियाय फट ॥

अगले दिन रतिप्रिया माला को किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 260/-

108. जो साधक समाज में निरन्तर अग्रणी बने रहना चाहते हैं, वे सिद्धिमाला से निम्न मंत्र का जप एक माला 21 दिन तक करें -

॥ ॐ एं फ्रैं हौं हूं फट ॥

21 दिन के बाद सिद्धिमाला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

दीपावली महाकल्प के ये 108 प्रयोग अचूक और अमोघ हैं, साधक अपने समय और सुविधा के अनुसार अनेकानेक प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, लेकिन एक दिन में चार से अधिक प्रयोग सम्पन्न नहीं करें। क्योंकि आप जो मंत्र उच्चारण करते हैं, उसकी तरणे वातावरण में गुंजरित होती है तथा देह को भी एक साधना का प्रभाव ग्रहण करने में समय लगता है।

अगवान महावीर स्वामी का नाम कौन नहीं जानता वै तैन सम्प्रदाय के चौबीस वै तीर्थकर थे और तैन धर्म के प्रथम तीर्थकर त्रैषभद्र थे। अगवान महावीर स्वामी का डठम ई. पू. ६०० में राजा निष्ठार्थ के घर जौ कि कुंड व्याम (बिहार) के राजा थे उनके घर हुआ था। अगवान महावीर स्वामी की माता का नाम त्रिशला था जौ कि दैशाली के राजा चैटक की बहन थी। वर्तमान में मुजफरपुर, बिहार स्थित बसड भाव में उस समय दैशाली नगर बना हुआ था।

अगवान महावीर स्वामी का डठम वैत्र शुक्लपक्ष त्रियोदशी के दिन हुआ था। अगवान महावीर स्वामी के विवाह के सम्बन्ध में श्वेताम्बर और दिन्म्बर मैं थोड़ा भत्तेदेह है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनुसार उन्होंने विवाह किया और उनके एक कन्या भी थी। लैकिन दिन्म्बर सम्प्रदाय के लौग इसी नहीं मानते हैं। अपनी माता-पिता के मृत्यु के बाद अगवान महावीर की जीवन से मौह अंग ही रहा और तीस वर्ष की आयु में उन्होंने राजपाट छोड़ कर तपस्या के लिये चले गये। वहां उन्होंने कठीर अनुशासन का पालन करते हुए साधना सम्पद्ध की और आत्मज्ञान, आत्मप्रकाश, कुण्डलिनी जागरण शक्ति प्राप्त की।

४२ वर्ष की उम्र में अर्थात् ९२ साल की निरन्तर तपस्या से उन्हें जौ ज्ञान प्राप्त हुआ, उस ज्ञान की पूर्ण आत्मसात करने के लिये ६६ दिन का मौन व्रत रखा और उसके बाद वह मरण की राजधानी आये तथा विपुलाचल पर्वत पर अपना आश्रम स्थापित किया, वहां पर उन्होंने अपना प्रथम शिष्य बनाया तिसका नाम इन्द्रभुती था। इन्द्रभुती स्वयं वैदिक ज्ञान का बड़ा ज्ञाता था। बाद में इन्द्रभुती की अगवान महावीर स्वामी का प्रथम वण्ठर कहा गया। अगवान महावीर स्वामी ने तीस वर्षों में पूरे मरण भारत में तैन धर्म का प्रचार किया और तैन धर्म की अपनी शुद्ध मान्यताओं के अनुसार स्थापित किया। कार्तिक अमावस्या की रात्रि की अगवान महावीर स्वामी ने ई.पू. ४२७ की बिहार स्थित पावापूरी में मौक्षकरण किया। अगवान महावीर स्वामी ने जौ पंचज्ञान प्रदान किया वह था

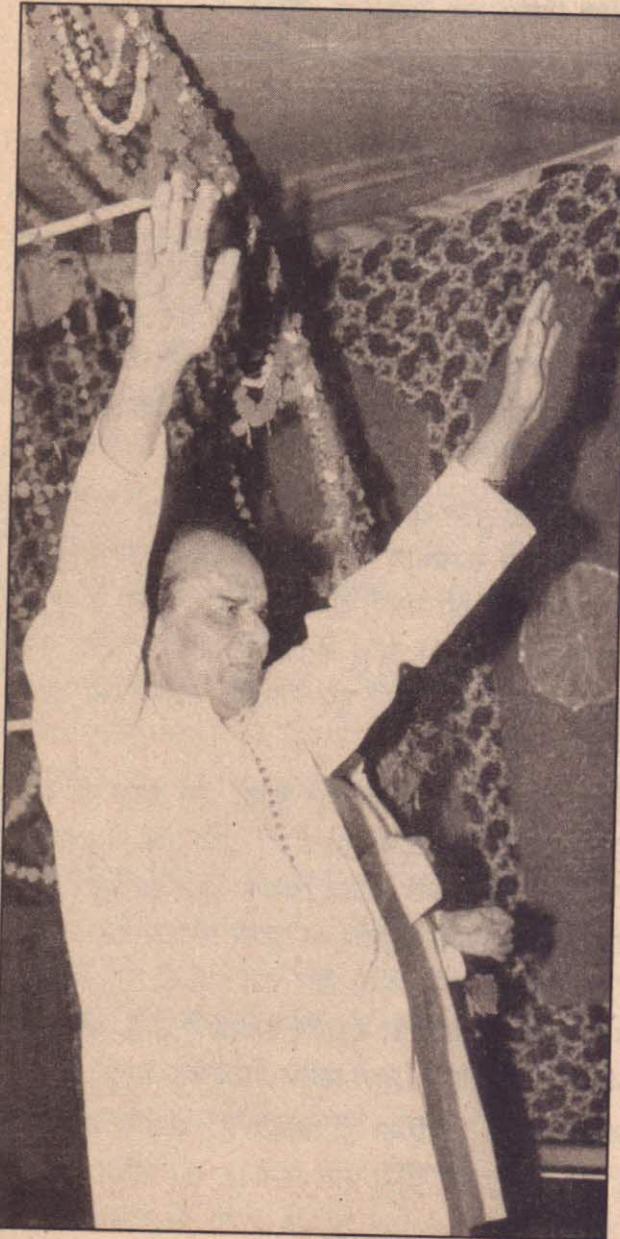
१. संदैव सत्य बीलें, २. धन का अधिक संब्रह मत करी, ३. अहिंसा ही जीवन है, संसार के किसी प्राणी की दुःखी मत करीं, ४. किसी दूसरे की कोई भी वस्तु की चौरी मत करी। ५. संदैव आत्म अनुशासन में, आत्म नियंत्रण में रहे।

रामाया

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहाँ प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अक्टूबर 23, 30) (नवम्बर 6, 13)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (अक्टूबर 17, 24, 31) (नवम्बर 7, 14)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (अक्टूबर 18, 25) (नवम्बर 1, 8, 15)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (अक्टूबर 19, 26) (नवम्बर 2, 9)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (अक्टूबर 20, 27) (नवम्बर 3, 10)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (अक्टूबर 21, 28) (नवम्बर 4, 11)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (अक्टूबर 22, 29) (नवम्बर 5, 12)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं कराह मिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपरिथित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तबावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो बराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका प्रत्येक दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

नवम्बर

1. दीपावली के दिन प्रातः काल ही भगवति लक्ष्मी को पांच कमल पुष्प अर्पित करते हुए पांच बार 'ॐ ऐं श्री हीं क्लीं' मंत्र का जप करें।
2. 'सुदर्शन' (न्यौछावर 60/-) को गुलाब के पुष्प से पूजन करें।
3. आज 16 माला गुरु मंत्र का जप करें।
4. प्रातः काल यज्ञाणि प्रज्ज्वलित कर 108 बार धी से आहूतियां, 'क्रीं कालिके स्वाहा' मंत्र जप से करें।
5. हनुमान जी की मूर्ति पर सिंदूर का लेपन कर बेसन से बनी मिठाई का भोग लगाएं।
6. 'श्री सूर्याय नमः' मंत्र का 21 बार जप कर भगवान सूर्य का अर्ध्य अर्पित करें।
7. प्रातः 5 बिल्वपत्र शिवलिंग पर चढ़ाते हुए 'ॐ क्रीं क्रीं महामृत्युंजाय क्रीं क्रीं ॐ फट्' का जप करें।
8. हनुमानाष्टक का पाठ करके ही घर से निकलें।
9. 'श्रीं क्लीं श्रीं' मंत्र का 5 बार जप करते हुए केशर से तिलक लगाएं।
10. गुरु ध्यान करते हुए 5 बार इस मंत्र का जप करें।
ॐ ब्रह्म वै दिवो हः सः दिवो वै गुरु वै सदा हः।
11. किसी भी कार्य का प्रारंभ आज करने से पहले 11 बार 'हीं बींज मंत्र का जप करें।
12. भोजन करने से पूर्व गाय और कुत्ते को रोटी अवश्य खिलाएं।
13. प्रातः सूर्य का पूजन कुंकुम, पुष्प तथा अक्षत से करें।
14. शिवलिंग पर दही एवं शहद चढ़ाने से आज का पूरा दिन सफल होगा।
15. सन्न्यास जयंति के अवसर पर गुरुदेव का सन्न्यासी पूजन सम्पन्न करें।
16. आज कोई फल खा कर ही घर से बाहर जाएं।
17. आज गुरु पूजन करके ही घर से बाहर जाएं।
18. अपने इष्ट के सामने धी का दीपक प्रज्ज्वलित करके ही घर से बाहर निकलें।
19. एक कागज पर त्रिभुज बनाकर काजल से उसमें 'ॐ शनिश्चराय नमः' लिखें। दिन भर साथ रखें। शाम जल में प्रवाहित कर दें। अनिष्ट टलेगा।
20. भगवान आदित्य का पूजन कर जल का अर्ध्य देते हुए पांच बार 'ॐ आदित्याय नमः' का जप करें।
21. गुरु जन्म दिवस पर 'निखिलेश्वरानन्द स्तवन' का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें।
22. 'बजरंग गुटिका' (न्यौछावर 50/-) को धारण कर घर से निकलें। शाम को हनुमान मंदिर में चढ़ा दें।
23. भगवान गणपति को लहू का भोग लगाते हुए 'वक्रतुण्डाय हुं' मंत्र का 15 बार जप करें।
24. 'ॐ श्रीं निं हीं स्त्रिं क्लीं लं ॐ नमः' मंत्र का 51 बार अवश्य जप करें।
25. प्रातः स्नान करते समय गायत्री मंत्र का जप करें।
26. सम्पन्नता प्राप्ति हेतु 10 मिनट तक 'हीं' मंत्र जप करें।
27. कार्य पर जाने से पूर्व 5 बार इस श्लोक का जप करें।
शूलेन्द्र पराहि नो देवि पराहि खड़गेन चाम्बिके,
घण्टा स्वनेन नः पराहि चापज्यानिः स्वनेन च।
28. शिवलिंग पर पांच सफेद पुष्प अर्पित करते हुए प्रत्येक बार 'ॐ हीं शिवाय नमः' का जप करें।
29. 'हुं हनुमते नमः' का 18 बार उच्चारण करके ही घर से निकलें।
30. 'जं गणपतये नमः' मंत्र का जप करते हुए भगवान गणपति को दुर्वा अर्पित करें।



जीवन सारिता

यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं। परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी दोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो दोनों स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं। उसी प्रकार मन को सुधार करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

1. व्यापार उन्नति हेतु

व्यापार में उन्नति प्रत्येक व्यापारी की आकांक्षा होती है, और वह उन्नति करे और तीव्रता के साथ उन्नति करे। व्यापार तो ऐसा क्षेत्र है जहां पल में तोला पल में माशा होता रहता है। ऐसी स्थिति में व्यापारी किसी भी प्रकार से पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता है क्योंकि आज यदि वह धन-धान्य से पूर्ण है, तो कल वह कर्ज में भी डूब सकता है। व्यापार के सम्बन्ध में कोई भी निश्चित तथ्य नहीं कहा जा सकता।

जो अपने व्यापार को दिनों-दिन उन्नति की ओर अग्रसर करते रहना चाहते हैं, वे अवश्य ही कोई ऐसा मार्ग अपनाते हैं, जो कि उन्हें सहयोग प्रदान कर सके। इसके लिए प्रस्तुत प्रयोग अवश्य ही आपकी इस आकांक्षा को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगा।

सोमवार के दिन व्यापार वर्ष्णी का पूजन कर उस पर 51 बिल्व पत्र चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

// ॐ श्रीं व्यापार वृद्धिं ह्रीं ॐ //

प्रयोग तीन सोमवार तक करें। आखिरी सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् 'वर्ष्णी' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

2. मनोवांछित सन्तान प्राप्ति हेतु

सन्तान होने की जितनी प्रसन्नता होती है, वैसा आनन्द वैसी प्रसन्नता व्यक्ति को अन्यत्र कहीं से नहीं प्राप्त होती है। उस पर भी यदि व्यक्ति मनोवांछित सन्तान की प्राप्ति कर ले, तो वह क्षण उसके जीवन का सर्वोच्च आनन्दमय क्षण बन जाता है, पर कुछ दंपति सन्तान सुख ही नहीं प्राप्त कर पाते, मनोवांछित सन्तान प्राप्ति तो बहुत दूर की बात है।

यदि दैविकृपा हो, तो व्यक्ति अपनी इच्छित सन्तान भी प्राप्त कर सकता है, न केवल इच्छित सन्तान ही वरन् वह सन्तान अत्यन्त मेघावी योग्य, श्रेष्ठ भी होती है। यदि आप दैविक कृपा प्राप्त करना चाहते हैं, तो यह प्रयोग आपके लिए ही है।

'सन्तान गोपाल यंत्र' को एक थाली में पीले पुष्प की पंखुडियां डाल स्थापित करें। यंत्र का पूजन पुष्प, कुंकुम व अक्षत से करें। यंत्र के दोनों ओर धी के दीपक लगा दें। निम्न मंत्र का जप 21 दिन तक 65 बार नित्य प्रातः काल करें -

मंत्र

// ॐ हरिवंशं पुत्रम् देहि देहि नमः //

21 दिन बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-



3. राज्य बाधा निवारण प्रयोग

सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्ति को समाज के नियमों को पालन करना आवश्यक होता है, किन्तु कभी-कभी ईर्ष्यावश या अपने प्रभुत्व प्रदर्शन की भावना से समाज में शासकीय रूप से नियुक्त अधिकारियों द्वारा अङ्गचर्मे उत्पन्न कर दी जाती हैं, जिनके चक्र में उलझे व्यक्ति के दिन रात का चैन समाप्त हो जाता है। उसे कभी इस अधिकारी के पास जाना पड़ता है, तो कभी उस अधिकारी के पास। ये अङ्गचर्मे ही राज्य बाधा कही जाती हैं जो कभी प्रमोशन न मिलने के कारण, तो कभी झूठे गबन का आरोप लगने के कारण व्यक्ति के सामने वीभत्स रूप धारण कर उपस्थित होती हैं।

किसी प्रकार की राज्य बाधा हो, उसके निवारण के लिए ‘हनुमान कंकण’ किसी लाल धागे में बांध कर हनुमान चित्र के सामने रख दें और उस पर पुष्प, चन्दन, अक्षत, चढ़ायें तथा ‘गुड़ का हलवा’ नैवेद्य के रूप में चढ़ायें, फिर अपनी समस्या समाप्त करने के लिए हनुमान से प्रार्थना करें और निम्न मंत्र का कर माला से 12 माला जप करें -

मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्लीं ॐ ॥

एक दिन की इस साधना को करने के पश्चात् कंकण को बायें हाथ में सवा महीने तक पहिनने के पश्चात् नदी या कुंए में विसर्जित कर दें। सफलता मिलने तक प्रतिदिन 51 बार मंत्र का जप अनिवार्यतः करना ही चाहिए।

साधना सामग्री - 120/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

4. ऋण मुक्ति प्रयोग

यह प्रयोग, जो कि ‘धनदा लक्ष्मी’ का अति लघु किन्तु तीव्र प्रयोग है। कोई भी व्यक्ति यदि ऋण से ग्रस्त है, तो उसे इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए। इसको सम्पन्न करने पर साधक को ऋण से मुक्ति तो मिलती ही है, साथ ही उसे पूर्ण वैभव-विलास और ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। यह साधना किसी भी बुधवार को शुभ मुहूर्त देखकर की जा सकती है।
मंत्र - जप करने से पूर्व अपने दाहिने हाथ में जल लेकर, आप जिस कार्य हेतु इस प्रयोग को कर रहे हैं, उसे बोलें। गुरुदेव से और धनदा देवी से इसे पूर्ण करने की प्रार्थना करें।

‘धनदा गुटिका’ को गुलाल की ढेरी बनाकर स्थापित कर दें और पांच तेल के दीपक जलाकर गुटिका के सामने रख दें, फिर निम्न मंत्र का एक सौ एक बार हाथ की उंगलियों पर

गिनती करते हुए उच्चारण करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥

मंत्र जप पूरा करके दीपकों को फूंक मारकर बुझा दें। उपरोक्त तरीके से तेरह दिन तक प्रयोग करें। 13 वें दिन प्रयोग समाप्त होने पर पांचों दीपक व धनदा गुटिका को काले कपड़े में बांधकर, जमीन में दो हाथ गहरा गढ़ा खोदकर गाड़ दें। नित्य 21 बार मंत्र - जप अनिवार्यतः करना चाहिए। इस प्रयोग को करने में साधक पीली धोती तथा पीले आसन का प्रयोग करें और पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें।

साधना सामग्री - 90/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

5. पूरे दिन भर सफलता प्राप्त करें

सही अर्थों में सफलता ही जीवन की श्रेष्ठता है। आशा-निराशा, जय-पराजय, सफलता-असफलता ये उतार चढ़ाव तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आते ही हैं, जिनका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ना अवश्यम्भावी है। जब व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पता, तो वह परेशान और दुःखी हो जाता है, क्योंकि वह अपने आशानुकूल कार्य को भलीभांति सम्पन्न कर पाने में अपने-आप को अक्षम अनुभव करने लगता है। ऐसे व्यक्ति बार-बार पराजित होने पर उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो पाते और निराशावश उनका जीवन अपूर्ण हो जाता है। उनमें जीने की ललक, आगे बढ़ने की अभिलाषा प्रायः समाप्त हो जाती है। उनके जीवन की गति थम सी जाती है।

उनकी निराश को आशा में और सफलता में बदलने का ही अचूक उपाय है यह

यदि आप चाहते हैं, कि आप जिस कार्य में भी हाथ डालें, वह पूर्ण हो ही, तो आपके लिए आवश्यक है, कि आप ब्रह्म मुहूर्त में उठते ही स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर, शुद्ध व पवित्र हो, पीले आसन पर बैठें, वातावरण सुगन्धमय बनाने के लिए धूप, दीप व अगरबत्ती जलायें और भगवान गणपति के ये बारह नाम उच्चरित करें -

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः,
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाद्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः
द्रादशैतरानि नामानि यः पठेत् शृणुर्यापि॥

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

कश्त्रों की वापि

ਮੈਥ -

मन में क्रोध बना रहेगा। कार्यों में अड़चने आती रहेगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य को आरम्भ करने के बाद उसके विकास में अवरोध उत्पन्न हो जायेगा। गृह निर्माण आदि कार्यों में धन को नियोजित न करें। संतान पक्ष से प्राप्त शुभ समाचारों से हर्ष रहेगा। सरकारी कामकाज में व्यवहारिक कठिनाइयों से जूझना पड़ेगा। शत्रु छताश होंगे। व्यवसायी वर्ग को किंचित हानि उठानी पड़ सकती है, जबकि नौकरी पेशा व्यक्तियों को अपने कार्य से अरुचि होंगी। विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त होंगी। आप 'ब्रह्मास्त्र साधना' (मई 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियाँ 1, 3, 7, 14, 15, 19, 24, 27, 28 हैं।

वृष-

अथक संघर्षमय रहने के कारण अनेकों बार मानसिक तनावों का सामना करना पड़ेगा। स्वयं की सोचने की क्षमता के कारण ही आप अपनी समस्याओं का समाधान कर पाने में सक्षम होंगे। साधनात्मक दृष्टि से यह समय आपके लिए अनुकूल रहेगा तथा स्वास्थ्य सामान्यतः कमजोर ही रहेगा। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचने का प्रयास करें। कुछ पुराने मित्र पक्ष में आकर विश्वासघात करेंगे, सावधानी बरतें। आप अनुकूलता हेतु 'नर्वाण मंत्र साधना' (सितम्बर 2005) अवश्य करें। तिथियाँ - 2, 6, 7, 8, 13, 17, 22, 23, 28, 29 हैं।

मिथुन-

जीवनसाथी से अनुकूलता प्राप्त होगी। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिलेगा। आर्थिक दृष्टि से यह माह पिछले माह की तरह ही रहेगा, यात्रा पर व्यय बढ़ सकता है। घर में किसी मेहमान के आने से प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा। पहले लिए गए किसी ऋण को लेकर चिन्ता रहेगी। मित्रों से अनुकूलता प्राप्त होगी। किसी भी कार्य को करना चाहते हों, तो अपनी मौलिक सूझ-बूझ से ही निर्णय लें। विद्यार्थी को मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त होगा। आप ‘ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना’ (जुलाई 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियाँ - 3, 6, 8, 9, 13, 17, 18, 23, 26, 29, 30 हैं।

କର୍କ -

किसी भी कागज पर बिना देखे हस्ताक्षर न करें और आखें मूंदकर विश्वास करना आपके लिए अनुचित होगा। अदालती मामलों में आपको अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो सकेगी, मामले लटके रहेंगे। कार्यालय में भी अच्छा होगा, कि आप दूसरों के साथ अपने सम्बन्ध मधुर बनाएं। जो व्यक्ति विवाह के लिए प्रयासरस हैं वे अपनी इच्छानुसार विवाह कर पाएंगे। इस माह स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। आप अनुकूलता हेतु 'कामदेव अनंग साधना' (मई 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 5, 7, 11, 16, 19, 23, 26, 28 हैं।

सिंह-

आपका व्यवसाय आपकी बजह से सम्मानित होगा, नये अनुबंध भी होंगे। लक्ष्मी की आप पर विशेष कृपा रहेगी, आप जिस किसी कार्य में हाथ डालेंगे सफलता मिलेगी, क्योंकि यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण है। इस समय का सही उपयोग कीजिए। नौकरी में पदोन्नति होने की सम्भावना है, इस समय आपके कार्य की तारीफ होगी। बहुत दिनों से सोचे कार्यों को अब पूरा करने का समय आ गया है। परिवार में प्रसन्नता रहेगी। विद्यार्थियों को अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। आप 'धनदा यक्षिणी साधना' (सितम्बर 2005) करें। तिथियां - 1, 4, 7, 9, 10, 15, 17, 21, 24, 25, 26, 28 हैं।

कन्या-

क्रोध कभी भी व्यक्ति के जीवन को ऊंचा उठाने में सहायक नहीं होता बरन उसके विशेष गुणों को नष्ट कर देता है, जिसके द्वारा व्यक्ति आगे बढ़ सकता है। अतएव आप के लिए श्रेयस्कर होगा, कि आप अपने इस अवगुण पर काबू पाएं और अगर आप ऐसा कर सकें, तो यह माह आपके लिए शुभ रहेगा। मित्र, परिवारगण एवं आपके अधिकारी सहायक होंगे। हर क्षेत्र में सफलता आपकी प्रतिक्षा कर रही है, चाहे वह मुकदमेबाजी हो, इंटरव्यू हो, या कोई और परीक्षा। आप ‘शांति तंत्र कर्म साधना’ (जनवरी 2005) करें। तिथियाँ - 3, 5, 9, 10, 12, 17, 18, 21, 22, 27, 28, 30 हैं।

सर्वार्थ, अमृत,
त्रिपुष्कर, सिद्धि योग

सिद्ध योग 5, 11, 19, 25, 27, 28 अकट्टबर/5, 19 नवम्बर ५ सवार्थी सिद्ध योग 2, 9, 13, 18, 21, 30 अकट्टबर/6, 10, 27 नवम्बर

★ अमृत सिद्ध योग 18 अक्टूबर/27 नवम्बर ★ द्विपुष्कर योग 8 नवम्बर ★

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से इस मास बिहार के चुनाव में पुनः राजनीतिक दृष्टि से प्रतिकूल स्थिति बनेगी। जिसका प्रभाव केन्द्र सरकार पर भी पड़ सकता है। आर्थिक सुधारों में और अधिक गति आयेगी। भारत का विश्व में वर्चस्व बढ़ेगा साथ ही ईरान सहित खाड़ी देशों से भारत के सम्बन्ध बिगड़ जायेंगे। जिसका दूरगामी परिणाम हो सकता है।

तुला -

आप साहसी हैं, आकर्षक हैं और जल्दी ही आप दूसरों पर हावी हो जाते हैं। अगर दूसरों को जीतना ही चाहते हैं, तो नम्र बनिए, प्रेमपूर्ण बनिए। साझेदारी से सम्बन्धित कार्यों में आपको असफलता प्राप्त होगी। किसी से भी मदद की आशा न करें, क्योंकि आप जिससे आशा करते हैं, वह आपको धोखा देता है। स्त्रियों के लिए यह माह सामान्य ही रहेगा। विद्यार्थी कड़े परिश्रम के बाद ही सफलता प्राप्त कर पाएंगे। प्रेम-प्रसंग में ज्यादा समय व्यतीत न करें, अपने कैरियर के बारे में विशेष ध्यान दें। आप 'लक्ष्मी वर-वरद माल्य' (मई 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 2, 5, 8, 9, 11, 14, 15, 19, 23, 25 हैं।

वृश्चिंचक -

इस मास आप भावनाओं में न बहें या किसी के दबाव या बहकावे में आकर कोई कार्य न करें। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति नए कारोबार के लिए जल्दबाजी न करें, किन्तु प्रयासरत रहें। अदालती मामलों में अनुकूलता तो प्राप्त होगी, परन्तु बहुत अधिक भाग-दौड़ के पश्चात् ही। यह माह आपके लिए पूर्ण स्वास्थ्य लाभ, आर्थिक लाभ एवं आनन्द का सूचक है। आप स्वयं देखेंगे, कि बड़ी से बड़ी मुसीबतें भी आप हंसते हुए पार कर जाएंगे। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। अनुकूलता हेतु आप 'षोडश योगिन साधना' (मार्च 2005) अवश्य करें। तिथियां - 2, 4, 5, 8, 9, 11, 13, 18, 19, 23, 26, 27, 29 हैं।

धनु -

यह समय आपके लिए सभी दृष्टियों से अनुकूल एवं प्रसन्नतादायक कहा जा सकता है। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति नये कारोबारी मामलों में उत्साह पूर्वक रुचि ले सकते हैं। किसी से भी व्यर्थ का वाद-विवाद न करें तथा जीवनसाथी से मधुर सहयोग पूर्ण व्यवहार बनाकर रखें। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। कारोबार मामलों को लेकर यात्रा योग बनेंगे। आपकी मित्रता विभिन्न लोगों से होगी, जो आपकी कार्य योजनाओं को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेंगे। आप 'उर्वशी साधना' (अप्रैल 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 4, 6, 7, 10, 13, 15, 19, 24, 26, 28 हैं।

मकर -

घर में सुख सुविधा के साधनों का विकास होगा, स्वास्थ्य में सामान्यतः गड़बड़ी बनी रहेगी। व्यर्थ के मानसिक तनाव से और वाद-विवाद की स्थिति से बचें। धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावनाओं को लेकर विचारों में न्यूनता रहेगी। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें, अपतु सूझ-बूझ के साथ कार्य करें। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति नये कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। अदालती मामलों को लेकर सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगारों के नये कार्य प्रारम्भ के उत्तम योग है। आप 'काल-बन्धन साधना' (जुलाई 2005) करें। तिथियां - 2, 5, 8, 9, 11, 14, 15, 19, 23, 25 हैं।

कुण्डली -

यह समय आपके लिए सभी दृष्टियों से अनुकूल एवं प्रसन्नतादायक कहा जा सकता है। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति कारोबारी मामलों में उत्साह पूर्वक रुचि ले सकते हैं। किसी से भी व्यर्थ का वाद-विवाद न करें तथा जीवनसाथी से मधुर सहयोग पूर्ण व्यवहार बनाकर रखें। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। कारोबार मामलों को लेकर यात्रा योग बनेंगे। साधनात्मक दृष्टि से यह समय आपके श्रेष्ठ है। आप 'सौन्दर्यौत्तमा चन्द्र सिद्धि साधना' (अगस्त 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 2, 4, 5, 7, 9, 13, 14, 16, 18, 25 हैं।

मीन -

यह समय आपके लिए सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेगा। आप आयात, नियर्ति तथा कास्मेटिक के बारे में विचार कर सकते हैं, मित्रों एवं परिवार के लोगों से विशेष सहयोग प्राप्त होगा। आपके सहयोग से किसी मित्र का रुका हुआ धन प्राप्त होगा। आपके लिए श्रेयस्कर यही है, कि जिद्दी स्वभाव त्याग दें। ऐसा करने पर ही आप सफल हो सकते हैं। नौकरी में तरक्की के योग है तथा आपके कार्य की सराहना होगी। आप 'महाचण्डी दिव्य अनुष्ठान' (सितम्बर 2005) करें। तिथियां - 3, 4, 7, 9, 10, 13, 18, 20, 23, 27, 28 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

04	अक्टूबर	आश्विन शुक्र - 01	मंगलवार	नवरात्रि आरम्भ
11	अक्टूबर	आश्विन शुक्र - 08	मंगलवार	दुर्गाष्टमी पूजा
12	अक्टूबर	आश्विन शुक्र - 10	बुधवार	दशहरा
17	अक्टूबर	आश्विन शुक्र - 15	सोमवार	शरद पूर्णिमा
25	अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण - 08	मंगलवार	अहोई अष्टमी
30	अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण - 13	रविवार	धनत्रयोदशी
31	अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण - 14	सोमवार	रुप चतुर्दशी
01	नवम्बर	कार्तिक कृष्ण - 30	मंगलवार	महालक्ष्मी पूजन

साधना का अद्भुत संसार

उच्चोक्ती कालजयी हैं ये

विशिष्ट साधना

उपचरण-यंत्र

शास्त्रों में यह लिखा हुआ है कि किसी भी साधना के लिए तीन बातों की विशेष आवश्यकता रहती है, वे हैं उचित मुहूर्त, उचित मंत्र तथा उचित साधना सामग्री। इसके अलावा साधना सम्पन्न करने का विधान भी उतना ही महत्वपूर्ण है साथ ही अति आवश्यक है कि योग्य गुरु का निर्देशन हो।

संसार में हजारों प्रकार की साधनाएं हैं, पूजा है, हजारों तरह के प्रयोग हैं, टोने-टोटके हैं। हजारों गुरु अलग-अलग प्रकार की विधियां और मंत्र बताते हैं। जिससे सामान्य साधक दिग्भ्रमित हो जाता है। कई बार तो उसे साधना शब्द से ही झुँझलाहट आने लगती है और वह यह सोचता है कि यह मंत्र-तंत्र-यंत्र सब बेकार है इनका कोई अर्थ नहीं है।

लेकिन यह सत्य नहीं है, क्योंकि आपने अधूरा सत्य ही देखा है और अधूरे सत्य से किसी भी प्रकार की ज्ञान प्राप्ति, सिद्धि नहीं हो सकती है। अपितु अधूरे ज्ञान से समय धन कि हानि ही होती है।

हमने साधना के इस अद्भुत संसार से कुछ ऐसी बाते खोज निकाली हैं, कुछ ऐसे तथ्य खोज निकाले हैं जो कालजयी हैं। ये यंत्र, सामग्री ऐसी है जिनके लिये ज तो कोई मुहूर्त की आवश्यकता है और ज ही लम्बा-चौड़ा विधि विधान, बस आप सामग्री स्थापित कर दीजिये, जो आवश्यक मंत्र जप है उसे सम्पन्न कर दीजिये और फिर इसका प्रभाव अपने घर, परिवार, व्यापार, कार्यक्षेत्र में देखिये। इस बात की पूर्ण आवश्यकता है कि ये सभी सामग्रियां मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिये। इनका जब मन आये पूजन करें और यदि पूजन नहीं कर सकें तो इन्हें स्थापित रहने दें।

प्रस्तुत लेरव माला में कुछ ऐसी ही विशेष यंत्र और सामग्री का वर्णन स्पष्ट किया जा रहा है। कुछ सामग्री का वर्णन-विवेचन अगले अंक में दिया जायेगा। आपसे निवेदन है कि पत्रिका का यह दीपावली विशेषांक अवश्य संभाल कर रखें।



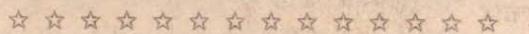
श्री यंत्र

1. श्री यंत्र तो लक्ष्मी का आधारभूत यंत्र है और अपने आप में अत्यन्त ही विलक्षण है। जिसके घर में श्री यंत्र स्थापित होता है, उसके घर में दरिद्रता आ ही नहीं सकती।
2. श्री यंत्र कौ पीले कपड़े पर स्थापित कर सामने अगरबत्ती और दीपक लगाकर नित्य लक्ष्मी मंत्र 'ॐ हौं महालक्ष्म्यै नमः' की एक माला मंत्र जप करें तो उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।
3. श्री यंत्र को दीपावली की रात्रि में पूजा स्थान में रखकर उसकी पूजा करें और फिर लाल वस्त्र में बांधकर जहां रुपये पैसे रखते हों, वहां स्थापित कर दें तो निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।
4. श्री यंत्र को नित्य पूजा स्थान में रखे रहे और दीपावली की रात्रि को उसके सामने 108 दीपक लगा कर यदि कमलगढ़े की माल से निम्न मंत्र की अगर एक माला मंत्र जप करें, तो तत्क्षण आर्थिक उन्नति की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं।

ॐ श्रीं श्रीं कमल वासिन्द्यै नमः

5. यदि श्री यंत्र अपने दुकान में स्थापन कर दें तो निरन्तर व्यापार वृद्धि होती रहती है।

साधना सामग्री - 240/-



लक्ष्मी यंत्र

1. लक्ष्मी यंत्र को यदि बुधवार के दिन घर में स्थापित करें तो निश्चय ही आर्थिक उन्नति होती है।
2. यदि लक्ष्मी यंत्र को बांये हाथ में रख कर दाहिने हाथ से उस पर 'ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः' मंत्र से एक-एक चावल 108 बार रखें और उच्चारण करें तो घर में लक्ष्मी का आगमन प्रारम्भ हो जाता है।
3. लक्ष्मी यंत्र पर यदि कोई साधक दीपावली की रात्रि को 21 गुलाब के पुष्प रखकर 'ॐ श्रीं श्रियै नमः' मंत्र का जप करें तो दरिद्रता समाप्त होती है।
4. घर में लक्ष्मी यंत्र का स्थापित होना ही सभी दृष्टियों से उन्नति होने की स्थिति बनती है।
5. यदि लक्ष्मी यंत्र अपने पास निरन्तर रखें तो जीवन में व्यक्ति जो चाहता है, वह होता ही है।

साधना सामग्री - 260/-



कनकधारा यंत्र

यह यंत्र यदि घर में स्थापित होता है तो कई तरह के आर्थिक स्रोत बनते हैं और आर्थिक उन्नति प्रारम्भ हो जाती है।

यदि कनकधारा यंत्र घर में है और दीपावली की रात्रि को उसके चारों ओर 11 दीपक लगा कर निम्न मंत्र 'ॐ हौं श्रीं कनकधारायै श्रीं हौं नमः' का 11 बार उच्चारण करें तो निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है। कनकधारा यंत्र दुकान में रखने से व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है।

कनकधारा यंत्र को दुकान में उस स्थान पर रखें जहां ग्राहक की दृष्टि पड़ती हो तो निरन्तर व्यापार वृद्धि होती रहती है।

पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिये कनकधारा यंत्र को घर में स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। पर यह ध्यान रहे कि कनकधारा यंत्र मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होना चाहिये।

साधना सामग्री - 240/-



पारद गणपति

पारद गणपति ऋष्टि-सिद्धी के अधिकारी देवता माने गये हैं अतः बुधवार के दिन इनकी स्थापना ही पूर्ण सफलता की सूचक है।

यदि पारद गणपति को बुधवार के दिन अपनी दुकान में स्थापना करें तो निरन्तर वृद्धि होती रहती है।

पारद गणपति पर नित्य 11 पुष्प चढ़ायें और इस प्रकार 11 दिन करें तथा 'ॐ गं गणपतयै नमः' की 1 माला मंत्र जप करें तो सभी विघ्नों का नाश होता है और दरिद्रता समाप्त होती है।

यदि घर में पारद गणपति स्थापित हो और हर बुधवार को उस पर गुलाब का एक पुष्प चढ़ाये तथा उस पुष्प को अपने कानों में लगाये तो उसकी सर्वत्र विजय होती है।

यदि पारद गणपति के सामने 'ॐ गणाधिपतये पूर्णत्वं सिद्धि देहि देहि नमः' मंत्र का जप एक माला करें और इस प्रकार 11 दिन करें तो घर में अटूट धन प्राप्त होने की संभावनायें बनती हैं।

साधना सामग्री - 300/-



कमलगड्डे की माला

- जो व्यक्ति प्रत्येक बुधवार को 108 कमलगड्डे के बीज लेकर घृत के साथ एक-एक करके अग्नि में समर्पित करता है और 108 आहुतियां देता है तो उसके घर से दरिद्रता निश्चय ही समाप्त हो जाती है।
- जो पूजा काल में कमलगड्डे की माला अपने गले में धारण किये रहता है उस पर लक्ष्मी निश्चय ही प्रसन्न रहती है।
- यदि नित्य 108 कमल के बीजों से आहुति दें और ऐसा 21 दिन तक करें तो आने वाली कई पीढ़ियां सम्पन्न बनी रहती हैं।
- दीपावली के दिन कमलगड्डे की माला से एक-एक मनके को अलग कर धी, शहद, और शक्कर के साथ 'ॐ भगवती महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा' मंत्र से 108 आहुतियां दें तो निश्चय ही लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके जीवन में मन चाहे कार्य सम्पन्न होते हैं।
- यदि दुकान में कमलगड्डे की माला बिछा कर उसके ऊपर भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित किया जाता है तो व्यापार में कमी आ ही नहीं सकती। उसका व्यापार निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है।
- यदि कमलगड्डे की माला भगवती लक्ष्मी के चित्र पर पहना कर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर देता है तो उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी का आगमन बना रहता है।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लघु नारियल

लघु नारियल के कई प्रयोग हैं और यह भगवती लक्ष्मी का ही पर्याय है। वास्तव में लघु नारियल के प्रयोग पूर्णता युक्त होते ही हैं -

- यदि बुधवार के दिन 11 लघु नारियल स्थापित कर उस पर केशर का तिलक लगायें और फिर 11 माला मंत्र 'ॐ श्री महालक्ष्म्यै श्री नमः' करें तो लक्ष्मी उसके घर में स्थापित होती है।
- यदि बुधवार के दिन 11 लघु नारियल लेकर उस पर 'ॐ श्री पुत्र लक्ष्म्यै नमः' मंत्र की एक माला मंत्र जप करें और वे लघु नारियल बुधवार को ही तालब में विसर्जित कर दें तो घर में पुत्र उत्पन्न होता है तथा घर में

सुख शांति बनी रहती है।

- यदि सोमवार के दिन पांच लघु नारियल लेकर रोगी के सिर पर धुमा कर किसी नदी या तालाब में फेंक दें, तो उसी समय से रोगी का रोग समाप्त होने लग जाता है।
- यदि 21 नारियल लेकर कोई कुमारी कन्या 'ॐ श्री वर प्रदाय श्री नमः' बोलकर एक-एक लघु नारियल भगवान शिव को समर्पित करे और फिर वह लघु नारियल किसी मंदिर में चढ़ा दें तो शीघ्र ही उसका विवाह हो जाता है।
- यदि 11 लघु नारियल लेकर रसोई घर में किसी स्थान में रख दें, तो घर में अन्न का भण्डार भरा रहता है और उन्नति होती रहती है।

प्रति नारियल - 51/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गोमती चक्र

गोमती चक्र दिखने में भले ही सामान्य से प्रतीत होते हैं, मगर गोमती चक्र का अपने आप में विशेष महत्व है।

- यदि चार गोमती चक्र बुधवार के दिन अपने सिर पर धुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें, तो व्यक्ति पर किये गये तांत्रिक प्रभाव की समाप्ति हो जाती है।
- यदि गोमती चक्र चांदी में जड़वा कर बच्चे के गले में पहना दिया जाय तो बच्चे को नजर नहीं लगती और वह स्वस्थ बना रहता है।
- यदि पांच गोमती चक्र दीपावली के दिन पूजा घर में स्थापित करें और उन्हें लक्ष्मी मानकर पूजा अर्चन करें तो उसके जीवन में निरन्तर उन्नति बनी रहती है।
- यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो सात गोमती चक्र अपने सिर पर धुमा कर किसी फकीर को दान में दे दें, तो रोग उसी क्षण से समाप्त होना शुरू हो जाता है।
- यदि 11 गोमती चक्र लाल पोटली में बांधकर दुकान में किसी भी स्थान पर रख दें तो जब तक वह पोटली दुकान में रहेगी तब तक निश्चय ही व्यापार में उन्नति होती रहती है या व्यापार रुक गया है तो वापिस व्यापार प्रारम्भ होता है और व्यापार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती।

प्रति गोमती चक्र - 21/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मोती शंख

यह छोटा सा शंख होता है जो कि लक्ष्मी का ही पर्याय माना गया है, इस पर कई प्रयोग हैं और श्रेष्ठ व्यक्ति ही इन प्रयोगों को सम्पन्न करता है। इस पर कई प्रयोग हैं इनमें से कुछ प्रमुख - प्रयोग

1. यदि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त मोती शंख लेकर अपने पूजा में स्थापित करता है और उसमें जल भरकर लक्ष्मी के चित्र या विग्रह पर चढ़ाता है तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है।
2. इस प्रकार के मोती शंख को घर में स्थापित कर दें और नित्य 'ॐ श्रीं हौं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः' 11 बार बोलकर एक-एक चावल का दाना शंख में भरता रहें, इस प्रकार 108 दाने इस शंख में डाले और इस प्रकार 11 दिन तक प्रयोग करें, तो जन्म-जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जाती है।
3. यदि इस प्रकार मोती शंख गल्ला रखने के स्थान पर रखा जाय तो व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होती है।
4. यदि बुधवार के दिन किसी गिलास में पानी भरकर उसमें यह शंख रख दें और एक घंटे बाद ऐसा जल रोगी पर छिड़कें, तो उसका रोग समाप्त होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।
5. यह एक अचूक प्रयोग है मोती शंख को चावलों से भरकर लाल कपड़े में बांध लें और यह पोटली घर में किसी स्थान पर रख दें, तो लक्ष्मी प्राप्ति स्वतः होने लगती है। जब तक वह पोटली घर में रहेगी निरन्तर उन्नति होती रहेगी।

प्रति मोती शंख - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मधुरूपेण रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को तो भगवान शिव का स्वरूप माना गया है पर लक्ष्मी से सम्बन्धित भी कई प्रयोग इस पर किये जाते हैं-

1. जिसके घर में 11 मधुरूपेण रुद्राक्ष होते हैं और उसकी नित्य पूजा अर्चना होती है तो उस घर में दरिद्रता नहीं रहती है।
2. सोमवार के दिन 11 मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर व्यक्ति शिवलिंग पर चढ़ायें और कहे कि मेरी दरिद्रता समाप्त हो, तो निश्चय ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है। यह प्रयोग भी अत्यन्त श्रेष्ठ है।

3. यदि घर से बीमारी जा ही नहीं रही हो, कोई न कोई बीमार बना रहता हो, तो 11 मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर उस के सारे सदस्यों के ऊपर घुमाकर यदि दक्षिण दिशा की ओर फेंक दिया जाता है तो बीमारी समाप्त हो जाती है।
4. यदि 5 मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर भवगती लक्ष्मी को समर्पित कर दूसरे दिन नदी या तालाब में विसर्जित कर दिये जाते हैं तो उसके घर में निरन्तर धन का प्रवाह बना रहता है।
5. 21 मधुरूपेण रुद्राक्षों से जो दीपावली के दिन अग्नि में धी और शक्कर के साथ आहुति देता है और प्रत्येक आहुति के साथ 'ॐ श्रीं श्रीं श्रियै नमः' मंत्र का उच्चारण करता है तो उसके घर में आश्चर्यजनक रूप से धन का आगमन प्रारम्भ हो जाता है।

प्रति मधुरूपेण रुद्राक्ष - 75/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पारद लक्ष्मी

पारद का बना तो कोई भी विग्रह समाहित किये होता है अपने आप में वरदायक प्रभाव और फिर यदि वह पारद महालक्ष्मी हो तो बात की क्या?

1. चंचल पारे की तरह बद्ध हो जाती है लक्ष्मी भी इस विग्रह के साथ-साथ। जिसका तो स्थापन ही पर्याप्त है, फिर भले ही कोई साधना की जाय या न की जाए।
2. स्वर्णविती साधना या कनक-धारा साधना अर्थात् घर में स्वर्ण वर्षा के समान 'श्री' का आगमन होता है पारद महालक्ष्मी के स्थापन से।
3. जो स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो या स्वर्ण निर्माण में सुचि रखते हो उनकी साधना का आधार ही पारद महालक्ष्मी।

4. पारद महालक्ष्मी के नित्य दर्शन से शरीर अत्यधिक सुन्दर, गौर वर्ण, आकर्षक तो बनता ही है, साथ ही उसके शरीर से ऐसी सुगन्ध प्रवाहित होने लगती है जो कठोर से कठोर व्यक्ति को भी अपनी ओर खींच ले।
5. नित्य पारद महालक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन कर शेष जल को घर भर में छिड़कने से समाप्त होती है - गृह दोष की समस्त स्थितियां और आधार बनता है शांति, सुख-सौभाग्य के स्थापन का।

पारद लक्ष्मी - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पद्मावती फल

1. समस्त तांत्रोक्त लक्ष्मी साधनाएं एक मात्र इसी फल के माध्यम से सम्पन्न की जा सकती है।
 2. यदि व्यापार बंध प्रयोग करा दिया गया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से व्यापार को विरोधियों द्वारा नीचा दिखाया जा रहा हो, तो दीपावली की रात्रि में टुकान में इसी फल को गुप्त रूप से स्थापित करें या गद्दी के नीचे रख दें।
 3. यदि ऋण की समस्या बहुत बढ़ गयी हो तब एक पद्मावती फल लेकर उसे लाल कपड़े में बांध दीपावली की रात्रि में किसी तिराहे पर रख आएं।
 4. यदि सदैव दरिद्रता जैसी स्थिति बनी रहती हो तो एक पद्मावती फल से उसे लाल कपड़े में गूंथ दांयी भुजा पर धारण करें।
 5. यदि किसी ने ऋण लिया हो और लौटा न रहा हो तो एक पद्मावती फल के साथ सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लिख सफेद धागे से बांध उसके दरवाजे पर डाल आएं।
 6. दीपावली की रात्रि में पद्मावती फल मनोवांछित स्त्री को किसी प्रकार भेट देने पर वह शीघ्र ही वशीभूत होती है।
 7. जहां किन्हीं दो व्यक्तियों अथवा किसी लड़के एवं लड़की के मध्य सामाजिक दृष्टि से मतभेद धैदा करना नैतिकता पूर्ण हो, वहां पद्मावती फल रख प्रत्येक के नीचे कागज पर सम्बन्धित नाम लिख मूंगे की माला से यदि निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें एवं दोनों को नाम सहित काले कपड़े में बांध दीपावली की रात्रि में ही शमशान अथवा किसी सुनसान स्थान पर फेंक आएं तो दोनों में मतभेद आश्रम्भ हो जाता है।

॥३५ श्रीं कलीं श्रीं महालक्ष्मये नमः ॥

यह प्रयोग अत्यधिक आवश्यक होने पर ही करना चाहिये।

पद्मावती फल - 300/-

सौन्दर्य मंदिरका

1. यह वास्तव में सौन्दर्य लक्ष्मी का ही विग्रह स्वरूप है, जिसे कोई भी नवयुवती अथवा नवयुवक अपनी उंगली में धारण कर सकता है।
 2. यदि सौन्दर्य में चमक न हो, चेहरे पर झाइयां हों अथवा मुहांसे आदि के कारण सौन्दर्य दब गया हो, तब इस मटिका को मात्र धारण करना ही पर्याप्त उपचार है।

3. जिन स्त्री या पुरुषों में रंग खुलता हुआ न हो एवं किसी भी क्रीम आदि से स्थिति न सुधरी हो तब सौन्दर्य लक्ष्मी साधना का आश्रय लेना अनुकूल सिद्ध होता है, इसी मुद्रिका को मात्र धारण करने से।

4. सौन्दर्य लक्षणी की साधना का सम्पूर्ण फल देने वाली इस मुद्रिका की एक अन्य विशेषता भी है कि यह 'शीघ्र विवाह मुद्रिका' भी है और इस मनोकामना के साथ विश्वासपूर्वक धारण करने पर इस रूप में भी तीव्रता से फलदायक सिद्ध होती है।

सौन्दर्य मुद्रिका - 150/-

पारद श्रीयंत्र

1. जिस प्रकार श्रीयंत्र अपने आप में लक्ष्मी का पूर्ण प्रतीक है, पारद श्रीयंत्र, पारद द्वारा निर्मित होने के कारण इसी विशेषता को और भी ज्यादा स्पष्ट करता है।
 2. पारद निर्मित होने के कारण इसमें से निकलती तरंगें पूरे घर के वातावरण को उल्लासमय बनाए रखती हैं।
 3. पारद श्री यंत्र के समक्ष कमलगड्ढे की माला से 'उँ
न्मः कमलवासिन्यै नमः' मंत्र की एक माला मंत्र जप करने से ज्येष्ठा लक्ष्मी का घर में चिरवास होता है, जो स्थायी व विविध सम्पत्तियों की पुञ्जीभूता है।
 4. पारद श्री यंत्र के समक्ष नित्य कमलगड्ढे की माला से एक माला 'श्री' मंत्र को जप करने पर साधक को वृद्धता अथवा अशक्तता व्याप्त हो ही नहीं सकती।

पारद श्रीयंत्र - 300/-

विजय गणपति

1. धातु निर्मित विजय गणपति घर में रखने से मनुष्य को जीवन में सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त होती है।
 2. विजय गणपति घर में स्थापित होने से शत्रुओं का भय निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।
 3. विजय गणपति का तात्पर्य है जीवन में पूर्ण उत्तरति और मनोवांछित सिद्धि एवं सफलता प्राप्त होना।
 4. विजय गणपति बुधवार को अपने पूजा स्थान में स्थापित करें और नित्य उसके सामने अगरबत्ती और दीपक लगायें तो व्यक्ति के वे सभी कार्य सम्पन्न होते हैं जो उसके जीवन की इच्छायें होती हैं।

साधना सामग्री - 300/-

- ◆ गुरु नीता
- ◆ संगीत सरिता
- ◆ गुरु गंगा
- ◆ प्रातः कालीन वेद ध्वनि
- ◆ संध्या आरती
- ◆ प्रीत पायल
- ◆ बाजे कण-कण में
- ◆ गुरुनाम रस पीजे
- ◆ जब याद तुम्हारी आई
- ◆ ध्यान धारणा और समाधि
- ◆ दैनिक साधना विधि
- ◆ गुरु गति पार लगावै
- ◆ गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊ
- ◆ गुरु बिन गतिनास्ति
- ◆ गुरु हमारी आत्मा
- ◆ गुरु पादुका पूजन
- ◆ विशेष गुरु पूजन
- ◆ निखिलेश्वरानन्द सतवन
- ◆ दुर्लभोपनिषद्
- ◆ मैं नमस्त्वं बालक को
पेतना देता हू भाग 1-2
- ◆ शक्तिपात (पूर्वजन्म दर्शन)
- ◆ अमृत महोत्सव 1997 भाग 1-5
- ◆ गुरुपूर्णिमा हैदराबाद भाग 1-5
- ◆ गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
- ◆ अक्षय पात्र साधना
- ◆ हनुमान साधना
- ◆ अमोघ साबर साधनाएं
- ◆ पुष्पदेहा अप्सरा साधना
- ◆ महाकाल प्रयोग
- ◆ महाकाली स्वरूप साधना
- ◆ कुम्भाण्डा प्रयोग

तु कहें पौधिन बाबी, मैं कहूँ आखिरी देखी



ज्ञान रूपी गंगा, क्रिया रूपी यमुना,
वाणी रूपी सरस्वती का मेल है -
सद्गुरुकृदेव के अमृत वचनों में,
जो क्षिचन कर देते हैं साधकों के
हृदय और मन को।

जिस वाणी में है -
ब्रह्मा का ज्ञान, शिव का ओज और
विष्णु का तेज समाहित है

ऐसे अमृत प्रबन्धन सुनिये बार-बार -



न्यौछावर प्रति आँडियो - सीडी 40/-

इक स्वर्च अतिरिक्त



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट,
कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010

04-05 दिसम्बर 2005

शिवत्व-लक्ष्मी साधना शिविर, मधुबनी

शिविर स्थल: उच्च विद्यालय, लौकहा, मधुबनी (बिहार)

(बोपाल-भारत सीमा पर)

आयोजक: लौकहा: गगनदेव - 062277-287280/287232 ○ सरोज कुमार सिंह - 287355 ○ मदन किशोर झा - 287301 ○ प्रमोद जयसवाल - 287212 ○ देव नारायण - 287364 ○ भगवान प्रताप यादव ○ हरि नारायण यादव ○ बैद्यनाथ झा ○ गंगाराम ○ उमाशंकर प्रसाद ○ बिन्देश्वर कामत ○ रामनाथ झा ○ दरभंगा: उपनंद यादव - 93349-11276 ○ संजय कुमार पंकज - 93490-0619 ○ देव नारायण कुमार - 93342-74326 ○ बैद्यनाथ यादव - 94314-14942 ○ रामनाथ महासेठ ○ अभय कुमार सिंह ○ डॉ. अशोक कुमार सिंह ○ दीपक ठाकुर ○ अरुण गुप्ता ○ राम नरेश महासेठ ○ कृष्णकांत शर्मा ○ नन्द किशोर महतो ○ मनोज कुमार साह ○ नवलाखी देवी ○ दीलोप कुमार यादव ○ ललन प्रसाद साह ○ अभय रंजन ○ राम बाबू साह ○ संतोष साह ○ प्रमिला देवी ○ डॉ. नवीन यादव ○ राजकुमार साह ○ शशिलाल दास ○ मधुपासवान ○ रवि शंकर प्रसाद ○ हेमेन्द्र श्रीवास्तव ○ ममता देवी ○ रेखा पाठक ○ पूनम देवी ○ नरेन्द्र कुमार दास ○ चन्द्र कांत गुप्ता ○ घनश्याम दास ○ उपेन्द्र प्रताप चौधरी ○ मदन लाल करण ○ राम सेवक साह ○ रामशीश ठाकुर ○ भुवनेश्वर प्रसाद शाह ○ सुश्री शशि शर्मा ○ योगानन्द साह ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

11 दिसम्बर 2005

महाविद्या धूमावती साधना शिविर, वलसाइ

शिविर स्थल: एम.एम.हाई स्कूल ग्राउण्ड, सी-बीच,

उमरगांव टॉउन, वलसाइ (गुजरात)

आयोजक: देवेन्द्र पंचाल - 094267-70084 ○ मोहन भाई पटेल - 93770-00243 ○ संजय शर्मा - 98241-31909 ○ अखिलेश सिंह - 98251-16105 ○ ईश्वर आर्ट - 98252-62272 ○ जया बेन भंडारी - 93279-51341 ○ सुमन भाई/प्रवीण भाई भंडारी - 0264-2340013 ○ ईश्वर भाई भंडारी - 93770-06512 ○ पी.जे.पटेल - 98247-33420 ○ चंद्रप्रभा बेन कापड़ी - 0260-2643074 ○ शंकर भाई प्रजापति - 2564244 ○ माधुरी बेन - 2565007 ○ राम नारायण मार्या - 2565055 ○ नथ्युलाल मालपानी - 2565054 ○ ईना बहन राऊत - 2562166 ○ योगेश मारिया - 98256-68219 ○ रमेश भाई चौरसिया - 98790-68943 ○ जितेन्द्र यादव - 98243-56316 ○ रामू भाई/जगत भाई/आनन्द भाई / दयाशंकर यादव - 0260-2561378 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

17-18 दिसम्बर 2005

दस महाविद्या साधना शिविर, झारसूगौडा

शिविर स्थल: मनमोहन एम.ई. स्कूल,

झारसूगौडा (उडीसा)

आयोजक: सदानन्द पांडा - 94371-58514 ○ मनोज कुमार पात्रा - 94371-66775 ○ श्रीकृष्णा अग्रवाल - 93374-07571 ○ अचुटा घुसी - 94374-20052 ○ पी.के.पटनायक - 06729-220493 ○ प्रमोद कुमार दास - 94373-12225 ○ बिजय कुमार दास - 94373-12226 ○ सत्यबेदी - 0680-2216444 ○ रामपाल सेनापति - 06655-220457 ○ गंगाधर महापात्रे - 94370-47584 ○ मोहन लाल रिखवाणी - 94370-83282 ○ पी.के.सामंतराय - 94371-84122 ○ विश्वनाथ राय - 94373-06740 ○ शुभांशु दास - 94371-46388 ○ प्रह्लाद दर्जी - 98610-94673 ○ हनुमान जी ओसवाल ○ राजेश कुमार - 94370-97577 ○ धर्मीधर दास - 94372-61997 ○ रविन्द्र पुरसेठ - 0663-2000654 ○ ललित परमार - 94371-21270 ○ इन्द्रजीत सिंहदेवो - 94371-26545 ○ अरविन्द पुरसेठ - 94370-51506 ○ मिकांत दास - 06645-274187 ○ दौलत राम सहारे ○ शरत साहू ○ अरुण मिश्रा - 99371-03692 ○ भीम सेन बहेरा - 94374-16621 ○ मुकेश अग्रवाल - 94371-54776 ○ प्रभात मिश्रा - 0663-2000098 ○ डॉ. एल.एन. पणिघर ○ अमिनीत मजोदरा - 99374-77497 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆



ਸ਼ਾਨਿ-ਸੁੰਗਾਲ ਖਤੀਬ

यह स्वर्विदीत तथ्य है कि हम सौम्य व्यक्तियों की अपेक्षा क्रूर व्यक्तियों से ज्यादा डरते हैं और उन्हें ज्यादा ध्यान देते हैं। बुरे व्यक्तियों से बचा भी जा सकता है लेकिन यदि ग्रहों की स्थिति ही अनुकूल नहीं है तो उनसे बचना संभव नहीं है। नवग्रहों में शनि और मंगल को क्रूर, क्रोधी, तामसी और तीव्र प्रभाव वाले ग्रह माने गये हैं, जो अनुकूल होने पर तत्काल व्यक्ति को ऊँचाइयों पर ले जाते हैं और प्रतिकूल होने पर जीवन में कष्टतम परिस्थिति में ले आते हैं। स्नाधकों को मंगल एवं शनि के स्तोत्र का जप मंगलवार एवं शनिवार को अवश्य ही करना चाहिए। जिससे ये दोनों ग्रह अनुकूल होकर सार्थक फल दें सकें।

ਸੰਗਲਾ ਘਾਹ ਏਵਾਂ ਜਕੌਨ੍ਹ

पुरुष प्रधान ग्रह होते के कारण मंगल तामसिक ग्रह है। तीव्र प्रभाव के कारण अजिंत तत्व के कारण मंगल का मिलान विवाह के समय विशेष रूप से किया जाता है।

जीवन में ऋण इत्यादि से संबंधित जो बाधा आती है उसका मूल कारण मंगल ग्रह की कुण्डली में अनुचित स्थिति होना है। अपने दुष्प्रभाव के कारण यह ग्रह व्यक्ति को कर्ज के बोझ से लाद देता है। इसी लिये कई ज्योतिषी कर्ज बाधा निवारण के लिये 'ऋणमोचक मंगल स्तोत्र' की सलाह देते हैं।

मंगल श्रेष्ठ होने पर मनुष्य को अत्यधिक धैर्य और पश्चात्प्रदान करता है। साथ ही स्वतंत्रों से खेलने की प्रेरणा भी देता है।

रक्तम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखो मेघगदी जदाधृक् ।

धरासुतः शक्तिधरश्चशूली सदा मम स्यादुरदः प्रशान्तः ॥१॥

ॐ मङ्गलो भूमिपुत्रश्च त्र्यग्नहर्ता धनप्रदः ।

स्थिरात्मजः महाकाव्यः सर्वकामार्थसाधकः ॥२॥

लोहितो लोहिताङ्गश्च सामग्रानां कृपाकरः ।

धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥३॥

अङ्गारकोतिबलवानपि यो ग्रहाणं स्वेदोद्धवस्त्रिनयनस्य पिनाकपाणे: ।

आरक्त चन्दनसुशीतलवारिणा योप्यभ्यर्चितोऽथ विपलां प्रददाति सिद्धिम् ॥४॥

भौमो धरात्मज इति प्रथितः पृथिव्यां दुःखापहो दुरितशोकसमस्तहर्ता।

नृणामृणं हरति तान्धनिनः प्रकुर्यादि: पूजितः सकलमंगलवासरेषु ॥५॥

एकेन हस्तेन गदां विभर्ति त्रिशूलमनयेन ऋजुकमेण।

शक्तिं सदानयेन वरं ददाति चतुर्भुजो मङ्गलमादधातु ॥६॥

यो मङ्गलमादधारति मध्यग्रहो यच्छति वांछितार्थम् ।
धर्मार्थकामादिसुखं प्रभुत्वं कलत्र पुत्रैर्न कदा वियोजः ॥७॥

कनकमवशरीरतेजसा दुर्विरीक्ष्यो हुतवह समकान्तिर्मालवे लब्धजन्मरा ।
अवनिजतनयेषु श्रूयते यः पुराणो दिशतु मम विभूतिं भूमिजः सप्तभावः ॥८॥

स्तोत्र का भावार्थ

लालवस्त्र धारी, लाल देह युक्त, मुकुट पहने हुए, चार भुजावाले, गदाधारी, भूमिपुत्र, शक्तिवान्, त्रिशूलधारण किये हुए, शान्त चित्त भगवान् मंगल मुझे सदैव वरदान देवें ॥१॥

मंगलकारी, भूमिपुत्र, क्रणदोष को हरने वाले, धनप्रदाता, स्थिरचित्त, विश्वालदेह वाले, भक्तों के सभी कार्यों को पूर्ण माला' से करें - करने वाले, भगवान् मंगल को बारम्बार नमन करता हूँ ॥२॥

रक्तवर्ण, लालरंग चाहने वाले, संगीत के कलाकारों पर कृपा करने वाले, भूमिपुत्र, वक्रदेहवाले, ऐश्वर्य प्रदाता भूमिनन्दन, भगवान् मंगल को नमन करता हूँ ॥३॥

अग्नि के समान तेज युक्त, बलवान्, पिनाकधारी भगवान् शंकर के स्वेद से उत्पन्न, लाल चन्दन तथा शीतल जल से भीगे हुए शरीर वाले, अत्यधिक सिद्धियों को देने वाले भगवान् मंगल को प्रणाम ॥४॥

भूमिपुत्र के नाम से संहार में प्रसिद्ध, भक्तों के दुःखों को हरण करने वाले, पाप जनित कष्टों को दूर करने वाले, भक्तों की क्रण बाधा को दूर करके, ऐश्वर्य देनेवाले, जो समस्त शुभकार्यों में पूजित हैं, ऐसे मंगल देव को प्रणाम करता हूँ ॥५॥

एक हाथ में गदाधारण किये हुए, दूसरे हाथ में त्रिशूल धारण किये हुए, तीसरे हाथ में शक्ति धारी, तथा चतुर्थ हाथ से भक्तों को सदैव वरदान देने वाले भगवान् मंगल को नमन करता हूँ ॥६॥

मंगल देव, भक्तों को निरंतर मंगल देने वाले, कामनाओं को देने वाले, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षप्रदाता, ऐश्वर्य देने वाले तथा पुत्र-पौत्र से कभी भी वियुक्त नहीं करते ॥७॥

स्वर्णमय देह के प्रकाश के कारण जो कठिनाई से देखे जाते हैं, अग्नि के समान कान्ति वाले, भूमि से उत्पन्न, भूमिपुत्र के नाम से प्रसिद्ध, शक्ति सम्पन्न, भगवान् मंगल मुझे ऐश्वर्य प्रदान करें ॥८॥

मंगल कवच का पाठ कर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'मंगल कवच' को अपनी बायी भुजा में बांध लें और 'मूँगा माला' से एक माला मंगल गायत्री मंत्र एवं एक माला मंगल सात्त्विक मंत्र का जप करें -

ॐ अङ्गारकाय विद्वहे शक्ति हस्ताय धीमहि तद्वरे भौमः प्रचोदयात् ॥

मंगल सात्त्विक मंत्र

ॐ अं अंगारकाय नमः ।

इसके पश्चात् ९ माला निम्न भौम तांत्रोक्त मंत्र की 'मूँगा माला' से करें -

ॐ क्रां क्राँ क्राँ सः भौमाय नमः ।

यह साधना मंगलवार से मंगलवार तक की है। साधना के दौरान नित्य मंत्र जप करें तथा मंगल स्तोत्र का भी पाठ करें।

मंगल साधना के लाभः

मंगल क्षाधना के मनुष्य में धैर्य, क्षाहक और वीकृता का क्रांचाक होता है तथा विक्रोधियों पर विजय प्राप्त होती है।

ऋण धाधा को पूर्ण क्रमाप्त ऊकने हेतु मंगल क्षाधना अर्वोपक्षि है।

मंगल क्षाधना के शक्तीक थी हड्डियां मजबूत होती हैं, थर्मी क्षिक ढर्क इत्यादि क्रमाप्त होता है।

गर्भ कक्षा के लिये मंगल क्षाधना डतम है। किंत्रियों में पित-वायु, ऊर्ध्व द्वोष निवाकण हेतु मंगल क्षाधना अनिवार्य है।

मंगल क्षाधना के श्रूमि जायदाद के साथ ऊषि व्यापाक में भी लाभ प्राप्त होता है।

मंगल क्षाधना के मनुष्य ऊ भाई-बहनों के साथ व्यवहार अनुकूल बनता है।

मंगल क्षाधना मनुष्य में चतुर्वाई लाती है और वह आपने पकाऊम और चतुर्वाई के थल पर रथयां और दूक्षकां की कक्षा ऊकने में क्रमर्थ होता है।

क्रमपति के क्रमधर्थ में ऋण होने की स्थिति में मंगल क्षाधना श्रेष्ठ मार्गी गई है।

शनि ग्रह एवं उत्तरांश

शनि ग्रह सूर्य पुत्र है और सदैव वक्र गति से चलता है। लेकिन इसका प्रभाव अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। शनि को तीव्र ग्रह माना गया है। व्योंगि यह तामस स्वभाव वाला ग्रह है। सामान्यतः यह माना जाता है कि यह चिंता कारक ग्रह है। वास्तव में शनि चिंतन कारक ग्रह है जो कि मनुष्य को हर समय सोचने के लिये विवश करता रहता है।

शनि चिंतन प्रदान ग्रह है। इस कारण हर व्यक्ति शनि से डरता है और शनि बाधा का उपाय ढूँढता है। वास्तव में बलवान् शनि मनुष्य को विपत्ति में भी लड़ने की क्षमता और ऐसे गुणों का विकास करता है जिससे वह व्यक्ति दूसरों पर हावी रह सकता है। किसी भी देवता को अनुकूल किया जा सकता है तो शनि को भी अनुकूल किया जा सकता है। वैसे विपरीत शनि होने पर मनुष्य उद्भाद, रोग, अकारण क्रोध, वात रोग, स्नायु रोग इत्यादि से ग्रसित हो सकता है। शनि थोड़ा स्वार्थी ग्रह है। इस कारण यह व्यक्ति की कुण्डली में श्रेष्ठ होने पर उसे अभिमान युक्त, किसी भी प्रकार से प्रगति करने की कला से युक्त कर देता है।

शनि जीवन में आकस्मिकता की स्थिति लाता है और जीवन में जो अकस्मात् घटनाएं होती है वे अच्छे फल की तरफ हों अथवा बुरे फल की ओर उनका मूल कारक शनि ही है।

शनि की पूजा जप साधना, और मंत्र द्वारा इसे तीव्रता से अनुकूल बनाया जा सकता है। और जब यह अनुकूल होता है तो व्यक्ति को रंक से राजा बना देता है। जितने भी राजनीति में उच्च स्थान पर पहुंचते हैं उनका शनि प्रबल होता है। परिवार में भी शनि प्रधान व्यक्ति का वर्चस्व रहता है।

ध्यान

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं, गृथस्थितं त्रासकरं धनुद्धरम् ।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं, वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम् ॥

शनि स्तोत्र

नमः	कृष्णाय	नीलाय	शितिकण्ठनिभाय	च ।
नमः	कालाञ्जिरुपाय	कृतान्ताय	च वै	नमः ॥१॥
	नमो	निर्मासंदेहाय	दीर्घश्मशुजटाय	च ।
	नमो	विशालनेत्रायशुष्काय	भयाकृतेः ॥२॥	
नमः	पुष्कलगात्राय	स्थूलरोम्णे	च वै	पुनः ।
नमो	दीर्घाय	शुष्काय	कालदंष्ट्राय	ते नमः ॥३॥
	नमस्ते	कोटराक्षाय	दुर्निरीक्षाय	वै नमः ।
	नमो	घोराय	रौद्राय	भीषणाय करालिने ॥४॥
नमस्ते	सर्वभक्षाय	बत्तीमुखाय	ते	नमः ।
सूर्यपुत्र	नमस्तेऽस्तु	भास्कराऽभयदाय	च ॥५॥	
	अथोदृष्टे	नमस्तेऽस्तु	संवर्तकाय	ते नमः ।
	नमो	मन्दगते तुभ्यं	निस्त्रिंशराय	नमोऽस्तुते ॥६॥
तपसा	दण्थ	देहाय	नित्यं	योगरताय च ।
नमो	नित्यं	क्षुधाताय	अतृप्राय	च वै नमः ॥७॥
	ज्ञानचक्षुष्मते	तुभ्यं	काश्यपात्मजसूनवे ।	
	तुष्टो ददासि वै	राज्यं	रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥८॥	

देवासुरमनुष्याश्च
 त्वया विलोकितः सर्वे नाशं यान्ति च मूलतः ॥६॥
 प्रसादं कुरु मे देव वराहोऽस्मात्युपात्रतः ।
 मया स्तुतः प्रसन्नास्त्वः सर्वं सौभाग्य दायकः ॥१०॥

स्तोत्र का भावार्थ

काले और नीले रंग के शरीर वाले, भगवान शंकर के सदृश दीमिमान, प्रलय कालीन अग्नि के समान तीक्ष्ण एवं यमराज के समान भयावह शनिदेव को मैं नमन करता हूँ ॥१॥

मांस से रहित देह, लम्बी दाढ़ी एवं जटाओं से युक्त, रुक्ष एवं डरावनी बड़ी-बड़ी आंखों वाले शनिदेव को नमस्कार करता हूँ ॥२॥

भरे-पूरे शरीर से युक्त, लम्बे-लम्बे रोम समूह वाले, विशाल और शुष्क शरीरधारी, भयप्रद दांतों वाले शनिदेव को मेरा नमन है ॥३॥

अन्दर धंसी हुई आंखों वाले, जिसकी ओर देख पाना कठिन है, घोर, तीक्ष्ण, भीषण एवं विकराल शनिदेव को मेरा प्रणाम है ॥४॥

हे बलिमुख! आप सब कुछ भक्षण कर जाते हैं। हे सूर्य पुत्र! आप अभ्य देने वाले हैं, आपको मेरा नमस्कार है ॥५॥

नीची दृष्टि किये हुए सभी को अपने वश में करनेवाले, मंदगति वाले, तलवार धारण करने वाले शनिदेव को मेरा नमन स्वीकार हो ॥६॥

तपो बल से अपने देह को साधे हुए, निरन्तर योगाभ्यास में लगे हुए, सदैव भूख से दुःखी और असंतुष्ट रहने वाले शनिदेव को मेरा प्रणाम है ॥७॥

कश्यप गोत्रीय सूर्यपुत्र शनिदेव ज्ञान दृष्टि से युक्त हैं, प्रसन्न होने पर राज्य प्रदान कर सकते हैं, अप्रसन्न होने पर उसी समय सर्वस्व नष्ट कर देते हैं ॥८॥

आपके किञ्चित् भी अप्रसन्न होने पर, देव, असुर, मनुष्य, सिंह, विषधर तथा समस्त सर्प आदि का सर्वनाश हो जाता है ॥९॥

हे शनिदेव! मैं आपकी शरण में हूँ, आप वर देने में समर्थ हूँ, मेरी स्तुति से प्रसन्न होकर मुझे सौभाग्य प्रदान करें ॥१०॥

स्तोत्र के पश्चात् 'शनि कवच' धारण कर साधक 'शनि साफल्य माला' से शनि के गायत्री मंत्र एवं शनि सात्त्विक मंत्र की एक-एक माला मंत्र करें -

शनि गायत्री मंत्र

सिद्धविद्याधरोरजाः ।
 मूलतः ॥६॥

देव वराहोऽस्मात्युपात्रतः ।
 सर्वं सौभाग्य दायकः ॥१०॥

उ३० भवभवाय विद्वहे मृत्युपुरुषाय धीमहि तद्वो
 शनिः प्रचोदयात् ॥

शनि सात्त्विक मंत्र

उ३० शं शनैश्चराय नमः ॥

इसके बाद शनि के निम्न तांत्रोक्त मंत्र की 7 माला 'शनि साफल्य माला' से जप करें -

उ३० श्रां श्रीं श्रौं सः शनवे नमः ।

मंत्र जप के पश्चात् साधक को 3 बार शनि स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। यह साधना शनिवार से शनिवार तक सम्पन्न की जाती है। कवच को प्रत्येक शनिवार अवश्य धारण कर लें। बाकी दिन इसे एक काली डिब्बी में बंद रखें।

शनि साधना के लाभ

चिन्ताक छाक ग्रह होने के यह व्यक्तित्व में कष्ठैष चिंता प्रदान छक्ता है। लेखिन शनि ज्ञाधना के अकाल मृत्यु द्वेष दृक् होता है।

इक्षणे अलावा शनि ज्ञाधना के धन हानि, घाटा, मुकुदमा, शत्रुता में भी विजय प्राप्त होती है।

शनि ज्ञाधना के मशीनी व्यापाक, लोहे छा व्यापाक अथवा छाले कंग छी अस्तु छे व्यापाक में विशेष अफलता प्राप्त होती है।

शनि व्यक्ति में ठरमाढ़ पैदा छक्ता है और इक्षणी ज्ञाधना के क्नायु कोग, अकाकण छोथ, बात-कोग शांत होते हैं।

शनि ज्ञाधना के व्यक्ति छी जान-पहचान निम्न क्तवीय लोगों के होक्क ठन पव बह प्रभुत्व अधायित छक्ता है। क्षाथ ही यह नेतृत्व छा विकास छक्ता है।

अक्षमात् होने वाली हानि के भी शनि ज्ञाधना के ही कक्षा होती है।

महालक्ष्मी-महाकाली सिद्धि फल

व्यक्ति को जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए अनेक प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है, ये प्रक्रियायें भौतिक भी हो सकती हैं, आध्यात्मिक भी, सामाजिक भी और आर्थिक भी। लेकिन यह आवश्यक नहीं, कि इन प्रक्रियाओं को व्यक्ति सहजता से पार कर लें, अतः इसके लिए व्यक्ति को किसी अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता होती है जो उसको सहजता से इन कठिनाइयों को पार करा दे।

'महालक्ष्मी महाकाली सिद्धि फल' में ऐसी ही शक्तियों का समावेश है, जो लक्ष्मी और काली के गुणों से युक्त है, इसमें जहां धन, मुख्य, सौभाग्य का समावेश है, तो वही यह शत्रुओं का संहार करने में भी समर्थ है, इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में पूर्णता की प्राप्ति को सहज बना सकता है, किर एक गृहस्थ व्यक्ति की इससे अधिक स्पृहा होती भी कहां है अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करने के लिए।

किसी भी शनिवार के दिन महालक्ष्मी महाकाली सिद्धि फल को स्थापित करें। सर्वप्रथम 'क्ली' बीज मंत्र से महाकाली का पूजन सिन्दूर से इस सिद्धिफल पर करें। इसके पश्चात् एक माला 'क्ली' बीज मंत्र का जप करें। इसके पश्चात् महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए सिद्धि फल का पूजन कुंकुम से करें और एक माला 'श्री' बीज मंत्र का जप करें। जब भी किसी विशेष कार्य हेतु जाये तो सिद्धि फल को अपनी जेब में रख लें। 5 माह पश्चात् सिद्धि फल को जल में प्रवाहित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित है। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों की साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि "मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'महालक्ष्मी-महाकाली सिद्धि फल' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें", आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'महालक्ष्मी-महाकाली सिद्धि फल' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

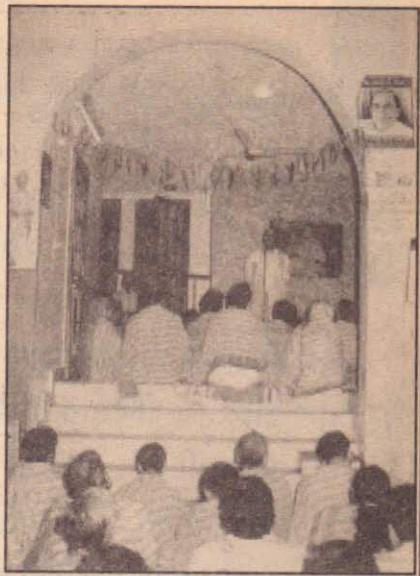
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुद्वाम दिल्ली

जिसे भूमि पर कैकड़ों प्रयोग और अकंक्ष्य ढीक्षाएं
कम्पन्ह हो चुकी हैं, उसे किंद्रु चैतन्य दिव्य भूमि



समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्त तिथियों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 18-11-05

मन की दुर्बलताओं के कारण ही व्यक्ति आज इतना अधिक परेशान हो गया है। मन में दृढ़ता न होने के कारण ही व्यक्ति किसी भी संकल्प को ले तो लेता है परन्तु बीच में ही घबरा जाता है, यदि वह मन से बली है तो परिस्थितियों को झुकाकर ही दम लेता है और विजय हासिल करके रहता है। स्वभाव में क्रोध, चिंचिड़ापन, खीझ, निराशा, भय, असहायपन, लक्ष्यहीनता, उच्चाटन - ये सब मन की निर्बलता ही हैं। हर कार्य आप पर हावी हो जाता है, घर के बातावरण एवं कार्यालय की बातों से आपको तनाव हो जाता है। जीवन में भौतिक रूप से उत्तर-चढ़ाव आते ही हैं, उथल-पुथल होती ही है, लडाई-झगड़े होते ही है, लाभ-हानि होती ही है, अमीरी-गरीबी होती है, परन्तु मनुष्य वही है, जो हर स्थिति में सम रहे, प्रसन्न रह सके, आनन्दित रह सके और इसके लिए आवश्यक है, कि वह मनश्चेतना के स्तर पर काफी ऊपर उठा हुआ व्यक्ति हो। तभी वह जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है, अन्यथा सकल सम्पदा होते हुए भी सब व्यर्थ है। मन को पूर्ण चैतन्यता दृढ़ता और अदिगता प्रदान करने की ही यह साधना है, जो आज के युग में प्रत्येक व्यवसायी के लिए अनिवार्य है ही।

शनिवार, 19-11-05

साबर धनदा प्रयोग
आयु, आरोग्य, उमंग, उत्साह, परम सौन्दर्य से सम्पन्न धर्म पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र और अन्य सभी सुख उस समय बेकार लगते हैं, जब धन का नितान्त अभाव हो। हमारे ऋषियों-महर्षियों ने ऐसे अनेक उपाय बताये हैं, जिनसे अर्थ का अभाव दूर किया जा सकता है। फिर जब परम पूज्य गुरुदेव स्वयं ही आकस्मिक धन प्राप्ति की विशिष्ट रथियों से युक्त साधना सामग्री पर यह प्रयोग साधकों को सम्पन्न करायें तो निश्चय ही यह ऐसा अवसर है जिसे किसी भी कीमत पर हासिल कर लेना ही चाहिए। आप अपने परिवार के अन्य सदस्य के लिये भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र भेट में देकर उसे सुअवसर प्रदान कर सकते हैं।

साबर धनदा प्रयोग

रविवार, 20-11-05

तीव्र बटुक भैरव प्रयोग
भैरव को भगवान शिव का ही एक रूप माना गया है। बावन भैरवों में बटुक की साधना सर्वाधिक फलदायी मानी गई है - १. मुकदमें में विजय प्राप्ति के लिए, २. पूर्ण पौरुषता प्राप्ति के लिए, ३. किसी भी प्रकार की बाधा जैसे राज्य बाधा, प्रमोशन अथवा ट्रांसफर में आ रही बाधा की निवृति हेतु, ४. किसी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग या बाधा को समाप्त करने हेतु, ५. शत्रुओं को निष्प्रभावी करने हेतु।

इसके अलावा बटुक भैरव निरन्तर एक रक्षक की भाँति साधक ही हर आसन्न संकट से रक्षा भी करते रहते हैं, जिसका कि साधक को आभास तक नहीं होता और इस प्रकार यह 'अकाल मृत्यु निवारण प्रयोग' भी है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंत्रिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र टट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी इर्झ्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बारे में इन 3 दिनों के लिये 18-19-20 नवम्बर

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपरान्त स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए। पत्र विलम्ब से यिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

मातंगी महाविद्या दीक्षा

आज के इस मशीनी युवा में डीवन यंत्रवत, दुन्ठ और नीरस बनकर रह गया है। डीवन में सरसता, आनंद, श्रीम-विलास, प्रैम, सुखीरय पति-

पत्नी प्राप्ति के लिए मातंगी दीक्षा अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। इसके अलावा साधक में वाक सिद्धि के गुण भी आ जाते हैं। उसमें आशीर्वदि व श्राप दैनी की शक्ति आ जाती है। उसकी वाणी में माधुर्य और सम्मीलन व्याप ही जाता है और जब वह लींगों के बीच बीलता है, तो सुनने वाले उसकी वाणी से मुञ्द्य ही जाते हैं। इससे शारीरिक सीढ़दर्य एवं कान्ति में वृद्धि होती है, रूप यीवन में निखार आता है। इस दीक्षा के माध्यम से हृदय में आनंद रस का संचार होता है, उमंग, प्रैम और हास्य का संचार होता है, उसके फलतः हजार कठिनाई और तनाव रहते हुए भी व्यक्ति प्रसङ्ग एवं आनंद से औत-प्रीत बना रहता है।

सम्पर्क: सिक्षाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700

‘अक्टूबर’ 2005 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘81’

नववर्ष

गुरु कृपा प्रदाता

01-01-2006

पूर्णमिदः पूर्णमिद दीक्षा

नववर्ष का प्रथम दिन हो -

गुरु का सायुज्य हो -

गुरु तपत्या स्थली हो -

शिष्य के मन में अभिलाषा हो -

गुरु के मन में देने का पूर्ण भाव हो -

उस समय गुरु द्वारा शिष्य को पूर्णत्व प्राप्ति दीक्षा प्रदान की जाए, यह शिष्य के जीवन का सौभाग्य है

गुरु की कृपा सानंर के जल से गहरी आकाश मण्डल से लेने का, उसे प्राप्त कर लेने का जिसे वह अपना लक्ष्य, अपना विशाल एवं अनन्त होती है। हर शिष्य की यह इच्छा होती है प्रिय स्वप्न, और अपना एकमात्र ध्येय मान चुका है। और वह कि वह गुरु का कृपाभिलाषी बनें। शास्त्रों में कहा गया है कि प्राप्त नहीं कर सका है, इसीलिए तो उसके अन्दर प्राप्त करने 'गुरु पादम्बुज' अर्थात् गुरु के चरणों में की इच्छा शेष है, इसीलिए वह अपने को अपूर्ण अनुभव कर ही संसार के सारे तीर्थ संमग्र निहित है। जब सद्गुरु शिष्य रहा है। परन्तु शाश्वतों कुछ और ही कहते हैं, वे तो उदघोष को दीक्षा प्रदान कर उसे अपना मानस पुत्र बना लेता है तो करते हैं – अहं ब्रह्मास्मि!

गुरु की यह जिम्मेदारी हो जाती है कि वह शिष्य को पूर्णता की ओर अग्रसर करें और केवल अग्रसर ही नहीं अपितु उसे पूर्णत्व प्रदान करें। गुरु का यह कर्तव्य है कि शिष्य को वह उस परमतत्व अमृत फल, अमृत जल का पान कराये। जिसके द्वारा गुरु ने स्वयं अपनी कृपालिनी शक्ति जाग्रत की है।

नववर्ष 2006, केवल अंग्रेजी पर्व नहीं है, यह तो वर्तमान जीवन में अपने जीवन के पिछले अध्यायों की गलती भूल कर नये अक्षर अंकित कर देने का अवसर है और इस अवसर पर यदि सद्गुरु से महान् आशीर्वाद और महान् दीक्षा प्राप्त हो जाये तो जीवन धन्य-धन्य हो उठता है। इस बार नववर्ष पर आरोग्यधार्म में सद्गुरु कृपा तले सभी शिष्यों को जो दीक्षा प्रदान की जायेगी वह दीक्षा 'पूर्णमिदः पूर्णमिदं' है अर्थात् जीवन की अपूर्णता को समाप्त कर पूर्णता की ओर एक श्रेष्ठ यात्रा है। जहां सद्गुरु, शिष्य और परमतत्व का संगम है।

शिष्य की यात्रा गुरु चरणों तक ही तो होती है और यह समस्त यात्रा पूर्ण हो जाने के उद्देश्य से ही तो होती है। मनुष्य यदि अपूर्ण न होता तो उसमें एक छटपटाहट क्यों होती, क्यों होता एक प्रवाह जीवन में कुछ कर गुजरने का, कुछ प्राप्त कर

इसी तथ्य को उजागर करते हुए पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने जनवरी-98 में शिष्यों को आशीर्वाचन के रूप में कहा था – "मुझ पर यह दायित्व है, कि अपने शुभाशीर्वाद के माध्यम से तुम्हारे जीवन को पूर्णता से सिक्क करूँ, जिससे तुम्हारा जीवन प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण हो। तुम सभी शिष्य मेरे मानस पुत्र हो और मुझ पूर्ण से उद्भव प्राप्त करने के कारण स्वयं भी पूर्ण हो। अंतर केवल इतना है, कि तुम्हें अपने पूर्णत्व का बोध नहीं रह गया है, जिसका अब जाग्रत होना आवश्यक हो गया है। तुम सभी शिष्य मेरी प्राणश्चेतना के साथ-साथ स्वयं मेरी मनश्चेतना के अविभाज्य अंग भी हो, यदि तुम इस बात का स्मरण रखो, तो तुम में यह बोध स्वतः जाग्रति की अवस्था में आ जाएगा। . . . और यही सन्देश लेकर केवल आज नहीं, मैं तो सदा-सर्वदा से तुम्हारे मध्य उपस्थित रहा हूँ।"

और यही तो ईशावास्योपनिषद का यह श्लोक भी कह रहा है-

ॐ पूर्णमिदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते ॥

अर्थात् संसार में सब कुछ पूर्ण ही है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण

की ही उत्पत्ति होती है एवं पूर्ण से पूर्णत्व प्राप्त कर लेने पर भी पूर्ण पूर्ण ही रहता है।

ये पंक्तियां कोई आज की लिखी नहीं हैं, क्रष्णियों का यह कथन कोई अलंकार युक्त भाषा का तोड़-मरोड़ नहीं था, यह तो वह सत्य है, जो जितना उस समय सत्य था, उतना ही आज भी सत्य है। परन्तु यदि यह सत्य है, तो फिर मनुष्य क्यों पूर्ण होने का प्रयास करता है, क्यों वह इसे प्राप्त करने का प्रयास करता है, इससे तो स्पष्ट यही होता है, कि वह पूर्ण नहीं है। लेकिन उसका यह सोचना ठीक उसी प्रकार भ्रमपूर्ण है, जिस प्रकार सिनेमा हाल में बैठे दर्शक का चलचित्र के पात्रों को देखकर हँसना-व रोना, भाव विभोर हो जाना। किसी भी मनुष्य को जन्म देते समय परमात्मा ने उसे अपूर्ण बनाया नहीं, वरन् अज्ञानता वश उसे अपनी पूर्णता का बोध विस्मृत हो गया, जिससे उसके जीवन में निराशा, उत्साहहीनता, और दैन्य की स्थिति व्याप्त हो गई। जब ऐसी विपन्न अवस्था में उसे कहीं पूर्णता के दर्शन होते हैं, तो सद्गुरु के रूप में होते हैं, और तब उसे आशा की एक किरण दिखती है कि यहां मुझे पूर्णता प्राप्त हो सकती है, यहां मेरे अभीष्ट की सिद्धि सम्भव है। सद्गुरु अपने शिष्य को अपने प्रवचनों के माध्यम से और साधनाओं द्वारा बार-बार यही एहसास कराने का प्रयत्न करते हैं, कि तुम सर्व सक्षम हो, सर्व शक्तिमान हो, तुम असहाय नहीं हो, दीन-हीन नहीं हो, गए-बीते नहीं हो, कमजोर नहीं हो, तुममें क्षमता है, तुममें पौरुष है, तुम सिंह हो, क्योंकि तुम्हारे खून को मैंने अपने प्राणों से ऊर्जित किया है, तुम्हारी धर्मनियों में जो खून दौड़ रहा है, उसे मैंने प्रवाहित किया है, फिर तुम भला कैसे न्यून रह सकते हो? कैसे तुम जीवन में हार सकते हो? यदि मैं पूर्ण हूं, तो मेरा शिष्य किस प्रकार से अपूर्ण हो सकता है? परन्तु फिर भी जब शिष्य को बोध नहीं हो पाता है, तब गुरु उसे 'पूर्णमदः दीक्षा' प्रदान करते हैं।

समुद्र में नदी का जल आकर मिलता है, परन्तु तब भी समुद्र वैसा का वैसा ही पूर्ण बना रहता है, जैसा पहले था। सूर्य की रश्मियां समुद्र से जल खींचती हैं, परन्तु फिर भी समुद्र की पूर्णता और विस्तार में कोई प्रभाव नहीं पड़ता, समुद्र घट नहीं जाता और न ही नदी के जल से समुद्र का विस्तार अधिक हो जाता है। समुद्र तो पहले से ही पूर्ण होता है, और बाद में भी पूर्ण बना रहता है। सद्गुरु भी समुद्र की ही भाँति होते हैं। कई शिष्य गुरु चरणों में आकर दीक्षा प्राप्त करते हैं, पूर्णता प्राप्त करते हैं, परन्तु इससे गुरु की पूर्णता कोई न्यून नहीं हो जाती। पूर्णता तो ऐसा बिन्दु है, जो फिर

किसी भी कारण से घटता नहीं है। यही वास्तविक पूर्णता है।

जब हम अपने आप को उस विराट सत्ता से अलग मान लेते हैं, सद्गुरु से अलग मान लेते हैं, तभी निराशा और चिन्ता व्याप्त होती है, तभी अपूर्णता का, रिक्तता का, खालीपन का एहसास होता है, लगता है जैसे जीवन निस्सार है, निर्मूल है, बोझ है, और न चाहते हुए भी जीने के लिए जैसे व्यक्ति विवश होता है। परन्तु इसका मूल कारण 'मैं' होता है। ईशावास्योपनिषद में जब स्पष्ट कहा जा रहा है, कि सब कुछ वही विराट शक्ति है, तो फिर और किसी के आस्तित्व की कल्पना ही कैसे सम्भव है? और यदि मैं हूं तो सद्गुरुदेव की शक्ति नहीं है, यदि मैं हूं तो फिर मैं स्वयं सर्व सक्षम हूं और वह सब प्राप्त कर सकता हूं, जो मैं चाहूं।

परन्तु सर्वशक्तिमान की यह अवस्था तब तक नहीं आ सकती जब तक साधक का 'मैं' विसर्जित न हो जाए। पूर्णत्व का यह बोध उसके अन्दर तभी हो सकेगा, जब वह सद्गुरु से अपनी एकात्मता को प्रतिपल अनुभव कर सकेगा। और इसी बोध का नाम 'पूर्णमदः पूर्णमिदं' है और इसको प्राप्त करने का साधन पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा है। जब व्यक्ति पूर्ण स्वरूप गुरुदेव से अपने ऐक्य को अनुभव करेगा तभी वह स्वयं को भी पूर्ण अनुभव करेगा। वह पूर्ण तो पहले से ही था, पर इस दीक्षा से उसे इसका बोध भी होने लगेगा, जिससे उसके अन्दर एक अद्वितीय आनन्द का उद्भव होगा।

जब तक जल की बूंद अपने आप को बूंद ही समझती है, तब तक वह मात्र एक बूंद ही रहती है, उसके अन्दर अपूर्णता का भाव स्वाभाविक है। परन्तु जिस दिन वह अपना विसर्जन समुद्र में कर देती है, फिर उसका आस्तित्व एक अलग बूंद का नहीं रह जाता, वह तो समुद्र बन जाती है, पूर्ण हो जाती है, उसे बोध हो जाता है, कि वह बूंद रूप में भी उस समुद्र का ही रूप थी और समुद्र पूर्ण है, इसलिए वह भी पूर्ण ही थी, क्योंकि पूर्ण से अपूर्ण उत्पन्न नहीं हो सकता। 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' द्वारा शिष्य को इसी तथ्य का बोध होता है, जिससे उसे अपने हृदय में विराज रहे सद्गुरुदेव से चेतना प्राप्त होती रहती है।

एक छोटा सा जो बीज होता है, वह भी पूर्ण होता है, परन्तु उसे अपनी पूर्णता का एहसास नहीं होता, उसे भान ही नहीं होता कि उसी में एक विशाल वृक्ष समाया हुआ है। उसमें एक समूचे वृक्ष की टहनियां समाई होती हैं, वृक्ष के फल समाए होते हैं, उस वृक्ष पर बसेरा करने वाले सैकड़ों पक्षी समाए होते हैं, और उस वृक्ष के बीजों से पैदा होने वाले वृक्षों की

आगे की अनगिनत पीढ़ियां समाई हुई होती हैं। इतना कुछ बीज को बोध नहीं होता अपनी पूर्णता का, और इसी तरह शिष्य को भी अपनी पूर्णता का भान नहीं होता, गुरु का कार्य मात्र उसे उसकी पूर्णता से बोध कराना ही तो होता है, इसी को तो आंख खोलने की क्रिया कहते हैं, जिसे सद्गुरु 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' देकर सम्पन्न करते हैं।

पूर्णता की खोज में शिष्य निकलता है, और भटकता रहता है एक तलाश में शान्ति के आश्रय की परन्तु उसकी यह खोज कस्तूरी के मृग की तरह ही है —

कस्तूरी कुंडलि बरसै, मृग दूँढ़े बन मांहि।
ऐसै धटि धटि राम है, दुनिया देखै नांहि॥

कैसी विडम्बना है कि हिरण की नाभि में ही कस्तूरी होती है, लेकिन फिर भी वह उसकी खोज में बन-बन भटकता है, ऐसे ही सद्गुरुदेव अपने प्रत्येक शिष्य के हृदय में ही विराज रहे होते हैं, लेकिन उनका आभास शिष्य को हो नहीं पाता और वह अपने आप को अधूरा और असहाय अनुभव करने लगता है। 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' वह बिन्दु है, जहां सद्गुरु कृपापूर्वक साधक को उसके 'मैं' बोध से मुक्त करा कर अपने पूर्ण स्वरूप में एकीकृत कर लेते हैं, वही जीवन की पूर्णता है। और जब शिष्य अपने पूर्णत्व से साक्षात्कार कर लेता है, तो फिर उसे समस्या, बाधाएं, रुकावटें, तनाव कुछ भी उद्भेदित हैं, जिनमें प्राणश्चेतना हो, जो ब्रह्मचेतना से युक्त हों, जो नहीं कर सकते। सद्गुरु का तो प्रयत्न ही इसी बात का होता है, कि शिष्य पूर्णता प्राप्त करे।

शंकराचार्य जब कह रहे हैं — “अहं ब्रह्मास्मि” तो यह कोई उनका गर्व नहीं है, यह उनका आत्म पूर्णत्व बोध है, जिसके फलस्वरूप वे ऐसा कह पा रहे हैं। सद्गुरु सदृश विराट पुरुषों के लिए संसार एक स्वप्न की भाँति होता है, वहीं एक सामान्य मनुष्य के लिए ऐसा सम्भव नहीं है, परन्तु जिस दिन वह संसार को स्वप्न की भाँति सहज रूप में अनुभव करने लगेगा, उसी समय से उसके अन्दर पूर्णत्व बोध जाग उठेगा और फिर अपने अन्दर के 'गुरुः साक्षात् परब्रह्म' को वह पहिचान सकेगा। यह सब इसी दीक्षा से फलीभूत होता है। परन्तु यह दीक्षा तो सद्गुरु उसी को प्रदान करते हैं, जो भौतिकता से ऊपर उठकर जीवन में कुछ और भी प्राप्त करना चाहता है, जिसे बौद्ध धर्म में 'बोधि प्राप्ति', जैन धर्म में 'केवल्य ज्ञान प्राप्ति' कहते हैं।

पूर्णता तो वह होती है, जहां समाप्त होता ही नहीं, अंत होता ही नहीं, जिसे अनन्त कहते हैं और अनन्त कहते हैं स्वागत है।

इश्वर को, सद्गुरु को। सद्गुरु द्वारा प्रदान की गई पूर्णता खत्म नहीं होती है, क्योंकि ऐसे पूर्णत्व के बाद फिर शिष्य में इष्ट के प्रति और ईश्वर की बनाई प्रत्येक वस्तु के भी प्रति अथाह प्रेम व्याप्त हो जाता है।

एक ऐसा प्रेम जिसको बांटने से वह कम नहीं होता। और पूर्णता तो तभी होती है, जब हृदय में प्रेम का उदय होता है। प्रेम को ही पूर्णता कहा गया है, यही तो अनन्त की भी परिभाषा होती है, और यही ईश्वर की भी परिभाषा होती है और यही पूर्णता होती है।

पूर्णता के इस चिन्तन को सिवा गुरु के और कोई नहीं देसकता, पूर्ण तो शिष्य होता ही है, परन्तु उसे बोध कराना बिना दीक्षा के सम्भव नहीं है। तैत्तिरियोपनिषद में जीवन के इसी महत्वपूर्ण सूत्र को सार रूप में बताया गया है —

सः पूर्णै दै... ब्रह्मरे वते पूर्णतः
अर्थात हम मनुष्य के रूप में जन्म लेकर गतिशील तो होते हैं, परन्तु यह हमारी गति, काल की गति है, मृत्यु की ओर बढ़ने की गति है, जीवन को समाप्त करने की गति है, यह पूर्णता की ओर बढ़ने का पथ नहीं है, पर यदि गुरु मिल जाएं, तो वे हमको पूर्णता प्रदान कर सकते हैं। उपनिषद कह रहे हैं — ‘त्वं पूर्ण वै’ . . . तुम पूर्ण हो सकते हो, किन्तु पूर्णता का बोध कौन करा सकता है? और यह बोध वो गुरु करा सकते हैं, जिनमें प्राणश्चेतना हो, जो ब्रह्मचेतना से युक्त हों, जो नहीं कर सकते। स्वयं पूर्णता की परिभाषा हों, जो मात्र पूर्ण ही नहीं हों अपितु अपने स्पर्श से अनेकों को पूर्ण बना सकते हों।

और यह 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' द्वारा ही सम्भव हो पाता है, जो कि जीवन को ब्रह्ममय बनाकर पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाने की क्रिया है . . . और यह क्रिया बहुत ही बिल्ले लोगों को प्राप्त हो पाती है, जिनका बहुत उच्चकोटि का चिन्तन होता है, क्योंकि यह तो सद्गुरु के साक्षात् परब्रह्म स्वरूप को आत्मसात करने की प्रक्रिया होती है। इसी भावभूमि को पूर्णमदः पूर्णमिदं कहा गया है।

इस नववर्ष के प्रारम्भ में ऐसी ही महान् क्रिया आपके जीवन में सम्पन्न हो सकें। इसके लिये आवश्यकता है गुरु के प्रति पूर्ण सत्य निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास की आपको दिनांक 1.1.2006 को नारायण शक्ति स्थल आरोग्य धाम दिल्ली में सम्पन्न होने जा रहे। एक दिवसीय ‘गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा महोत्सव’ में सम्मिलित होना है। इस हेतु आपको संलग्न प्रपत्र भर कर भेजना है। आपका हृदय से

गुरु कृष्ण प्रदत्त पूर्णमिदः पूर्णमिदं दीक्षा

पांच मित्रों के नाम :-

1. नाम
पूरापता

2. नाम
पूरापता

3. नाम
पूरापता

4. नाम
पूरापता

5. नाम
पूरापता

उस वशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है।

नाम
पूरापता

.....

विशेष - जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह गुरु कृष्ण प्रदत्त पूर्णमिदः पूर्णमिदं दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1200/- ((195+45)=240*5=1200) का बैंक ड्रापट या मनीऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-14,

फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 27196700

‘अक्ष्यून्’ 2005 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘85’

4-5 अक्टूबर 2005

शारदीय नवरात्रि साधना शिविर, महेश्वर

शिविर स्थल: गौ-शाला मैदान, महेश्वर, महायाप्रदेश
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

10-11 अक्टूबर 2005

शारदीय नवरात्रि साधना शिविर, झाँसी

शिविर स्थल: सिद्धेश्वर मण्डिर, नवालियर रोड, झाँसी
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

31 अक्टूबर - 1 नवम्बर 2005

दीपावली महोत्सव, जोधपुर

गुरुद्याम, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर
हम सभी जोधपुर स्थित गुरु भाई-बहन गुरु परिवार एवं
परम वन्दनीय माता जी की ओर से आप को आमंत्रित कर रहे
हैं। हमारे साथ सम्मिलित होकर इस दीपावली साधना उत्सव
को मनाने हेतु।

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

13-14-15 नवम्बर 2005

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा

संज्यास दिवस महोत्सव, रायपुर

शिविर स्थल: सप्ते शाला प्रांगण - रायपुर (छ.ग.)
आयोजक: अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, छत्तीसगढ़,
सम्पर्क सूच: रायपुर कार्यालय: 0771-2534279, 5052028/
निवास: 94252-115888 / 0771-2241314 ○ आर.सी.सिंह -
0542-2502587 ○ रायपुर: श्री. बही.के.अवस्थी - 0771-
2573010 ○ के.के.तिवारी - 2242680 ○ रजत मित्तल - 093029-
91972 ○ बी.सी.साहू - 2262892 ○ सुरेन्द्र साहू - 2254230
○ आत्माराम ध्रुव - 5535873 ○ सिलतरा-सिलयारी: सेवाराम
वर्मा - 07721-264348 ○ एन.के.नायक - 07721-237110
○ भिलाई: मनोजदुबे - 098274-96080 ○ दुर्ग: ए.के.रंगारी -
098261-89634 ○ कुम्हरी: कोदूराम साहू ○ राजनांद गांव: महेश
देवागंग 098271-04212 ○ डोंगरगढ़: टी.आर.देशमुख ○ दलली
राजहरा: टीकेश्वर सोनकर ○ अनु चौबे ○ बालौदः
एस.आर.कल्याणी - 07749-257655 ○ धमतरी: राजकमल

शर्मा - 0772-238030 ○ दशोदा साहू - 241015 ○ बस्तर: संजय
सोम - 07782-221737 ○ जगमोहन वर्मा - 07786-242772 ○ नगरी:
अमृत लाल साहू ○ तिलकराम सोनी ○ गरियाबंद:
षी.एल.घाटगे - 07706-241256 ○ रानीपरतेवा-छुरा: गंगाराम
साहू - 07701-260190 ○ जीवन लाल सेन - 200868 ○ लखेश्वर
सिन्हा ○ फिंगेश्वर: जागेश्वर साहू - 07701-236569
○ महासमुद्र: भगवती साहू - 07723-205213 ○ बसना: राजेन्द्र
दुर्ग ○ सरायपाली: नरेन्द्र साव ○ बलौदाबाजार: लेखराम
सेन ○ तिल्दा: टिकाराम वर्मा - 07721-234403 ○ बेमेतरा:
चैन सिंह ठाकुर ○ बिलासपुर: लोकेश राठौर - 093003-21783
○ आर.आर.साहू - 07752-252273 ○ रंजना शर्मा - 224444
○ कोटा: आनंद वितारी - 07753-244925 ○ रत्नपुर: लक्ष्मीकांत
सिन्हा - 07753-272205 ○ सीपत: महेश सिंह राजपूत
○ कवर्धा: विजय कुमार सोनी - 07741-232889 ○ जांजगीर:
राधेश्याम साहू - 07817-222251 ○ शिवरीनारायण: जीवन लाल
कुम्भकार - 097255-37716 ○ चांपा: संतोष सोनी - 098265-
16245 ○ सक्ति: सुदामा चन्द्रा - 094255-42579 ○ कोरबा:
आर.के.सोनी - 07759-222645 ○ भोला शंकर केवर्ट - 07815-
271680 ○ महादेव चौहान - 098271-69073 ○ बाल्को:
आई.पी.वस्त्रकार - 07759-240394 ○ रायगढ़: खुशीराम डइसेना
- 07762-221698 ○ छाल: मुंडा सिंह - 277990 ○ राजनगर:
के.के.चन्द्रा - 07658-267017 ○ टाटानगर: रामबाबू सोनकर
- 093348-04480 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

04-05 दिसम्बर 2005

शिवत्व-लक्ष्मी साधना शिविर, मधुबनी

शिविर स्थल: उच्च विद्यालय, लौकहा, मधुबनी (बिहार)
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

11 दिसम्बर 2005

महाविद्या धूमावती साधना शिविर, वलसाड

शिविर स्थल: एम.एम.हाई रस्कूल ग्राउण्ड; सी-बीच,
उमरगांव टॉउन, वलसाड (गुजरात)
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

17-18 दिसम्बर 2005

दस महाविद्या साधना शिविर, झारसूगौडा

शिविर स्थल: मनमोहन एम.ई. रस्कूल, झारसूगौडा (उडीसा)
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

पूर्ण विवरण पृष्ठ संख्या 74 पर है।

ମୁଣ୍ଡର ପାତାର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

दिखने में यह कड़ा या ज्योतिर्चक अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक हैं, कि छोटे से छोटा घालक और घड़े से घड़ा व्यक्ति इसे धाटण कर सकता है। योगियों और उच्चकोटि के अन्यायियों के बीच यह कहावत प्रसिद्ध है, कि जिसके पास ज्योतिर्चक है, उसका देवता भी क्या खिंगाड़ सकते हैं? प्राचीन समय में तो पठियाट का मुखिया स्वयं तो यह ज्योतिर्चक धाटण करता ही था, पर के अभी घालकों खियों और माता पिता के साथ-साथ अभी व्यक्तियों को भी ज्योतिर्चक पहिना देता था, जिससे कि अकाटण घीमाटी, अकाटण मृत्यु, अकाटण कष्ट या पीड़ा, याज्य भय, या असुरक्षा व्याप्त न हो।

तांत्रिक द्वेष निवारण सिद्ध

इस ज्योतिर्चक्र को विशेष मंत्रों से सिद्ध किया हुआ है, जिससे इसके धारण करने पर उस पर यदि कोई कूटना तांत्रिक प्रयोग करता है, तो वह निष्फल होता है, उस पर कोई टोका टोटका मूँह या तांत्रिक द्वेष व्याप्त नहीं होता।

उच्चकोटि के व्यापारी अपनी हुकान की चौखट पट इसे धांध ढेते हैं, जिससे हुकान पट टोना टोटका न हो, जहां उपरे पैसे रखते हैं, वहां ज्योतिर्चक रखा जा सकता है, जहां जहां पट व्यापारिक स्थल हैं, वहां वहां पट इसको धांधा या लटकाया जा सकता है, शुद्ध के मकान में गाड़ा जा सकता है, जिससे कि मकान पट कोई तांत्रिक दोष अफल न हो सके। पट के अभी सद्व्ययों को यह ज्योतिर्चक पहिनाया जा सकता है, जिससे कि कोई तकलीफ न आये, इसके अलाया उन अभी स्थानों पट इस ज्योतिर्चक को गाड़ा जा सकता है या रखा जा सकता है, जहां पट सूरक्षा की विशेष जरूरत हो।

कब और कैसे धारण करें

ज्योतिर्चक को मार्गशीष माह (16 नवम्बर 2005 से 15 दिसम्बर 2005) में कभी भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इसे प्रत्येक अंकाति पट अर्थात् प्रत्येक महीने की 14 या 15 तारीख को चढ़ते हुए सूर्य अर्थात् सूर्योदय से 12 घंटे तक धारण किया जा सकता है, इसके लिए किसी आधारा, या मंत्र यज आदि की आवश्यकता नहीं होती, और न किसी प्रकार के विशेष पूजन आदि की आवश्यकता होती है, इसका प्रभाव पटे वर्ष अट रहता है।

कैसे प्राप्त करें

इस ज्योतिर्चक्र को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि आप पत्रिका कार्यालय में पत्र लिखें तथा साथ में अपना चित्र भेजें। इसके अलावा अपने पत्रिकाएँ जिस अद्द्य को भी ज्योतिर्चक्र थाटा करवाना है उसका भी चित्र अवश्य भेजें। इस हेतु न्यौछावट याहि जो कि एक यौ पचास रुपये मात्र (150/-) है उसका मनीआर्डट अथवा ड्राफ्ट 'मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान, जोधपुर' के नाम से ही भेजें। आपका पत्र आगे पट शीघ्र से शीघ्र इस विषेष ज्योतिर्चक्र को भेजने की व्यवस्था की जाएगी। यह दीपावली पर्व का विषेष उपहार है जो गुरुदेव द्वारा अपने शिष्यों को प्रदान किया जा रहा है।

→ → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623. फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

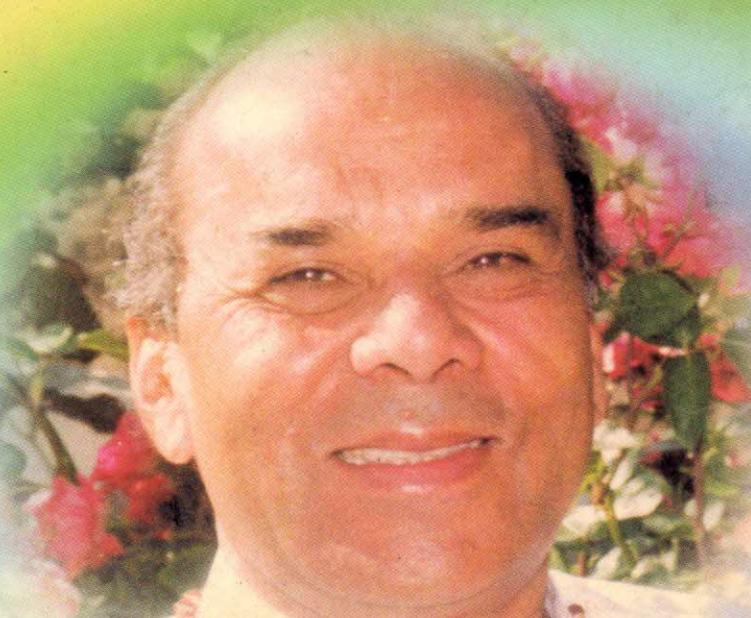
[creator of
hinduism
server]

A.H.W

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 29-30 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2003-05
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2003-05



माह : नवम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
दिनांक
25-26-27 नवम्बर

वर्ष - 25

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
दिनांक
18-19-20 नवम्बर

अंक - 10

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फैक्स 11-27196700